शासकीय नवीन महाविद्यालय, कुई-कुकदुर

जिला - कबीरधाम (छ.ग.) 491559

Website : www.gnckuikukdur.org
Email : kuikukdurcollege@gmail.com

भुईंया : आगर से सागर तक

(महाविद्यालयीन पत्रिका : अंक -1)

प्रो. जी.ए. घनश्याम
प्राचार्य, संरक्षक एवं प्रधान संपादक

:: प्रकाशन प्रकोष्ठ ::

संपादक
डॉ. अखिलेश चंद्र वर्मा

श्री सी.एस. राजपूत
श्री रामरति निषाद
डॉ. धीरज शर्मा
डॉ. रामभरोस साहू
डॉ. राजीव कुशवाहा
डॉ. कौसर नाज़मी
श्री हरीश पात्रे

श्री गोविंद यादव
सुश्री रिया ठाकुर
श्री मंगेश देवपुजारी
श्री लक्ष्मण रजक
श्री जलेश धुर्वे
श्री शिवचरण श्याम
श्री लक्ष्मण सिंह

प्रकाशक

शासकीय नवीन महाविद्यालय, कुई-कुकदुर

जिला - कबीरधाम (छ.ग.) 491559

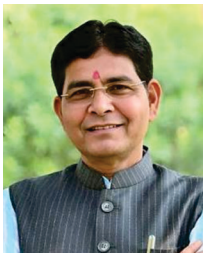
टंक राम वर्मा
TANK RAM VERMA

मंत्री
छत्तीसगढ़ शासन
राजस्व एवं आपदा प्रबंधन,
पुनर्वास, उच्च शिक्षा विभाग
Minister of
Revenue and Disaster Management,
Rehabilitation, Higher Education Department
Govt. of Chhattisgarh

अर्द्धशास. पत्र क्रं. .....622...../20..26.

दिनांक.....22/01/26.....

:: शुभकामना संदेश ::



मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि, शासकीय नवीन महाविद्यालय, कुई-कुकदुर, तहसील पण्डरिया, जिला - कबीरधाम (छ.ग.) की पत्रिका ''भुईंया-आगर से सागर तक'' का प्रकाशन किया जा रहा है । निरन्तर पत्रिकाओं का प्रकाशन विद्यार्थियों में लेखन एवं पठन-पाठन के प्रति रूचि को बढ़ाता है ।

यह पत्रिका छात्र/छात्राओं की सांस्कृतिक, साहित्य रूचियों की अभिव्यक्ति के लिए एक सशक्त माध्यम के रूप में विकसित होगा। संस्थान में पत्रिका का प्रकाशन स्वागत योग्य कदम है।

''भुईंया-आगर से सागर तक'' के प्रकाशन से संस्थान के विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता में वृद्धि होगी एवं इसके माध्यम से ज्ञान-अर्जन, साहित्य रूचि एवं सकारात्मक विचारों से छात्र/छात्राएं लाभान्वित होंगे।

पत्रिका ''भुईंया-आगर से सागर तक'' के प्रकाशन की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूं ।

मंगलकामनाएं ...

(टंक राम वर्मा)

निवास- बी-5/10, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.) पिन कोड- 492001, दूरभाष- 0771-2991022
कार्यालय- कक्ष क्र. एम-1/17, मंत्रालय, महानदी भवन, नवा रायपुर, अटल नगर (छ.ग.) 492002, दूरभाष- 0771-2510527, 0771-2221221

भावना बोहरा
विधायक
विधानसभा क्षेत्र, पंडरिया-71

'जनसेवा ही भावना'
सेवा सुविधा केन्द्र, विधायक कार्यालय
ग्राम- रणवीरपुर, तहसील- सहसपुर-लोहारा
जिला कबीरधाम, छत्तीसगढ़ - 491 995
98265 09800, 98261 12550
mla-pandariya@gov.in
bhawnabohra1@gmail.com

पत्र क्रमांक PND-71/26/2220 दिनांक 02/09/2026



-: शुभकामना संदेश :-

पंडरिया विधानसभा अंतर्गत वनांचल क्षेत्र में स्थित **शासकीय नवीन महाविद्यालय, कुई-कुकदुर द्वारा अपनी प्रथम पत्रिका 'भुईयाँ—आगर से सागर तक' के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं** । यह पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा, विचारों और नवाचार को मंच प्रदान करने के साथ-साथ उनमें आत्मविश्वास एवं अभिव्यक्ति की क्षमता को और सशक्त करेगी।

शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि युवाओं के व्यक्तित्व निर्माण, कौशल विकास और आत्मनिर्भर भविष्य की आधारशिला है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार तथा मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण, सुलभ और रोजगारपरक बनाने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। सरकार द्वारा विद्यार्थियों को आधुनिक सुविधाएं, तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास, नवाचार और बेहतर शैक्षणिक अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में अनेक महत्वपूर्ण पहल की जा रही हैं।

हमारा संकल्प है कि छत्तीसगढ़ का प्रत्येक विद्यार्थी, चाहे वह शहर में हो या वनांचल के दूरस्थ क्षेत्र में, अपनी प्रतिभा को पहचानने और उसे नई ऊंचाइयों तक ले जाने का उन्हें भी समान अवसर मिले। विशेषकर ग्रामीण एवं वनांचल क्षेत्रों के युवाओं में अपार प्रतिभा और क्षमता है। आवश्यकता केवल उन्हें उचित मार्गदर्शन, संसाधन और अवसर प्रदान करने की है

'भुईयाँ—आगर से सागर तक' जैसी पत्रिका विद्यार्थियों के भीतर छिपी प्रतिभा को सामने लाने और उन्हें लेखन, साहित्य, कला, संस्कृति तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने का महत्वपूर्ण माध्यम बनेगी। मुझे विश्वास है कि यह प्रयास विद्यार्थियों में नई ऊर्जा, उत्साह और आत्मविश्वास का संचार करेगा तथा महाविद्यालय की गौरवशाली पहचान को और मजबूत करेगा।

इस पुनीत एवं रचनात्मक पहल के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य, समस्त प्राध्यापकगण, संपादकीय टीम एवं सभी विद्यार्थीगण को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। **मेरी कामना है कि 'भुईयाँ—आगर से सागर तक' निरंतर नई ऊंचाइयों को प्राप्त करे और विद्यार्थियों के सपनों को संबल देने वाला सशक्त मंच बने।**

सभी छात्र-छात्राओं को उज्ज्वल भविष्य की अनंत शुभकामनाएं।

Bhawna Bohra
भावना बोहरा
विधायक
पंडरिया विधान सभा क्र. 71

भावना बोहरा
विधायक, पंडरिया विधानसभा

रीता यादव, आई.ए.एस.
आयुक्त

उच्च शिक्षा संचालनालय,
छत्तीसगढ़
ब्लाक–03, तृतीय तल, इंद्रावती भवन,
नवा रायपुर, अटल नगर, (छ.ग.) 492002
अर्द्ध शास. पत्र क्रमांक .....
रायपुर, दिनांक 21.08.2026
दूरभाष / फैक्स – 0771–2263412

:: शुभकामना संदेश ::



अत्यंत हर्ष का विषय है कि शासकीय नवीन महाविद्यालय, कुई-कुकदूर जिला कबीरधाम द्वारा महाविद्यालय की प्रथम पत्रिका ''भुईया-आगर से सागर तक' का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका का प्रकाशन सराहनीय प्रयास है।

आशा है यह पत्रिका वनांचल क्षेत्र के महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में नवीन ऊर्जा एवं उत्साह का संचार करेगी। महाविद्यालय परिवार को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं सहित,

(रीता यादव)

भारतीय जनता पार्टी

सोनू (दीपक) सलूजा

अध्यक्ष

जनभागीदारी समिति

शासकीय नवीन महाविद्यालय कुई कुकदुर

जिला कबीरधाम (छ ग)

विकसित भारत
सशक्त भारत

पता :
ग्राम कुई पोस्ट कुकदुर
तहसील कुकदुर
जिला कबीरधाम छ ग

पत्र क्रमांक :- .....

दिनांक :- 10-3-2026

–: शुभकामना संदेश :–



शासकीय नवीन महाविद्यालय कुई–कुकदुर द्वारा अपनी पत्रिका **'भुईंया – आगर से सागर तक'** के प्रथम अंक के प्रकाशन के लिए मेरी एवं जनभागीदारी समिति की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं। पत्रिका में छात्र–छात्राओं का आलेख का प्रकाशन उनके रचनात्मक प्रतिभा, विचारों और नवाचारों के प्रवाह को नया आयाम देगा। साथ ही साथ उनमे आत्मविश्वास एवं अभिव्यक्ति की क्षमता को विकसित करेगा।

'भुईंया – आगर से सागर तक' जैसी पत्रिका विद्यार्थियों के भीतर छिपी प्रतिभा को सामने लाने और उन्हें लेखन, साहित्य, कला, संस्कृति तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने का महत्वपूर्ण माध्यम बनेगी। मुझे विश्वास है कि यह प्रयास विद्यार्थियों में नई ऊर्जा, उत्साह और आत्मविश्वास का संचार करेगा तथा महाविद्यालय की गौरवशाली पहचान को और मजबूत करेगा।

इस पुनीत रचनात्मक पहल के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य, समस्त प्राध्यापकगण, संपादकीय टीम एवं सभी विद्यार्थीगण को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। **मेरी कामना है कि 'भुईंया – आगर से सागर तक' निरंतर नई उंचाइयों को प्राप्त करे और विद्यार्थियों के सपनों को संबल** देने वाला सशक्त मंच बने।

सभी छात्र–छात्राओं को उज्जवल भविष्य की अनंत शुभकामनाएं।

सोनू (दीपक) सलूजा

प्राचार्य की कलम से ...



भुईयां केवल धरती का पर्याय नहीं है, वह हमारी स्मृतियों, संस्कृति, सभ्यता और जीवन यात्रा की आधार भूमि है । मनुष्य का जन्म भुईयां की गोद में होता है और अंततः उसी में विलीन हो जाता है । इसी धरती की छाती पर नदियां बहती है, खेत लहलहाते हैं, जंगल सांस लेते है और बस्तियां अपनी पहचान गढ़ती है । इसलिए भुईयां को समझना वास्तव में अपने जीवन और अपनी जड़ों को समझना है ।

''आगर से सागर तक'' की यात्रा जल की यात्रा है, लेकिन यह केवल एक नदी के प्रवाह की कहानी नहीं है । यह उस निरंतर जीवन-चक्र का रूपक है जिसमें एक छोटी जलधारा आगर, तालाब, खेत, जंगल और गांवों से गुजरती हुई नदी का रूप लेती है और अंततः सागर में अपना अस्तित्व समर्पित कर देती है। इस यात्रा में जल अकेला नहीं बहता, उसके साथ मिट्टी, वनस्पति, जीव-जंतु, लोक-संस्कृति और मनुष्य की आशाएं भी प्रवाहित होती है।

आगर केवल जल का संचय नहीं, बल्कि कुई-कुकदूर के जीवन का पहला पड़ाव है। वर्षा की बूंदें जब धरती पर गिरती हैं तो मिट्टी उन्हें अपने भीतर संजोती है । यही जल छोटे-छोटे स्रोतों, नालों और धाराओं को जन्म देता है । ये धाराएं आगे बढ़कर नदी का स्वरूप ग्रहण करती हैं। नदी अपने रास्ते में जिस भू-भाग से गुजरती है, उसे केवल सींचती ही नहीं, बल्कि उसकी अर्थव्यवस्था, संस्कृति और सामाजिक जीवन को भी प्रभावित करती है । इसीलिए नदी को किसी क्षेत्र की जीवनरेखा कहा जाता है ।

छत्तीसगढ़ जैसे प्राकृतिक संपदा से समृद्ध प्रदेश में भुईयां का महत्व और भी गहरा है । यहां की धरती जंगलों, पहाड़ियों, नदियों और कृषि-परंपराओं एवं ऋषि परंपराओं से जुड़ी हुई है। आदिवासी और ग्रामीण समाज ने सदियों से प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व का जीवन जिया है । उनके लिए जल केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन और आस्था का अभिन्न हिस्सा है । नदी के किनारे बसे गांवों की स्मृतियों में नदी एक पात्र की तरह उपस्थित रहती है - कभी माँ के रूप में, कभी जीवनदायिनी के रूप में और कभी संघर्ष के साथी के रूप में।

लेकिन आज भुईयां अनेक चुनौतियों से घिरी हुई है । जलस्रोतों का क्षरण, वनों की कटाई, मिट्टी का कटाव, भूजल का गिरता स्तर, नदियों में प्रदूषण और अनियोजित विकास हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए गंभीर प्रश्न खड़े कर रहे हैं । यदि आगर सूखेंगें तो धाराएं कमजोर होंगी, धाराएं कमजोर होंगी तो नदियां अपना प्रवाह खोएंगी और अंततः सागर तक पहुंचने वाली जल-यात्रा भी प्रभावित होगी।

इसलिए ''आगर से सागर तक'' केवल यात्रा का शीर्षक नहीं, बल्कि जिम्मेदारी का संदेश भी है। हमें अपने तालाबों, कुओं, नालों और नदियों को बचाना होगा। वर्षा जल का संरक्षण, पारंपरिक जलस्रोतों का पुनर्जीवन, वनों का संरक्षण और नदी-तटों की सुरक्षा केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है । समाज, शैक्षणिक संस्थानों, स्थानीय समुदायों और प्रत्येक नागरिक की इसमें समान भूमिका है ।

आज आवश्यकता इस बात की है कि विकास और प्रकृति के बीच संघर्ष के बजाय संतुलन और सह-अस्तित्व का रास्ता चुना जाए। हमें यह समझना होगा कि नदी को बचाना केवल पानी को बचाना नहीं हैं, नदी के साथ जुड़ी पूरी पारिस्थितिकी तंत्र, संस्कृति और अर्थव्यवस्था को बचाना है ।

भुईयां से हमारा रिश्ता उपभोग का नहीं, अपनत्व का होना चाहिए। जिस धरती ने हमें अन्न दिया, जिस जल ने हमारी प्यास बुझाई और जिन नदियों ने हमारी सभ्यता को आकार दिया, उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का सबसे अच्छा तरीका उनका संरक्षण है ।

आगर की छोटी-सी जलराशि से शुरू होकर सागर की विराटता में समाहित होने वाली जलधारा हमें एक गहरा संदेश देती है - छोटा भी महत्वपूर्ण है और हर बूंद की अपनी यात्रा है । यदि हम स्रोत को बचा लें तो प्रवाह बचेगा, प्रवाह बचेगा तो नदी बचेगी और नदी बचेगी तो सागर तक पहुंचने वाली जीवन-धारा भी बनी रहेगी।

शासकीय नवीन महाविद्यालय कुई-कुकदूर की महाविद्यालयीन पत्रिका का प्रथम अंक ''भुईयां : आगर से सागर तक'' आपके हाथ में है । ''भुईयां : आगर से सागर तक'' केवल धरती और जल की कथा नहीं, बल्कि मनुष्य और प्रकृति के उस रिश्ते की पुकार है जिसे हमने आधुनिकता की दौड़ में कहीं पीछे छोड़ दिया है । आइए, हम अपनी भुईयां को फिर से पहचानें, उसके जलस्रोतों को पुनर्जीवित करें और ऐसी विकास-यात्रा का निर्माण करें जिसमें आगर भी जीवित रहें, नदी भी अविरल बहे और सागर तक जीवन का प्रवाह निरंतर बना रहे एवं रचनात्मकता की कलम से शब्दों की अनवरत् धारा प्रवाहित होती रहे।

भुईयां बचेगी, तभी भविष्य बचेगा।

डॉ. जी.ए. घनश्याम
प्रधान संपादक

अनुक्रमणिका

स.क्र.	शीर्षक	लेखक / लेखिका	पृष्ठ क्रमांक
1	शिक्षा की रोशनी	प्रांशी कोठारी	01
2	मोर भुइयाँ, मोर प्रकृति	हिमांशी कुंभकार	01
3	बचपन ही अच्छा रहिस	अनुजा धुर्वे	02
4	मेरे सपनों की उड़ान	सागर कुमार	02
5	मेरा महाविद्यालय : कुई-कुकदूर	दुर्गेश कुमार हाठले	03
6	हमर कुई कुकदूर के माटी	गीता मरावी	04
7	सड़क मं परे गौ माता के पीरा	ललिता विश्वकर्मा	04
8	हमर छत्तीसगढ़ के महिमा महान	गायत्री	05
9	मोर छत्तीसगढ़	नीलम	06
10	प्रकृति बर मया दुलार	पार्वती धुर्वे	06
11	महिला है तो जहान है	अनिता	07
12	माटी के मया, जिनगी भर के कमाई	जलेश कुमार	07
13	राउत नाचा दोहा	पूजा यादव	08
14	गौरा गौरी गीत	नमिता धुर्वे	08
15	पचराही - इतिहास की धरती	उमाशंकर बघेल	09
16	हमर जनजाति हमर संस्कृति	सोनम	09
17	आगर ले सागर तक मोर माटी, मोर महाविद्यालय	राहुल देव बघेल	10
18	गुरु घासीदास बाबा के संदेश	राधिका भास्कर	11
19	का होगे हे गांव ला रे भाई	महेन्द्र पंद्राम	11
20	हमर छत्तीसगढ़ के गोंड जनजाति	स्नेहा परस्ते	12
21	बस्तर दशहरा : लोक संस्कृति की जीवंत विरासत	तिजऊ राम	12
22	पहाड़ों के बीच में बसा छोटा सा मेरा गांव सारपानी	इन्द्रावती मुराली	14
23	महाविद्यालय और शिक्षा	लुकेश्वर कुमार पात्रे	15
24	भारतीय ज्ञान परम्परा एवं जनजातीय दर्शन	द्रोपती	16
25	हमारा पर्यावरण	पार्वती परस्ते	18
26	मोर छत्तीसगढ़ के माटी बोलथे	रविशंकर	19
27	कबीर : मानवता के कवि	शुकवारिया कृषे	20
28	समुद्र तल से 1200 फीट ऊंचे पहाड़ पर बसा सेजाडीह गांव	सरस्वती श्याम, महेन्द्र पंद्राम	22
29	मोर माँ के आँचल	समरतिया	23
30	माटी मोर महतारी	प्रमिला	24

31	भोरमदेव : कला और संस्कृति का संगम	नीलम	25
32	बैगा जनजाति : संस्कृति एवं जीवन शैली प्रथाएं	होशियार सिंह	26
33	छत्तीसगढ़ी भाषा अउ हमर पहचान	भूपेन्द्र कुमार बघेल	27
34	सुतियापाठ : प्रकृति की गोद में आस्था का दीप	सोनकली मरावी	28
35	मेरी दादी माँ मेरे जीवन की प्रेरणा	अंजली	29
36	मेरा छात्र जीवन और भैसाओदार जलप्रपात	द्रोपती श्याम	30
37	भारतीय दर्शन में स्त्री : चिंतन और योगदान	लखन	31
38	दुनिया का सबसे अनमोल उपहार : माता-पिता का प्यार	संजू कुमार मरावी	33
39	बैगा लोककला और संस्कृति के सशक्त संवाहक : धनीराम कड़मिया	गजानंद पंद्राम (गज्जू)	34
40	जामुन एक औषधीय फल	जया वर्मा	36
41	प्रकृति और आस्था का सुंदर संगम : चरण तीर्थ	सरजू यदु	38
42	Medicinal Value of Herbal Plants Found in Kabirdham District, Chhattisgarh	Dr.Akhilesh Chandra Verma	39
43	भारतीय संस्कृति	चंद्रशेखर सिंह राजपूत	42
44	आगर से सागर तक : जैव-विविधता, जीवन चक्र और ज्ञान चेतना का अनवरत प्रवाह	रामरती निषाद	43
45	आगर से सागर तक : नदी, संस्कृति, समाज और सभ्यता की यात्रा	डॉ. रामभरोस साहू	44
46	छत्तीसगढ़ जनजातीय संस्कृति एवं पर्यावरण संरक्षण : एक भौगोलिक परिप्रेक्ष्य	डॉ. कौसर नाजमी	47
47	The Significance of Neem, Tulsi, Giloy and Ashwagandha in the Tradtional Knowledge of Chhattisgarh	Riya Thakur	48
48	Medical Traditions of Baiga Tribe	Harish Patre	50
49	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा से आधुनिकता की ओर	गोविंद यादव	52
50	डिजिटल युग में वित्तीय धोखाधड़ी और साइबर सुरक्षा : चुनौतियां एवं समाधान	डॉ. धीरज कुमार शर्मा	55
51	भारत में जैविक खेती अनुसंधान : वर्तमान स्थिति और भविष्य की राह	डॉ. राजीव कुशवाहा	57
52	A Memorable visit to Govt. Naveen College Kui-Kukdur	Dr. Kalpana Paul	58
53	Promoting and Propagating the Production and Use of Millets for Healthy, Wealthy and Viksit Bharat@2047 in the light of NEP 2020	Prof. G.A. Ghanshyam	60
54	The Visit of Govt. Naveen College, Kui-Kukdur	Prof. Pragya Kulkarni	61



शिक्षा की रोशनी

प्रांशी कोठारी
बी.ए. पंचम सेमेस्टर

अँधियारे को चीरकर,
जब ज्ञान की किरण आती है।
बंद आँखो के सपनों को,
नई दिशा दिखाती है।।

शिक्षा केवल अक्षर नहीं,
जीने का आधार बनाती है।
गिरकर फिर से उठने की,
हिम्मत हमें सिखाती है।।

बेटी छोटी, न बेटा बड़ा,
शिक्षा सबका अधिकार है।
ज्ञान के पंख मिल जाएं तो,
हर सपना साकार है।।

किताबों से निकलकर शिक्षा,
समाज को बदलने आती है।
भेदभाव की दीवारों को,
धीरे-धीरे गिराती है।।

आओ मिलकर दीप जलाएँ,
हर घर तक यह प्रकाश पहुँचाएं।
शिक्षा की रोशनी से ही,
भविष्य को उज्ज्वल बनाएं।।

मोर भुइयाँ, मोर प्रकृति

मोर भुईयाँ मोर प्रकृति,
बसंत हे मोर पहचान,
हरियाली के आँचल में,
सजथे मोर छत्तीसगढ़ महान।

महुआ के मीठे गंध म,
साल के जंगल मुस्काथे,
नदिया, पहाड़ अउ खेत-खलिहान,
मोर धरती के गीत सुनाथे।

माटी के घर, माटी के चुल्हा,
माटी म अपनापन हे,
प्रकृति के संग जाना ही तो,
मोर पुरखा के जीवन हे।

आज जंगल कटत जावत हे,
नदियां के जल घटत हे,
माटी के तो पुराना रिश्ता,
धीरे-धीरे छुटत हे।

कहाँ गे हरियर भुइयाँ,
कहाँ गे जंगल के छांव,
विकास के इस दौड़ म जैसे,
खोवत जावत अपन गांव।

आवव माटी ला फिर संवारन,
जंगल-नदिया ला बचावन
अपन संस्कृति अपन प्रकृति ल,
मिल जुलकर फेर सजावन

काबर कि ये माटी केवल माटी नोहय,
हमर पुरखा के निशानी हे,
मोर भुईयाँ, मोर प्रकृति,
यही तो मोर असली कहानी हे।

हिमांशी कुंभकार
बी.ए. पंचम सेमेस्टर

बचपन ही अच्छा रहिस

अनुजा धुर्वे
एम.ए. प्रथम सेमेस्टर, समाजशास्त्र

1. बचपन ही अच्छा रहिस,
   न कोनो चिंता न कोनो भार,
   माटी म खेलत, हँसत-गावत
   हर दिन लगय तिहार।
2. न मोबाइल के झंझट रहिस,
   न दुनिया के समझदारी रहिस,
   गिल्ली डंडा लुकाछिपि
   संगवारी मन संग यारी रहिस।
3. दाई के हाथ के रोटी खावत रहेन,
   बाबू के गोदी म सो जावत रहेन,
   छोटे-छोटे सपना देखत रहेन,
   अपन दुनिया म खावत रहेन।
4. पानी आये त कागज के नाव बनाके
   नाली म तैरावत रहेन,
   गर्मी के दिन म आमा के बारी म,
   दउड़-दउड़ के जावत रहेन।
5. न कोनो जीत के लालच रहय,
   न कोनों हार के दुःख रहय,
   थोड़कन म खुश हो जात रहेन।
6. अब बड़े होगेन, समझदार कहाथन,
   फेर मन ह काबर उदास हो जाथे,
   अब घर के जिम्मेदारी आगे,
   आंखी म अब समझदारी आगे।
7. मन करथे फेर ओही बचपन के दिन आ जातिस,
   खुशी-खुशी ओ दिन हर कटिस,
   ओ बचपन ही अच्छा रहिस।

मेरे सपनों की उड़ान

सागर कुमार
बी.एस.सी. पंचम सेमेस्टर

कुछ ख्वाब मेरे अभी बाकी है,
कुछ जीत मेरी अभी बाकी है।
रूकूँगा नहीं मंजिल मिले बिना,
क्योंकि मेरी जिद अभी बाकी है।
लोग कहते हैं मुश्किल है रास्ता,
मुझे यकीन है सफर अभी बाकी है।
जो हार गए वो किस्सा बन गए,
मेरा तो पूरा इम्तिहान अभी बाकी है।
तूफान आए लाखों अगर सामने,
हौंसला मेरा पर्वत सा बाकी है।
वक्त बदलता है, हालात बदलते हैं,
लेकिन इरादों का चमन अभी बाकी है।
चुप हूँ अभी, खत्म नहीं हुआ,
मेरी कहानी का अगला पन्ना बाकी है।
बचपन गुजर चुका है, गुजर रही है उम्र।
पर जीना अभी बाकी है।
जिन हालातों ने पटका है जमीन पर,
उन्हें उठकर जवाब देना अभी बाकी है।
चल रहा हूँ मंजिल के सफर मैं,
मंजिल को पाना अभी बाकी है।
कर लेने दो लोगों को चर्चे मेरी हार के,
कामयाबी का शोर मचाना अभी बाकी है।
कर रहे है सवाल मुझे जो लूज़र समझ कर,
उन सबको जवाब देना अभी बाकी है।
निभा रहा हूँ अपना किरदार जिदंगी के मंच पर,
परदा गिरते ही तालियाँ बजना अभी बाकी है,
कुछ नहीं गया हाथ से अभी तो,
सागर बहुत कुछ पाना बाकी है.....



मेरा महाविद्यालय : कुई-कुकदूर

दुर्गेश कुमार हाठले
बी.एस.सी. पंचम सेमेस्टर

वनांचल की पावन गोद में, कुई-कुकदूर मुस्कुराता है,
शासकीय महाविद्यालय यह हमारा, विद्या का अलख जगाता है।
अंचल में ज्ञान-स्वरूप नीर-निर्झर हो तुम,
युवाओं के सपनों का पथ दिखाती पथ प्रदर्शक हो तुम।

उत्तर की ओर ध्रुव तारा जैसे चमकता तुम्हारा भाल है,
कल्लोलिनी आगर पाँव पखारे, बहती सुरम्य चाल है।
दो भव्य भवनों में बँटा, यह शिक्षा का पावन धाम है,
जहाँ कर्म और ज्ञान का होता, सुंदर संगम सुबह-शाम है।

एक ओर प्रशासनिक भवन खड़ा, जो नीति-नियम का आधार है,
कागजी कार्यों के प्रबंधन से, चलता सुदृढ़ व्यवहार है।
दूजी ओर अकादमिक भवन है, जहाँ विद्या का सत्कार है,
गूंजती कक्षों में ज्ञान-ध्वनि, होता बुद्धि का विस्तार है।

अकादमिक भवन की ओर बढ़ें, तो सजता एक 'ज्ञान पथ' पावन,
भारतीय ज्ञान-महर्षियों की गाथा से, जो हर्षित करता तन-मन।
आर्यभट्ट, चरक और सुश्रुत का, यह पथ भान कराता है,
हमारी समृद्ध सनातन थाती से, युवाओं को मिलवाता है।

वहीं सुशोभित 'सरस्वती मुक्ताकाश मंच' कला-साधना का केन्द्र है,
जिसकी छाँव में जीवंत हुई, गुरू-शिष्य परंपरा अमर-अनंत है।
तरूवर की छाँव तले बैठ जहाँ, गुरू ज्ञान का दीप जलाते हैं,
प्राचीन नालंदा तक्षशिला का, दृश्य यहाँ दोहराते हैं।



इन सुंदर परिकल्पनाओं के रचयिता, प्राचार्य घनश्याम सर हैं,
जिनकी दूरदर्शी सोच से, महक रहे विद्या के यह स्वर हैं।
जी.ए. घनश्याम सर के कुशल नेतृत्व में, यह उपवन मुस्काता है,
ज्ञान परंपरा और आधुनिकता का, अनुपम पाठ पढ़ाता है।

युवा शक्ति के संकल्पों को, मिलती यहाँ नई उड़ान है,
हे महाविद्यालय! तुम सिर्फ शिक्षा नहीं, हमारा गौरव और स्वाभिमान है।

हमर कुई कुकदूर के माटी

गीता मरावी
बी.एस.सी. पंचम सेमेस्टर

हमर कुई कुकदूर के माटी
इहां मया दुलार के साथी,
चारों कोति हरियर हे घाटी
अइसन हमर कुई कुकदूर के माटी

हरियर हरियर गांव हमर,
चारों कोति हरियाली,
इहां के माटी सुगंध देथे,
शांति अब्बड़ निराली।

सुघ्घर कल कल नदियां बहत,
चंडी दाई के पांव पखारत,
चिड़िया सुघ्घर चहचहावत,
जइसे कोनो गीत गावत।

हमर महाविद्यालय कुई कुकदूर,
जहां हरियर पेड़ के छांव हे,
हमर अइसन महाविद्यालय,
जहाँ सरस्वती दाई के पांव हे।

पचराही म छिपे राज हे,
ऐखर लम्बा इतिहास हे,
आमा बिही करहर के डार हे,
चंडी दाई के धाम हे।

इहां के गुरूजी देथे,
गुरू परम्परा के गियान हे
पढ़ई संग परकिती सिखाथे,
जेला पाके जिनगी धनवान हे।

सड़क मं परे गौ माता के पीरा

ललिता विश्वकर्मा
बी.ए. पंचम सेमेस्टर

सड़क के छोर मं गौ माता, चुपचाप परे हे आज,
आंखी ले आंसू झरत हे, देह म बस गे लाज।

कभू दूसर के घर ला पोसे, अपन दूध पियाइस,
आज घाम म तड़पत हे तभो कोनो नई आइस।

न बोल सके न कह सके मन के अपन बात,
आंखी के पानी कहत हे, ''बचालव मोर जात''।

मोटर-गाड़ी धड़धड़ जाथे कोनो नई रूक पाय,
माथा- ममता के मनखे मन, काबर एती नई आय।

जेन ला दाई कहिके पूजथन जेकर ले मिलथे दूध,
ओही दाई सड़क मं परे का हे हमर कसूर?

भूख लगे त चारा देवव, पियास लगे त पानी,
घायल मिलय त सेवा करव, एही मनखे के निशानी।

सड़क मं कचरा झन फेकव, जीव-जंतु के सोच,
गौ माता के पीरा समझव, मया क धरव पोच।

गौ माता के आंखी के आंसू, पूछत हे बार-बार
मोर पीरा ला समझव मनखे करहू मोर दुलार ।

दाई के जइसन मान देहू दाई के जइसन सेवा,
गौ माता के पीरा हरहू, एही हमर सच्चा मेवा।

हमर छत्तीसगढ़ के महिमा महान

गायत्री
एम.ए. भूगोल प्रथम सेमेस्टर

मोर छत्तीसगढ़ हे कतका महान आ बताहुँ तोला,
मोर माटी के महिमा महान चल देखाहुँ तोला।
कांकेर म हे कांकेश्वरी, डोंगरगढ़ म हे बम्लेश्वरी,
जोहर लागव बुढ़ादेव के, बुढ़ी माई के महिमा भारी।

रिंगी झिंगी सुघ्घर लागे, जेकर महिमा दुनिया गाथे,
अउ करव केतका एकर बखान मोर माटी के ला।
मोर छत्तीसगढ़ हे कतका महान आ बताहुँ तोला,
मोर माटी के महिमा महान चल देखाहुँ तोला।

दंतेवाड़ा के दन्तेश्वरी, केशकाल म हे तेलीनसरी,
जोहर लागव ठाकुरदेव के, भोरमदेव महिमा भारी।
नरवा, गुरूवा अउ घुरवा बारी छत्तीसगढ़ के चार चिन्हारी,
मोर छत्तीसगढ़ हे कतका महान आ बताहुँ तोला,
मोर माटी के महिमा महान चल देखा हुँ तोला।

बिलासपुर म मरही माता हे, रतनपुर महामाया हे,
गिरौधपुरी जैतखाम के महिमा महान आ बताहुँ तोला।
इन्द्रावती, कांगेरघाटी, गुरूघासीदास,
राष्ट्रीय उद्यान चल घुमाहुँ तोला।
गंगरेल बांध ले बने उपजे हमर धान चल देखाहुँ तोला।

कोरबा म हे कोईला खदान चल देखाहुँ तोला,
हमर छत्तीसगढ़ टीन के भण्डार चल घुमाहुँ तोला।
मोर छत्तीसगढ़ हे कतका महान आ बताहुँ तोला,



मोर माटी के महिमा महान चल देखाहुँ तोला।
मोर महतारी के सुघ्घर काया हे, गांव गांव म माँ महामाया।
अउ कख कतका एकर बखान मोर माटी के ला
चार अउ तेन्दु महुआ बिनन, कोदो कुटकी खाके जीथन
मोर छत्तीसगढ़ हे कतका महान आ बताहुँ तोला
मोर माटी के महिमा महान चल देखाहुँ तोला।

बिलासपुर म हे कानन पेंडारी, जाबो संगी हमन काली
हमर महानदी के महिमा भारी, पंचराही हे हमर चिन्हारी
चिला, बरा,फरा, खाथन आनी बानी के तिहार मनाथन
सुवा ददरिया करमा गाथन आनी बानी के नाचा नाचथन।

हमर छत्तीसगढ़ के सुग्गर पहिचान, आनी बानी के धान
मोर छत्तीसगढ़ हे कतका महान, आ बताहुँ तोला
मोर माटी के महिमा महान, चल देखाहुँ तोला।

मोर छत्तीसगढ़

मोर छत्तीसगढ़ महतारी
तोर माटी मं मया अपार।
हरियर-हरियर खेत लहराय,
तोर रूप लगे अति सुंदर।
महानदी के निर्मल धारा,
कल-कल बहत हे दिन रात।
जंगल पहाड़ अउ झरना।
बढ़ाथे धरती के सौगात।
धान के कटोरा कहाथे,
मेर छत्तीसगढ़ महान।
किसान मन मेहनत करके,
बढ़ाथे प्रदेश के मान।

सुआ नाचा पंथी नाचा,
रउत नाचा के अलग पहचान,
लोकगीत के मीठी बोली,
भर देथे मन मं मुस्कान।
हरेली -तीजा पोला तिहार,
सबझन मिलके मनाथे।
दाई, ददा, भाई, बहिनी,
खुशी-खुशी गीत गाथे।
बस्तर के कला निराली,
चित्रकोट के रूप सुहावन
सिरपुर के इतिहास बनाथे,
मोर प्रदेश के गौरव बढ़ाथे।

मोर छत्तीसगढ़ महतारी,
तोर जय जय कार होय।
तोर माटी के सुगंध लेके,
हर मन मं मया होय।
तोर हरियर धरती देखके,
मोर मन गदगद हो जाथे।
मोर छत्तीसगढ़ के मया
जिनगी भर नई भुलावे।

नीलम
बी.ए. पंचम सेमेस्टर

प्रकृति बर मया दुलार



पार्वती धुर्वे
बी.ए. पंचम सेमेस्टर

हरियर-हरियर डार म चिरई-चुरगुन गात।
माटी के खुशबू ले मन ह मोर हरसात।।
नदिया के निर्मल पानी, झरना के मधुर धार।
देख के तोर सुंदर रूप प्रकृति म बसगे प्यार।
पहाड़ के ऊंच चोटी, बादर के संग बात।
सुरूज के सोन किरण ले सजथे बिहान के रात।।
महुआ, साल, तेंदू जंगल के हरियर छाँव।
मोर छत्तीसगढ़ के माटी लगथे मोला सुघ्घर गाँव।।
धरती दाई के अँचरा म जीवन के आधार।
पेड़ लगाबो, जंगल बचाबो, प्रकृति ले करबो प्यार।।
नदिया पहाड़ बन अउ माटी हमर धरोहर आय।
प्रकृति ला जतन के राखव तभे सुख समृद्धि आय।।
प्रकृति हमर मया आय, प्रकृति हमर पहचान।
हरियर रखबो धरती दाई यही हमर अभिमान।।

महिला है तो जहान है

अनिता
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

1. महिला है तो जहान है इसी से घर में मुस्कान है।
उसकी हंसी से सुबह है, उसकी बातों से शाम है।।
सोचो अगर ना होती वो, तो ये जहान क्या होता।
ना घर में कोई रौनक होती, ना कोई मुस्कान होता।।

2. वो बेटी बन कर आंगन को फूलों सा महकाती है।
बहन बन कर राखी पर प्यार की रीत निभाती है।।
पत्नी बनकर आती है तो घर को स्वर्ग बनाती है।
एक अनजान घर को भी अपना घर बनाती है।।

3. और माँ बनती है तो वो खुद भगवान बन जाती है।
नौ महीने कोख में रखकर दर्द भी हंसकर सह जाती है।।
रातों को खुद जागकर, हमें चैन की नींद सुलाती है।
खुद गीले में सोकर वो हमें सूखे में सुलाती है।।

4. वो धरती सी सहनशील है समुंदर सी गहरी है वो।
वो दुर्गा सी शक्तिशाली, ममता में ठहरी है वो।।
उसे सम्मान दो उसे बराबर का मान दो।
उसे रोको नहीं, अब उसे खुला आसमान दो।।

5. जब बेटी पढ़ेगी, लिखेगी आगे बढ़ेगी।
तभी तो मेरे देश की असली शान बढ़ेगी।।
उसको सम्मान दो, उसे मान दो।
उसे बंधन नहीं बस उड़ने को आसमान दो।।

6. उसके बिना सुना है सब, ना रंग है ना पहचान है।
सच तो यही है साथियों महिला है तो जहान है।।

माटी के मया, जिनगी भर के कमाई

जलेश कुमार

1. मोर छत्तीसगढ़ के माटी, मोर पहिचान हवय,
इही माटी म मोर जिनगी के बिहान इवय।।
सरई सरई के डार म चिरई चहके बिहान,
गांव के गली-गली म बसय मोर अभिमान।।

2. मोर माटी के खुशबू, मन लामहका देथे,
दुख के बेरा म घलो हिम्मत सिखा देथे।।
धान के बाली बाली लहराय, खेत मुस्काय
किसान के पसीना से धरती हर सरमाय।।

3. जंगल के हरियर छांव, नदिया के धार,
मोर छत्तीसगढ़ म बसय अपनापन अपार।।
दाई के मया, ददा के संस्कार।।
मोर गांव के माटी म बसय ये संसार।।

4. जेन माटी म मोर पुरखा मन, अपन लहु बहाइस
जेन माटी बर पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपन जिनगी गंवाइस।।
गरीब केघर चूल्हा जरय, कोनो भूखा नइ सोइस,
मजदूर के पसीना के, सही मोल मिलना होय।।

5. मोर कुकदुर के माटी ला, माथे म लगा हूँ
जिनगी भर अपन गांव के मान बढ़ा हूँ।
जहाँ जाबे मोर मन, ये माटी संग जाहीं
मोर छत्तीसगढ़ मोर माटी-मोर जान कहाही।।

राउत नाचा दोहा

पूजा यादव
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

पाव जान पनही मिले, घोड़ा जान असवार रे।
सजन जान समधी मिले, करम जान ससुरार रे।।

गाय चरावे गहिरा भैया, भैंस चराय ठेठवार रे।
चारों कोती अबड़ बोहावे, दही दूध के धार रे।।

अड़गा टूटे बड़गा टूटे, अउ बीच म भूरी गाय हो।
उहा ले निकले नन्द कन्हैया, भागे भूत मसान हो।।

तेल फूल म लईका बाढ़े, पानी म बाढ़े धान रे।
बात बात म झगरा बाढ़े, अउ खिनवा म बाढ़े कान रे।।

चन्द्ररपुर के चन्द्रहासिनी ल सुमरो, डोंगरगढ़ बमलाई ला।
रावणभांठा के बंजारी ल सुमरो, रायपुर के महाकाली ला।।

गौरा गौरी गीत

नमिता धुर्वे
बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर



जोहर जोहर मोर गौरा गौरी
सेवर लागों मैं तोर।
जोहर जोहर मोर गौरी गौरा
सेवर लागों गांव में तोर।।

गौरा गौरी के मड़वा छवाओं
दुलरू हंस के परेवना
हंसन चुगते मोर मौंगा ओ
चुगे ओ चना के दार।।

शंकर भोला के मड़वा गड़त हे
माढ़े हांवे बिहाव
भुतवा परेतवा सब मड़वा ओ छांवे
नेवता तोरन बांधे।।

जोहर जोहर मोर ठाकुर देवता हो
सेवर लागों मैं तोर
गौरा जागे मोर गौरी
जागे जागे ओ सहर के लोग।।

बाजा जागे ओ बजनिया जागे।
जागे ओ गवाईया लोग।।

पचराही - इतिहास की धरती

उमाशंकर बघेल
बी.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर

कबीरधाम की पावन धरती में,
पचराही का नाम निराला,
हाफ नदी के तट पर बसा,
इतिहास का सुंदर उजियाला।

माटी इसकी बोलती है,
बीते कल की बात सुनाती,
पुरखों को छोड़ी विरासत,
आज भी अपनी याद दिलाती।

कभी यहाँ व्यापार की हलचल,
दूर तलक पहचान रही होगी,
राहगीरों की आवाजाही से,
धरती इसकी जवान रही होगी।

माटी के भीतर छिपे हुए हैं,
कितने अनमोल निशान,
पुरानी मूर्तियाँ, सिक्के बताते,
कितना गौरवमय था इतिहास।

उत्तर गुप्तों से कलचुरियों तक,
फणि नागों की गाथा है,
हर अवशेष के कण-कण में,
बीते युग की भाषा है।

सोने-तांबे के सिक्के मिलते,
टेराकोटा अपनी कहानी कहता,
पुराने घरों के अवशेषों में,
एक पुराना संसार रहता।

पचराही केवल गांव नहीं है,
यह पुरखों की अमानत है,
कबीरधाम की धरती पर यह,
हम सबकी गौरव-धरोहर है।

आज भी जब हाफ नदी बहती,
धीरे-धीरे गीत सुनाती है,
पचराही की प्राचीन कहानी,
लहरों संग दोहराती है।

हे पचराही तेरी माटी को,
हम शत-शत नमन करें,
तेरी विरासत को सहेजकर,
आने वाली पीढ़ी को अर्पण करें।

इतिहास तेरा गर्व हमारा,
तेरी माटी का मान रहे,
पचराही की गौरव-गाथा,
सदा अमर और महान रहे।

हमर जनजाति हमर संस्कृति

सोनम
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

माटी के खुशबू म बसे हे हमर जान,
जंगल पहाड़ हमारे धरती के शान।
नदियां के कल-कल पंछी के बोली,
यही म बसथे हमर ज़िंदगी भोली।

हमर जनजाति हमर पहचान
अपन संस्कृति अपन अभियान।
पुरखा मन के देय उपहार,
रीति-रिवाज हमर अमूल्य संसार।

मांदर बाजे, पांव थिरक जाथे
नाचा के रंग म गांव मुस्काथे।
गीत म गूंजे पुरखा के कहानी,
परम्परा हम सबसे सुहानी।

हरेली आवय खुशहाली लावय
तीजा पोरा मन म उमंग जगावय
सगा सोयरा जब संग बइठ जाथे
दुख के बादर दूर उड़ जाथे।

जंगल हमर माई जइसन
माटी हमर दाई जइसन
पेड़ पौधा हमर जीवर के आधार
प्रकृति संग हमर महिमा प्यार।

आगर ले सागर तक मोर माटी, मोर महाविद्यालय

राहुल देव बघेल
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

छत्तीसगढ़ के मया, सादगी अऊ संस्कार मन एहीच हमर असली चिन्हारी आय।
हनुमत खोल, देवान पटपर, पचराही अऊ भेड़ागढ़िया के पहाड़ी,हरियर जंगल,
कलकल बगरत आगर नदियां अऊ माटी के सुगंध हमर जिनगी ला नवा उद्दा देखाथे।
ए माटी म जनम लेके मोला गजब के गुमान होथे।

पचराही हमर इलाका के प्राकृतिक धरोहर आय। हरियर जंगल, पहाड़ी अऊ सांत वातावरण एला खास बनाथे। इहां के सुंदरता अऊ प्राकृतिक संपदा मनखे ला प्रकृति संग जुड़के रहे के सीख देथे। ए ठऊर हमर माटी के समृद्धि अऊ सुंदरता के जीयत-जागत चिन्हारी आय, जेन ऊपर हम सबो ला गमान होय ला चाही।

मोर महाविद्यालय, शासकीय नवीन महाविद्यालय कुई-कुकदूर, सिरिफ पढ़ई-लिखई के ठऊर नइ, बल्कि संस्कार अऊ चरित्तर गढ़े के गुरूकुल आय। इहां गुरूजन मन ज्ञान देय के संग-संग अनुशासन, सेवा, मेहनत अऊ समाज बर अपन जिम्मेदारी निभाय के सीख घलो देथें।
एही सीख विद्यार्थी मन के आगू के जिनगी ला मजबूत बनाथे।

आज के युवा मन बर पढ़ई-लिखई सबले बड़े धन आय। पढ़ई ले मनखे सिरिफ अपन जिनगी नइ, बल्कि समाज अऊ देस के आगू ला चनो संवार सकथे। अपन भाखा, संस्कृति अऊ परंपराला बचाय रखे बर हम सबो के जिम्मेदारी आय। जेन समाज अपन जड़ ला संजो के रखथे, ओ समाज हमेशा आगू बढ़थे।

हमर गांव अऊ हमर महाविद्यालय म हुनर के कमी नई हे। जरूरत हवय त सिरिफ आत्मविश्वास, लगन अऊ मेहनत के। अगर हर विद्यार्थी अपन जिम्मेदारी ला समझही, त कुई-कुकदर के नाव पढ़ई, सेवा अऊ विकास के छेत्र म दूर-दूर तक गूंजही।

आगर के नानकन बिगगारी, जब मेहनत के हवा पाही, त सागर जइसन उजियारा फैलाही। ओही परकार हर विद्यार्थी के सपना घलो एक दिन बड़े सफलता म बदल सकथे।

मोर परन हवय-ज्ञान, सेवा अऊ सद्भाव के रद्दा म चलके अपन महाविद्यालय, अपन गांव अऊ अपन छत्तीसगढ़ के मान ला बढ़ावत रहंव।

गुरू घासीदास बाबा के संदेश

राधिका भास्कर
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर



जात पात मानय नहीं
सत के महिमा गाय
पावन जेखर आचरण
वो सतनामी आय।।

नशापान अब बंद कर
मांसाहार ल त्याग
ज्ञान गुरू के ही इंही
सतनामी तय जाग।।

मनखे आघू झन नवय
करव सिरिफ सम्मान
जात-पात ला त्याग के
सत बर दे दव जान।।
अमरौतिन के लाल तंय
मंहगू के संतान
जनम धरे सतकाज बर
बांटे सत के ज्ञान।।

जैतखाम सत बर
खड़े धजा स्वेत लहराय
गिरौदपुर के धाम हर
सत के जस बगराय।।
कपट करे मा साधना
अउ लालच मा त्याग
भोग करे महिमा घटय
मेह मया बैराग ।।

सत बर देथे प्रान ला
तप बर त्यागे भोग
साधक बाबा के सरल
जिनगी उखरे जोग।।

चमत्कार तो ज्ञान हे
दिये गुरू ढागराय
ठगनी जग ठगता फिरय
निज स्वार्थ बिलमाय।।

का होगे हे गांव ला रे भाई

महेन्द्र पंद्राम
बी.ए. पंचम सेमेस्टर

का होगे हे गांव ला रे भाई, का होगे हे गांव ला,
धरम-करम ला भूला गे,
का होगे हे गांव ल रे भाई, का होगे हे गांव ला।
न रहीस चऊक चौराहा
आऊ ना रहीस ओ बर पेड़ छाव ह।
का होगे हे गांव ला रे भाई, का होगे हे गांव ला,
न रहिस न दु रूपया के रोजगार,
पूरा संगी साथी हो गेन बेरोजगार।
का होगे हे गांव ला रे भाई का होगे हे गांव ला,
र नहीस ओ हंसी ठिठोली,
ना रही ओ नानपन के बात।
का होगे हे गांव ला रे भाई का होगे हे गांव ला।
न रहीस ओ मेला मड़ई, आऊ न रहीस ओ तीज तिहार।
का होगे हे गांव ला रे भाई, का होगे हे गांव ला।

शासकीय नवीन महाविद्यालय कुई-कुकदूर केवल उच्च शिक्षा ग्रहण करने का संस्थान ही नहीं अपितु भारतीय ज्ञान परंपरा, मानवीय मूल्य, सामाजिक समरसता एवं भविष्य की संभावनाओं को मंच देने का एक अनोखा एवं सशक्त संस्था है। इसका मूल उद्देश्य विद्यार्थियों का ज्ञानार्जन करते हुए उन्हें समर्थ, सुदृढ़, सशक्त एवं गौरवशाली भारत के नागरिक के रूप में गढ़ना है। नवाचारों से परिपूर्ण यह महाविद्यालय वनांचल क्षेत्र के विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए कृतसंकल्पित है।

हमर छत्तीसगढ़ के गोंड जनजाति

स्नेहा परस्ते
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

गोंड़ जनजाति एक पुराना एक आदिवासी जनजाति आय .....
गोंड़ जनजाति के मनखे मन प्रकृति के पूजा करथे,.....
अउ संग म अपन देवी देवता बड़ा देव, बूढ़ा देव ग्राम के देवता, कुल के देवता लाल भी मानथे। गोड़ जनजाति मन छत्तीसगढ़ के बस्तर, कांकेर कोण्डागांव, नारायणपुर, दंतेवाड़ा, बीजापुर, सुकमा अउ कबीरधाम म रहिथे अउ गोंड़ जनजाति के मनखे मन के घर पहाड़, जंगल, अउ गांव के आस-पास ही रहिथे। गोंड जनजाति के मनखे मन के घर पहिली माटी बांस,लकड़ी, अउ खपरा ले बनाए जाये/अउ घर के आगू म आंगन अउ पाछू म बारी रहिथे बारी म भाजी अउ सब्जी लगाय जाथे, अब बहुत से गोड़ परिचान मन पक्का मका म घलो रहिथे। गोड़ जनजाति मन अपन पूरखा पितर मन ल घलो मानथे, घर परिवार के सुख शांति अउ खेती म बढ़िया फसल होय। अउ गांव के भलाई बर देवी देवता के पूजा भी करथे। गोंड जनजाति मन के अपन-अपन रहन-सहन खान-पान रीति-रिवाज अउ परंपरा हवय गोंड जनजाति के मनखे मन जंगल, जमीन, नदी अउ पहाड़ संग जुड़े रहिथे अउ प्रकृति ला ये मन अपन जिनगी के हिस्सा मानथे। गोड़ परिवार मन के मुख्य काम बुता खेती किसानी आय जेमा इमन कोदो, कुटकी,धान अउ बहुत से फसल के खेती करथे अउ संग म जंगल ले महुआ तेंदुपत्ता,चार, हर्रा, बहेरा, अउ इमली, अउ दुसर चीज के बटोरा करके अपन गुजर बसर करथे। गोंड जनजाति मा परिवार के बहुते महत्व हे घर के बड़े मनखे मन के बात ला मान दे जाथे अउ परिवार के सबो झन मिल जुल के काम करथे /बिहाव, तिहार, अउ दुसर खुशी के बेरा म रिश्तेदार अउ समाज क लोगन मन एक संग मिल के खुशी मनाए जाथे।

बस्तर दशहरा : लोक संस्कृति की जीवंत विरासत

तिजऊ राम
बी.ए. पंचम सेमेस्टर

छत्तीसगढ़ को अपनी अलग-अलग लोक परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहाँ मनाए जाने वाले त्यौहारों में बस्तर दशहरा का अपना अलग महत्व है। बस्तर दशहरा का त्योहार नहीं है, बल्कि यह बस्तर के लोगों की आस्था, परंपरा, रीति-रिवाज और आपसी एकता से जुड़ा हुआ पर्व है। इस दौरान बस्तर की लोक संस्कृति अपने पूरे रंग में दिखाई देती है।

बस्तर दशहरा की अलग पहचान -

बस्तर का दशहरा देश के दूसरे स्थानों पर मनाए जाने वाले दशहरे से कुछ अलग है। सामान्य रूप से दशहरे को भगवान राम और रावण के प्रसंग से जोड़ा जाता है, लेकिन बस्तर दशहरा मुख्य रूप से मां दंतेश्वरी की आराधना से जुड़ा

है। यहाँ इस पर्व में रावण दहन की परंपरा प्रमुख नहीं है। इस पर्व की सबसे खास बात इसकी लंबी अवधि है। बस्तर दशहरा कई दिनों तक चलने वाला उत्सव है। अलग-अलग दिनों में अनेक धार्मिक और परंपरागत रस्में होती हैं। इन रस्मों में बस्तर के ग्रामीण और आदिवासी समाज की महत्वपूर्ण भागीदारी रहती है।

लोक जीवन और परंपराओं का मेल-

बस्तर दशहरा में यहाँ के लोक जीवन की सच्ची तस्वीर देखने को मिलती है। गांवों से लोग पारंपरिक वेशभूषा में इस उत्सव में शामिल होने आते हैं। महिलाओं के पारंपरिक आभूषण और पुरूषों की पारंपरिक पोशाक इस आयोजन को और आकर्षक बनाता है।

ढोल, मांदर और नगाड़ों की आवाज से पूरा वातावरण उत्सव जैसा हो जाता है। लोग सामूहिक रूप से नाचते-गाते हैं और अपनी खुशी व्यक्त करते हैं। इससे पता चलता है कि बस्तर के लोगों के जीवन में लोकगीत, लोकनृत्य और संगीत का कितना महत्व हैं।

रथ और धार्मिक परंपरा -

बस्तर दशहरा की प्रमुख परंपराओं में रथ से जुड़ी रस्मों का विशेष महत्व है। विशाल रथ को लोग मिलकर खीचते हैं। इस समय लोगों में उत्साह और श्रद्धा दोनों दिखाई देते हैं। रथ खींचने की यह परंपरा केवल धार्मिक भावना नहीं दिखाती, बल्कि लोगों की सामूहिक शक्ति और एकता का भी प्रतीक है।

आदिवासी संस्कृति का संरक्षण-

बस्तर की संस्कृति का सबसे बड़ा आधार वहां के आदिवासी समाज की परंपराएँ हैं। बस्तर दशहरा इन परंपराओं को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नई पीढ़ी जब अपने बुजुर्गों के साथ इन कार्यक्रमों में भाग लेती है, तो वह अपनी संस्कृति और पुराने रीति-रिवाजों को करीब से समझती है। इस तरह का त्योहार केवल धार्मिक आयोजन न रहकर संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का माध्यम भी बन जाता है।

सामाजिक एकता का संदेश-

बस्तर दशहरा में अलग-अलग गांवों और समुदायों के लोग एक साथ आते हैं। सभी मिलकर पर्व में भाग लेते हैं। इससे आपसी भाईचारा और सहयोग की भावना मजबूत होती है। यहाँ व्यक्ति से ज्यादा समुदाय और सामूहिक भावना को महत्व मिलता है। आज के समय में जब लोग अपनी पुरानी परंपराओं से धीरे-धीरे दूर होते जा रहे हैं, ऐसे आयोजन हमारी सांस्कृतिक जड़ों को याद रखने में मदद करते हैं।

निष्कर्ष-

अंत में कहा जा सकता है कि बस्तर दशहरा बस्तर की पहचान से जुड़ा हुआ एक अनोखा लोकपर्व है। इसमें धर्म के साथ -साथ लोकगीत, लोकनृत्य, पारंपरिक वेशभूषा, सामाजिक एकता और आदिवासी जीवन की झलक दिखाई देती है। यह पर्व में अपनी संस्कृति और परंपराओं को बचाकर रखने का संदेश देता है।

पहाड़ों के बीच में बसा छोटा सा मेरा गांव सारपानी

इन्द्रावती मुराली
एम.ए. प्रथम सेमेस्टर

मेरे गांव का नाम सारपानी है, यह नाम इसलिए पड़ा क्योंकि यहां सरई का पेड़ अधिक पाया जाता है, सरई के पेड़ से रार (गोंद) निकाला जाता है, जो धुप देने का काम आता है, इस पेड़ से लकड़ी काटकर चौखट, बेड और दरवाजा बनाने का भी काम किया जाता है, सरई के फूल से साबुन भी बनाया जाता है, फूल और जड़ का उपयोग औषधि बनाने के लिए भी किया जाता है।

सारपानी आगरनदी से लगभग 100 फीट की ऊंचाई पर स्थित है, यह पहाड़ी इलाका है, यह वनांचल और ग्रामीण क्षेत्र है, इस गांव कि जनसंख्या 550 है, यहां काला चट्टान खनिज पदार्थ पाया जाता है, इस गांव का नाम सारपानी इसलिए रखा गया है,क्योंकि यहां पानी का स्त्रोत अत्यधिक पाया जाता है, यहां सुंदर चारों तरफ हरियाली देखने को मिलती है।

गांवो में सुबह होते ही किसानों की हलचल शुरू हो जाती है, और महिलायें रसोई घर में काम करके खेत में काम करने चली जाती है, यहां चारों तरफ हरियाली होने के साथ साथ खेतों में लहराती हुई फसलें बड़ी अच्छी लगती है, हमारे गांव में ऊंचे-ऊंचे पहाड़, पर्वत, झरना सौंदर्य पूर्व देखने को मिलता है, यहां पर घना जंगल आबादी क्षेत्र देखने को मिलता है, और यहां कि खास बात मेरे गांव में सरई के काफी बड़-बड़े पेड़ पाये जाते है, पेड़ों की लंबाई काफी अधिक पाई जाती है।

सारपानी में फलों के पेड़ पाए जाते है, जैसे कि चार, तेंदू, आम, डूमर, जामुन, कुसुम, बहेरा, हर्रा, आदि। जिसमें से कुसुम का तेल भी निकाला जाता है, जो खाने और दवा के रूप में उपयोग किया जाता है, बहेरा और हर्रा जिसे खांसी के लिए दवा के रूप में उपयोग किया जाता है। फसल में यहां जैसे-कोदो, कुटकी, मक्का, ज्वार, बाजरा, रमतिला, हरी कंगनी, झुरगा, इन सभी की खेती यहां की जाती है।

गाँव की रहन-सहन यहां बैगा जनजाति की पहचान वेश भूषा रहन-सहन, खान-पान जैसे बोरे-बासी, पेज-बासी, आम के आचार के साथ बड़े आनंद के साथ खेतों में बैठकर भोजन ग्रहण करते है, मेरे गांव में लोग बहुत ही सरल-सहज और मिल जुलकर रहते हैं। यहां के लोग आज भी सुख-दु:ख में एक परिवार की तरह साथ-साथ रहते है, कोई भी त्यौहार हो या पर्व लोग परिवार की तरह मिलकर मनाते है।

गाँव में शाम होते ही चौपाल पर बुजुर्गों की कहानियां और बच्चों का खेलना महिलाओं की एकता हमारे गांव की खुबसूरती है, मेरे गांव में शहर की अपेक्षा सुविधायें नहीं है परंतु बहुत सी असुविधाएँ है, फिर भी यहाँ जा अपनापन और शांति है जो शहर में कही नहीं मिलती । यहां का जीवन कठिन जरूर है, पर संतोष से भरा है, मेरा गांव हालांकि

नक्शे पर बहुत छोटा है, पर मेरे दिल में बहुत बड़ा है शहर कि चमक धमक मुझे कभी अपने गांव की मिट्टी से दूर नहीं कर सकती। मुझे गर्व है कि मैं एक गांव की बेटी हूँ जहाँ आज भी इंसानियत और संस्कार जिन्दा है।

हमारे गाँव में आज सड़क और अस्पताल कि आवश्यकता है पढ़ाई के लिए बच्चों को दूर जाना पड़ता है, अच्छी स्कूल न होने के कारण अगर ये सुविधायें मिल जाये तो हमारा गांव शहर जैसे आगे बढ़ सकता है।

गाँव की खूबसूरती शहर के सामने धुंधला है, मेरे गांव में चैन यहाँ सुबह गाड़ियों की हार्न से नहीं होती जबकि गाँव में पक्षियों की चहकने से होती है, यहाँ रिश्ते पैसों से नहीं दिल से निभाती है, मेरा गाँव वही है, जहां हम सुकुन पाते है।

महाविद्यालय और शिक्षा

लुकेश्वर कुमार पात्रे
एम.एस.सी. रसायन शास्त्र

''**शिक्षा वह सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिसमें आप दुनिया को बदल सकते है**''

– नेल्सन मंडेला

प्रस्तावना – महाविद्यालय केवल ईट पत्थर की इमारत नहीं है, बल्कि विचारों, ज्ञान संस्कारों और सपनों का वह पावन मंदिर है जहाँ एक साधारण विद्यार्थी का रूपान्तरण जिम्मेदार जागरूक और संवेदनशील नागरिक के रूप में होता है। महाविद्यालय शिक्षा का वह मंच है जहां हमें केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं बल्कि जीवन जीने की कला सोचने की शक्ति और समाज के लिए कुछ करने की प्रेरणा मिलता है।

महाविद्यालय का महत्व – महाविद्यालय के महत्व निम्न चरणों के द्वारा समझ सकते है –

- व्यक्तित्व का समग्र विकास
- ज्ञान के साथ व्यवहारिक शिक्षा
- नेतृत्व क्षमता का निर्माण
- समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी
- नए विचारों और नवाचारो को प्रोत्साहन
- मित्रता सहयोग और टीम भावना का विकास

महाविद्यालय का वातावरण – महाविद्यालय का वातावरण हमे नए अनुभव देता है। यहाँ विभिन्न प्रकार के विद्यार्थी, शिक्षक, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, सेमिनार, खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि हमारे ज्ञान और व्यक्तित्व को निखारते है। यहाँ का वातावरण हमें अनुशासित और आत्मविश्वासी बनाता है।

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य - शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्राप्त करना नहीं है। वास्तविक शिक्षा वह है जो व्यक्ति में ज्ञान के साथ विवेक चरित्र आत्मविश्वास और मानवीय संवेदनाए विकसित करे। भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने शिक्षा को शेरनी का दूध बताया था, इसे जो पियेगा वह दहाड़ेगा।

शिक्षा के मंत्र - '' सीखते रहो बढ़ते रहो, रूको मत, थको मत, क्योंकि सफलता उनकी होती है, जो निरंतर प्रयास करता है।

शिक्षा और तकनीकी - आज तकनीकी युग में शिक्षा के स्वरूप में भी तेजी से परिवर्तन आया है। इंटरनेट डिजिटल पुस्तकालय, ऑनलाईन कक्षाएँ और कृत्रिम बुद्धिमता जिसे वर्तमान में AI कहते हैं, विद्यार्थी के लिए ज्ञान प्राप्त करने का आसान तरीका बनाया है।

महाविद्यालय और शिक्षक की भूमिका -

- विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना।
- नैतिक मूल्यों को संस्कृति से जोड़ना।
- तकनीकी और व्यवसायिक कौशल का विकास करना।
- रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करना।

भारतीय ज्ञान परम्परा एवं जनजातीय दर्शन

द्रोपती
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

भारत के ज्ञान-परंपरा बहुते विविध, समृद्ध अउ अनुभव आधारित परंपरा आय। ए परंपरा सिरिफ लिखित ग्रंथ म नइ, बल्कि लोकजीवन में घलो जिंदा है। भारत के जनजातीय समाज ए ज्ञान-परंपरा के महत्वपूर्ण हिस्सा आय। जनजातीय जीवन म ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी अनुभव, व्यवहार अउ परंपरा ले आगे बढ़त है। जंगल, जमीन, पानी, पहाड़ अउ जीव-जंतु ओकर जीवन के अभिन्न हिस्सा है। जन जातीय दर्शन मनखे अउ प्रकृति के बीच गहिरा सबंध ला स्वीकार करथे। ए दर्शन मन मनखे ला प्रकृति के मालिक नई, बल्कि ओकर हिस्सा माने जाथे। ए विचारधारा म सामूहिक जीवन, सहयोग समानता,अउ पारस्परिक सम्मान के महत्व घलो दिखाई देथे। दर्शन के मतलब केवल दार्शनिक ग्रंथ पढ़ना नई आय।

दर्शन जीवन ला देख अउ समझे के एक नजर आय। जनजातीय दर्शन मतलब जनजातीय समाज के जीवन-दृष्टि, मूल्य अउ अनुभव के समुच्चय आय। ए दर्शन लिखित किताब के बजाय लोक परंपरा म जिंदा अउ सुरक्षित रहिथे। लोककथा, लोकगीत, कहावत, नृत्य अउ अनुष्ठान ए ज्ञान के माध्यम बनथें।

बुजुर्ग मन समाज के अनुभव के प्रमुख सरंक्षक माने जाथे। बच्चा मन अपन परिवार और समुदाय ले व्यवहारिक

ज्ञान सीखें। जंगल में कऊन पौधा उपयोगी आय, ए ज्ञान अनुभव ले मिलथे। कौन मौसम में कौन सा फल खाय जाय, ए बात पीढ़ी-दर-पीढ़ी सिखाय जाथे। कऊन नदी या नाला के पानी कब उपयोग करना चाही, ए ज्ञान स्थानीय अनुभव म रहिथे। जनजातीय दर्शन मनखे के जीवन ला प्रकृति अऊ समाज संग जोड़के देखथे। इहां व्यक्तिगत सुख के समय साथ रहिथे, दैहिक सुख के घलो महत्व है। ए दर्शन म अधिकार के संग जिम्मेदारी के भावना घलो जुड़े है। जंगल जनजातीय समाज के जीवंत ज्ञानकोष आय। जंगल के हर मौसम के अपने रंग अउ उपयोग होथे। कंद-मूल, फल, फूल, बीज, पत्ता, अउ शिष्य के उपयोग से ज्ञान उत्पन्न होता है। अनेक पौधा के औषधीय उपयोग स्थानीय वैद्य या जानकार मने जाथै। ए ज्ञान पुस्तक के बजाय अनुभव अऊ व्यवहार ले आगे बढ़े हे। जंगल के पौधे पहिचाने बर ओकर पत्ता, फूल, फल गंध के सहारा लेय जाथे। कुछ पौधा भोजन बर उपयोगी होथें। कुछ पौधा औषधीय उपयोग बर काम आथे। कुछ पौधा घर-गृहस्थी के काम में आथे। कुछ वन उत्पाद आर्थिक जीवन के साधन बनथे। वनज्ञान में केवल पौधा के जानकारी नइ, बल्कि जंगल के संतुलन के समझ घलो रहिथे। कौन चीज कब तोड़ना चाही, ए बात के स्थानीय नियम हो सकथें। बीज अऊ पौधा के सरंक्षण अगली पीढ़ी बर जरूरी मानल जाथे। ए दृष्टि प्राकृतिक संसाधन के टिकाऊ उपयोग के विचार संग जुड़थे। जनजातीय दर्शन के दूसर। महत्वपूर्ण आधार सामुदायिकता है। जनजातीय जीवन में धरती ला केवल संपत्ति के रूप में देखना अधूरा हो सकथे। धरती जीवन देय वाली शक्ति के रूप में सम्मानित होथे। खेतीहर समाज में मिट्टी के गुण के ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़थे। कौन जमीन में कौन सफल होही, ए बात स्थानीय अनुभव ले पहचानल जाथे। बांस के पानी, मिट्टी के रंग अऊ गहराई ले जमीन के प्रकृति समझे जाथे। जमीन संग हम मनके सबंध जुड़े घलो रहिथे, गांव के आस-पास की जमीन, जंगल और जल स्त्रोत, मनोवैज्ञानिक जीवन के आधार। भूमि के उपयोग म समुदाय के जरूरत अउ भविष्य के चिंता घलो जुड़े रहिथे,धरती ले मिले उपज बर कृतज्ञता के भावना लोकपरंपरा प्रकट होते हैं। फसल, वर्षा अउ प्रकृति के प्रति आभार जताया के अनेक सांस्कृतिक रूप हैं। पानी बिना जीवन संभव नई आय। ए बात जनजातीय समाज के अनुभव मन बहुत पहिली ले स्पष्ट रहिस। नदी,नाला, झरना, तालाब, अउ कुआं गांव के जीवन के केन्द्र रहिथें।

सद्गुणों की शुरूआत स्वयं से ही करनी होती है,
जब तक खुद की ऊंगली पर कुमकुम नहीं लगेगा तब तक
दूसरे के ललाट पर तिलक कैसे लगा सकते हैं ।

हमारा पर्यावरण

पार्वती परस्ते
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

पर्यावरण हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जो हमारे जीवन को प्रत्यक्ष या अप्रयत्क्ष रूप से प्रभावित करता है, वह पर्यावरण कहलाता है। वायु,जल, मिट्टी, पेड़, पौधे, पशु-पक्षी, नदियां, पर्वत, वन, सूर्य का प्रकाश तथा मनुष्य द्वारा बनाए अनेक साधन हमारे पर्यावरण के अंग है। मनुष्य का जीवन पूरी तरह पर्यावरण पर निर्भर हे। हमें सांस लेने के लिए शुद्ध वायु, पीने के लिए स्वच्छ जल भोजन के लिए भूमि और कृषि तथा जीवन के लिए प्राकृतिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। इसलिए पर्यावरण का सरंक्षण करना केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।

छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में प्राकृतिक सुंदरता और वनसंपदा से भरपूर क्षेत्र है। यहाँ चारों ओर फैले घने, जंगल, पहाड़ नदिया, झरने ओर बस्तर का प्राकृतिक वातावरण यहां रहने वाले लोगों के जीवन, संस्कृति और परंपराओं के गहराई से जुड़ा हुआ है।

बस्तर के जंगलों में साल, सगौन, बाँस , महुआ , तेंदू आदि अनेक प्रकार के पेड-पौधे पाये जाते हैं। यहां के जंगल लोगों को लकड़ी, फल, फूल, कंद मूल और अनेक प्रकार की लघु वनोपज प्रदान करते हैं। विशेष रूप से महुआ तेंदूपत्ता ओर बाँस स्थानीय लोगों की आजीविका में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

बस्तर में अनेक नदियाँ झरने और जलस्त्रोत भी पाए जाते हैं इंद्रावती नदी यहाँ की प्रमुख नदियों में से एक है। चित्रकोट और तीरथगढ जैसे जलप्रपात बस्तर की प्राकृतिक सुंदरता को और बढ़ाते हैं। जंगल और जलस्त्रोत मिलकर यहां के पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने में सहायता करते हैं।

पंडरिया क्षेत्र में स्थित हनुमंत खोल प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर एक रमणीय स्थल है। यहाँ का शांत वातावरण हरियाली पहाड़ पेड़ पौधे ओर प्राकृतिक जल धाराएँ लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है। हनुमंत खोल की प्रकृति वर्षा ऋतु में और भी सुंदर दिखाई देती है, जब चारों ओर हरियाली फैल जाती है और जलधाराओं में पानी बढ़ जाता है।

पर्यावरण को बचाने के लिए हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए और लगाए गए पौधों की देखभाल भी करनी चाहिए। पेड़ों की अनावश्यक कटाई रोकना आवश्यक है। जल को व्यर्थ नहीं बहाना चाहिए। वर्षा जल का सरंक्षण करना चाहिए तथा आसपास के स्थानों को स्वच्छ रखना चाहिए कचरे को इधर-उधर फेंकने के बजाय उचित स्थान पर डालना चाहिए प्लास्टिक के अत्यधिक उपयोग को कम करना चाहिए।

जीत लो हर लम्हा, बीत जाने से पहले,
लौट कर यादें आती हैं वक्त नहीं।

मोर छत्तीसगढ़ के माटी बोलथे

रविशंकर
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

मोर छत्तीसगढ़ के माटी मोर अभिमान आए ऐ माटी म बसे हे हमर पुरखा मन के पहचान आय। छत्तीसगढ़ के माटी सिरिफ माटी नई आय ए हमर संस्कृति हमर संस्कार अउ हमर पहचान आय। ए माटी म किसान के पसीना हे दाई के मया हे, पुरखा मन के आशीर्वाद हे अउ हमर गांव गंवई के सादगी बसे हे। जब सावन के पहिली बूंद ए माटी म गिरथे त माटी के खुशबू मन ला अइसे छूथे, जइसे दाई अपन लइका ल मया से गले लगाथे, हरियर धान के खेत महुआ के सुगंध कोयल के बोली, अउ तीज त्योहार के रंग अउ गांव के चौपाल ये सब हमर छत्तीसगढ़ के असली सुंदरता आय । ए माटी म गुरतुर बोली हे ए माटी म मया के मिठास हे । हमर छत्तीसगढ़िया मन कम बोलथे, फेर जेन बोलथे वो मन के दिल ले निकलथे ।

हमर परम्परा लोकगीत लोकनृत्य तीज त्योहार अउ हमर अपन बोली ये सब ए माटी के धरोहर आय। हमर माटी महन ला सिरिफ जन्म नई देय, बल्कि जीये के तरीका घलो सिखाथे। आज दुनिया कतको आगू बढ़ जाही, शहर कतको चमकदार हो जाही फेर मोर छत्तीसगढ़ के मांटी के खुशबू के बराबरी कोनो नई कर सकय। मोर छत्तीसगढ़ के मांटी मोर पहचान एही म बसे हे मोर दिल एही म सबे हे मोर जहान। माटी ला बचाबो, संस्कृति ला सजाबो छत्तीसगढ़ के मान ला दुनिया भर म बढ़ाबो। माटी कहिथे, तोर पहिचान पूछही कोनो त बता देबे मुस्कुराके मोर नाव छत्तीसगढ़िया हे ये माटी साधारण नई हे इहां हर मुठ्ठी म इतिहास बसे हे हर खेत म किसान के सपना, हर खेत म किसान के सपना हर खेत म किसान के सपना हर जंगल म प्रकृति के सांस बसे हे। जहाँ बिहान सूरज ले नइ किसान के मेहनत ले होथे जहाँ खेत म धान नइ घर-घर के सपना लहराथे ददरिया के सुर म प्रेम हे पंडवानी म इतिहास हे पंथी के ताल म आस्था हे अउ करमा के नाच म हमर विश्वास हे। माथा म तिलक बनाके रखहुं दिल म बसाके रखहुँ दिल म बसाके रखहुँ मोर छत्तीसगढ़ के माटी ला जिनगी भर बचाके रखहुँ।

यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता है, और यदि स्वस्थ नहीं है तो स्वस्थ मनोदशा के साथ नहीं रह पायेगा। स्वस्थ मनोदशा से ही स्वस्थ चरित्र एवं देश का निर्माण होगा।

– महात्मा गांधी

कबीर : मानवता के कवि

शुकवारिया कृषे
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

कबीर मानवता के सच्चे और महान कवि हैं जिन्होंने समाज को धर्म जाति और संप्रदाय का संकीर्ण दीवारों से ऊपर उठकर प्रेम और समानता का पाठ पढ़ाया। 15वीं शताब्दी के भक्ति आंदोलन के प्रमुख स्तंभ कबीरदास जी ने अपने युग में फैले अंधविश्वास बाह्य आंडबरों और सामाजिक कुरीतियों पर करारा प्रहार किया। बल्कि पूरी मानवता के कल्याण के लिए थी । यही कारण है कि सदियों बाद आज भी उनके विचार उतने ही प्रासंगिक है।

धार्मिक एकता और वैश्विक भाईचारा कबीर के समय में हिन्दू और मुस्लिम समुदायों के बीच गहरी दूरियां थी। कबीर ने इस खाई को पाटने के लिए दोनों ही धर्मों में व्याप्त कुरीतियों की कड़े शब्दों में आलोचना और न ही मंदिर में, बल्कि वह हर मनुष्य के हृदय में निवास करता है।

कबीर ने घोषणा की- उनका मानना था कि राम और रहीम एक ही परम तत्व के दो अलग-अलग नाम हैं। उन्होंने बाह्य आडंबरों जैसे मुंडन रोजा नमाज और तीर्थयात्रा की जगह मन की पवित्रता और आपसी भाईचारें पर जोर दिया। उनका दृष्टिकोण विशुद्ध रूप से मानवतावादी था।

कबीरदास जी जन्म के आधार पर किसी को छोटा या बड़ा मानने के सख्त खिलाफ थे। उन्होनें तत्कालीन समाज में व्याप्त छुआछूत और ऊँच-नीच की व्यवस्था को चुनौती दी। उनका स्पष्ट मानना था कि सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की संतान है, इसलिए सब समान हैं।

उन्होंने ब्राह्मणवाद और जातिगत अहंकार पर चोट करते हुए कहा कबीर की दृष्टि में व्यक्ति की पहचान उसकी जाति या कुल से नहीं बल्कि उसके कर्मों और उसके अंदर के मानवीय गुणों से होती हैं। उन्होंने समाज के शोषित और वंचित वर्ग को आत्मसम्मान के साथ जीने की उसके मन में उत्साह पैदा की।

प्रेम और करूणा मानवता का (सबसे बड़ा मंत्र) कबीर की मानवता का सबसे बड़ा मंत्र प्रेम है। वे जानते थे कि ज्ञान कि बड़ी-बड़ी बातें तब तक मनुष्य के भीतर दूसरों के प्रति प्रेम और सहानुभूति की भावना न हो। पुस्तक ज्ञान की तुलना में उन्होंने व्यावहारिक प्रेम को सर्वोपरि माना है। कबीर का मानवता केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें प्राणिमात्र के प्रति दया, भाव शामिल था। वे अहिंसा के समर्थक थे और जीव हत्या का विरोध करते थे। उनका मानना था कि हर जीव में एक ही चेतना धड़कती है।

कबीर के विचारों की आज के समय में सूचना है आज का आधुनिक समाज जब तकनीकी रूप से आगे बढ़ रहा है, तब भी जाति, धर्म और नस्ल के नाम पर नफरत और हिंसा देखने को मिलती है। ऐसे दौर पर में कबीर के विचार एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं। कबीर हमें सिखाते है कि उन्हें मुख्य रूप से सभी मनुष्यों को एक समान समझने आपसी भाईचारा बनाए रखने और ढोंग दिखावे से दूर रहने की सीख देते है। उनके अनुसार ईश्वर किसी विशेष धर्म या स्थान में नहीं बल्कि हर इंसान के भीतर मौजूद है।

संत कबीर दास ने अपने जीवनकाल में जाति पाति,ऊंच नीच और छुआछूत (जातिवाद) का कड़े शब्दों में विरोध किया था उन्होंने किसी से डरे बिना बहुत ही सरल और सीधी भाषा में समाज में फैली इन बुराइयों पर चोट की। कबीर दास जी कहते है कि छुआछूत मनुष्य की अज्ञानता है। मिट्टी के बर्तन वाला एक ही मिट्टी से हर तरह के बर्तन बनाता है। वैसे ही भगवान ने एक ही पांच तत्वों (मिट्टी, पानी, हवा आदि) से सबको बनाया है। फिर छुने से कोई अशुद्ध कैसे हो सकता है। उन्होनें समाज को बताया या समझाया कि कोई भी व्यक्ति अपने जन्म या जाति से महान नहीं बरता, बल्कि अपने कर्मो से महान बनता है। अगर कोई ऊंची जाति में जन्म लेकर भी बुरे काम करता है तो वह सबसे अच्छा नहीं हो सकता।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ
पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का
पढ़े से पंडित होय।।

कबीर की मानवता का मूल आधार प्रेम था। उनका मानना था कि किताबी ज्ञान या बड़ी – बड़ी डिग्रियां हासिल करने से कोई इंसान महान नहीं बनता। महान वही है जिसके दिल में दूसरों के लिए प्रेम और करूणा होना चाहिए।

ऐसी बानी बोलिये
मन का आपा खोये।
औरन को सीतल करे
आपहु सीतल होये।।

मनुष्य को हमेशा ऐसी मीठी और नम्र भाषा बोलनी चाहिए जिससे उसका अपना अहंकार दूर हो जाए। ऐसी वाणी सुनने वाले के मन को तो शांति पहुॅचती ही है साथ ही बोलने वाले को भी आत्मिक सुख देती है। मानवता का पहला नियम सबसे प्यार से बात करना है।

जाति न पूछो साधु की
पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का
पड़ा रहन दो म्यान।।

कबीर जी कहते हैं कि किसी व्यक्ति की पहचान उसकी जाति या धर्म से नहीं, बल्कि उसके ज्ञान और मानवता से होनी चाहिए। जिस तरह युद्ध में तलवार की कीमत उसकी धार से होती हैं, न कि उसकी सुंदर म्यान से ठीक उसी तरह इंसान की असल पहचान उसके ऊंचे विचारों और व्यवहार से होती है, न कि उसकी जाति से।

जब भी आप एक अच्छी किताब पढ़ते हैं, तो कहीं न कहीं दुनिया में आपके लिए रोशनी का एक नया दरवाजा खुलता है।

समुद्र तल से 1200 फीट ऊंचे पहाड़ पर बसा सेजाडीह गांव

(बैगा जनजाति की परंपरा और प्रकृति के बीच जीवन की अनोखी कहानी)

सरस्वती श्याम, महेन्द्र पंद्राम

छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले के पंडरिया विकासखंड की कुई कुकदुर तहसील से लगभग 15 किलो मीटर में प्रकृति की गोद में बसा सेजाडीह गांव अपनी भौगोलिक स्थिति और आदिवासी संस्कृति के कारण विशेष पहचान रखता है। लगभग 1200 फीट ऊंचे पहाड़ पर बसे इस गांव में बैगा जनजाति के परिवार निवास करते हैं। गांव में लगभग 42 घर हैं। पहाड़ की ऊंचाई, चारों ओर फैली हरियाली और जंगल से जुड़ा जीवन सेजाडीह को आसपास के अन्य गांवों से अलग बनाता है।

सेजाडीह की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां का जीवन आज भी प्रकृति के काफी करीब है। पहाड़ और जंगल यहां के लोगों के जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। सुबह की शुरूआत प्रकृति की शांत फिजाओं और पक्षियों की आवाजों के बीच होती है। बरसात के मौसम में जब पहाड़ हरियाली की चादर ओढ़ लेता है, तब सेजाडीह का प्राकृतिक सौंदर्य देखते ही बनता है।

'' बैगा संस्कृति की झलक''

सेजाडीह में रहने वाली बैगा जनजाति छत्तीसगढ़ की समृद्ध आदिवासी संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। बैगा समुदाय की अपनी पारंपरिक जीवनशैली, रीतिरिवाज, लोकविश्वास, खानपान और प्रकृति से गहरा सबंध रहा है। जंगल और पहाड़ उनके जीवन में केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि उनकी संस्कृति और परंपरा का हिस्सा हैं।

सेजाडीह की कहानी केवल 42 घरों की कहानी नहीं है। यह पहाड़ की ऊँचाई पर प्रकृति के साथ जीवन जी रहे बैगा समाज की कहानी है। यह गाँव हमें बताता है कि आधुनिक विकास की दौड़ के बीच भी हमारी आदिवासी संस्कृति, परंपराएँ और प्रकृति से हमारा रिश्ता कितना महत्वपूर्ण है।

सेजाडीह-1200 फीट की ऊँचाई पर बसा एक छोटा-सा गाँव, लेकिन अपनी संस्कृति, प्रकृति और संघर्ष की कहानी में बेहद समृद्ध। गांव में आज भी सामुदायिक सहयोग और अपसी भाईचारे की भावना देखने को मिलती है। त्योहारों और पारंपरिक अवसरों पर लोग मिलजुलकर अपनी संस्कृति को जीवंत रखते हैं। लोकगीत, पारंपरिक नृत्य और रीति-रिवाज नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने का काम करते हैं।

पहाड़ की ऊँचाई और चुनौतियाँ

1200 फीट की ऊँचाई पर बसे होने के कारण सेजाडीह की प्राकृतिक सुंदरता जितनी आकर्षक है, यहाँ का जीवन उतना ही चुनौतीपूर्ण भी है। पहाड़ी क्षेत्र में आवागमन, शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल और अन्य आवश्यक सुविधाओं तक पहुँच कई बार कठिन हो सकती है। विशेषकर बारिश के मौसम में पहाड़ी रास्तों पर आवागमन ग्रामीणों के लिए परेशानी का कारण बन सकता है।

इन चुनौतियों के बावजूद गांव के लोग मेहनत और आत्मनिर्भरता के साथ अपना जीवन बिता रहे हैं। खेती, मजदूरी और जंगल से जुड़े पारंपरिक कार्य उनके जीवन का महत्वपूर्ण आधार है।

विकास के साथ संस्कृति का संरक्षण

सेजाडीह के लिए विकास आवश्यक है, लेकिन ऐसा विकास जो प्रकृति और संस्कृति दोनों के साथ लेकर चले। कुछ दिन पहले यहाँ सड़क का निर्माण हुआ है लेकिन वहाँ आज भी शिक्षा, स्वास्थ्य,बिजली, पेयजल और रोजगार जैसी सुविधाओं का विस्तार गांव के जीवन को बेहतर बना सकता है। साथ ही बैगा समुदाय की पारंपरिक संस्कृति और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण भी उतना ही जरूरी है।

मोर माँ के आँचल

समरतिया
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

माँ दुनिया के सबसे सुंदर अउ अनमोल रिश्ता आय। माँ के ममता दुलार अउ दुलार के तुलना दुनिया के कोनो चीज ले नई करे जा सकय। माँ अपन संतान बर बखत त्याग करे बर तिहार रहिथे। ओकर मया मं कोनो स्वारथ नई होवय। माँ के आंचल में अइसन ममता लंके रहिथे, जेन ह संतान ला हर दुख-दर्द ले बचाके रखये। मोर माँ के आंचल दुनिया के सबसे सुरक्षित जगह आय जब मैं छोटे रहेव, त मोर माँ के आंचल ही मोर पूरा दुनिया रहें। जब कभू मैं डर जात रहेव, त माँ के आंचल ले मोर आंसू पोछ के मोला हिम्मत देय। ओकर मीठ बोली अउ ममता भरे हाथ के स्पर्श ले मोर सब चिंदा दूर हो जावत रहिस। माँ के आंचल मं सिर रखके जऊब सुकून मिलथे, वो सुकून दुनिया के कोनो महंगा चीज मं नई मिल सकय माँ अपन संतान के खुशी बर अपन सुख ला भी छोड़ देथे। घर मं चाहे कतको काम रहय, फेर अपन लइका के जरूरत ला सबसे पहली समझथे। मैं बीमार पडथे त माँ रात-दिन मोर सेवा करथे। मोला भूख लगथे त अपन हाथ ले खाना खवाथे। मैं स्कूल जीवत रहेव त मोर किताब-कापी, कपड़ा, अउ खाना के पूरा चिंता माँ ही करथे। मोर छोटी-छोटी सफलता मं माँ के चेहरा खुशी ले चमक उठथे अउ जब मैं असफलन होथों, त माँ मोला डांटने के बजाय समझाथे अउ कहिथे '' हार ले घबराय के जरूर नइ, फेर कोशिश कर एक दिन जरूर सफल होबे।'' माँ के आंचल खाली कपड़ा के एक टुकड़ा नइ आय बल्कि ये ममता, सुरक्षा अउ संस्कार के पहचान आय। माँ के आंचल मं लुकके बच्चा अपन आप ला सुरक्षित महसूस करथे। गांव के घर मं आज घलो माँ अपन आंचल ले अपन लइका के मुंह पोछथे, ओकर माथा मं हाथ फेरथे अउ जरूरत पड़ने पर ओकर आंसू ला अपन आंचल मं समेट लेथे। मां के आंचल मं मया के असन छांव रहिथे, जहां दुख के घाम घलो नई पहुँच पावय माँ हमन ला सिरिफ पाल पोसके बड़ा नई करय, बल्कि जिनगी जिये के तरीका घलो सिखाये। वो हमन ला सच्चाई, ईमानदारी, दया, मेहनत अउ बड़का मनखे क सम्मान करना सिखाथे। मोर मां हमेशा कहिथे कि जिनगी मं चाहे कतको कठिनाई आ जावय, फेर दूसर के मदद करना अउ अपन संस्कार ला कभू नई छोड़ना माँ के ए बात मन मं हमेशा बसे रहिथे माँ खुद कतको तकलीफ सह लेथे, फेर अपन संतान ला ओकर एहसास तक नई होवत देय। घर के सब झन के पसंद-नापसंद के ख्याल रखत रखत वो अपन बर कभू नई सोचय। हमन ला अच्छा कपड़ा मिल जावय भरपेट खाना मिल जावय अउ पढ़-लिखके आगू बठन, एहीच ओर अपना होथे माँ के त्याग के कीमत हमन कभू नई चुका सकन। सच कहें न माँ के मया दुनिया के सबसे अनमोल धन आय।

माटी मोर महतारी

प्रमिला
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

छत्तीसगढ़ म कहे जाथे, माटी मोर महतारी। ये सिर्फ कहावत नोहय, ये हमर संस्कृति हमर पहचान अऊ हमर जीवन हरे छत्तीसगढ़ के माटी हमर बर सिरिफ माटी नई हे, बल्कि ये हमर महतारी आय। जइसने एक महतारी अपन लइका ला जनम देके, पाले-पोसे अउ ओकर जिनगी ला संवारथे, वइसने हमर छत्तीसगढ़ के माटी घलो हमन ला अपन गोदी म पाल-पोस के बड़ा करे हे। ये माटी मं हमर पुरखा मन के पसीना, मेहनत अउ मया बसे हे। एहां सेती हमन अपन माटी लाल '' माटी मोर महतारी कहिथन ''। छत्तीसगढ़ ला धान के कटोरा के नांव ले जानथे। इहाँ के खेत-खार नदी-नाला, पहाड़ पर्वत अउ हरियर जंगल मन हमर माटी के सुंदरता ला बढ़ाथे। जब बरसात के पानी गिरथे, तब सूखत धरती हरियर चादर ओढ़ लेथे। चारों डहर हरियाली दिखथे अउ किसान मन अपन खेत मं धान के फसल लगाथें। किसान मन अपन खून-पसीना एक करके माटी ला सींचथे अउ फसल उगाथें। पे माटी किसान मन ला मेहनत करे के सीख देथे । हमर छत्तीसगढ़ मे माटी मं बहुत किसन के प्राकृतिक संपदा मिलथे। जंगल मं महुआ, तेंदूपत्ता, चार इमली अउ हर्रा-बहेड़ा जइसने बहुत किसम के वन उपज मिलथे। इहाँ के पहाड़ मन मं कोयला, लोहा, बॉक्साइड अउ अउरी खनिज के भंडार हे। नदी मन हमर खेत-खार लाल पानी अउ हमर माटी अपन गोदी मं प्रकृति के अनमोल उपहार ला संजो के रखे हे। माटी सिरिफ खेती-किसानी के साधन नइ हे, बल्कि हमर संस्कृति अउ परंपरा के पहचान घलो आय। छत्तीसगढ़ के तीज-त्योहार, लोकगीत, लोकनृत्य, अउ लोककला मं माटी के खुशबू बसे हे। हमर गांव के मड़ई हरेली, पोला तीजा अउ अउरी तिहार मन माटी संग जुड़े हवय। गांव के गली खेत के मेड़ अउ आंगन मं हमर संस्कृति के रंग देखे ला मिलथे। हमर लोकगीत मन मं अपन गांव, खेत-खार अउ माटी के बखान करे जाथे। छत्तीसगढ़ के महान विभूति मन घलो अपन माटी बर बहुत मया रखिन। हमर पुरखा मन अपन जल जंगल अउ जमीन के रक्षा बर संघर्ष करिन। वीर नारायण सिंह जइसने महान स्वंतत्रता सेनानी अपन माटी अउ अपन लोगन बर अपन प्राण तक न्योछावर कर दीन। उनकर बलिदान हमन ला अपन माटी अउ अपन देश के रक्षा करे के प्रेरणा देथे। माटी हमर पहचान आय। मनखे चाहे दुनिया के कोनो कोना मं चलि जावय, फेर अपन गांव अउ अपन माटी के याद ओकर मन मं हमेश रहिथे। परदेश मं रहइया मरखे ला जब अपन गांव के खेत, खार नदी अउ अपन माटी के सुगंध याद आथे, तब ओकर मन भावुक हो जाथे। अपन माटी के मया ला कभू भूलाए नई जा सकय। आज के समय मं हमर माटी के रक्षा करना बहुत जरूरी होगे हे। पेड़-पौधा के कटाई, प्रदूषण, रासायनिक पदार्थ के अधिक उपयोग अउ जमीन के गलत इस्तेमाल के कारण माटी के गुणवत्ता कम होवत जावत हे। अगर माटी खराब हो जाही, त खेती-किसानी पेड़-पौधा अउ हमर पूरा जीवन प्रभावित होही। एसेती हमन ला पेड़ लगाना चाही, जंगल के रक्षा करना चाही अउ माटी ला प्रदूषण से बचना चाही। किसान हा माटी के उर्वरता ला रखे बर जैविक खाद अउ प्राकृतिक तरीका के उपयोग कर सकथे, हमर हमन ला अन्न देथे। ए माटी

मं हमर पुरखा मन के कहानी हे, हमर संस्कृति के पहचान हे अउ हमर भविष्य के सपना घलो हे। एखर रक्षा करना हमर सबो के जिम्मेदारी आपा हमन ला अपन माटी ला महतारी के समान सम्मान देना चाही अउ ओकर सेवा करना चाही। अंत मं, मैं एही कहना चाहथों कि '' माटी मोर मोर महतारी सिरिफ एक वाक्या नइ है, बल्कि हमर मन के भावना आय। हमर माटी हमर जननी आय हमर पहचान आय अउ हमर गौरव आय। जइसने हमन अपन महतारी के सेवा अउ सम्मान करथन वइसने अपन माटी के घलो सेवा, सम्मान अउ रक्षा करना चाही। मर माटी हरियर उपजाऊ अउ सुंदर रहय हमर छत्तीसगढ़ हमेशा सुखी अउ समृद्ध रहय एही हमर कामना आय। ये माटी हम ल सबले बड़का सीख देथे। सहनशीलता के सीख। हम ए माटी म चलथन थूकथन खोदथन फेर भी ये माटी कभू गुस्सा नई होवय। वो हम ल अत्रेच देथे। हम ल घलोक ए माटी असन सहनशील बनना चाही।

भोरमदेव : कला और संस्कृति का संगम

नीलम
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

छत्तीसगढ़ ला अपन समृद्ध संस्कृति, परंपरा अऊ ऐतिहासिक धरोहर बर जाने जाथे। एही धरोहर म भोरमदेव मंदिर के एक अलग पहिचान हे। भोरमदेव मंदिर छत्तीसगढ़ के कबीरधाम कला में स्थित हे। ऐला छत्तीसगढ़ के खजुराहो घलो कहे जाथे। भोरमदेव केवल धार्मिक स्थल नई हे बल्कि ए ह छत्तीसगढ़ के कला, स्थापत्य, संस्कृति अऊ इतिहास के सुंदर संगम आवय।

भोरमदेव मंदिर के निर्माण लगभग 11वीं सदी म नागवंशी राजाओं के शासनकाल म होय रहिस। मंदिर भगवान शिव ला समर्पित हे। मंदिर के नाम भगवान शिव के एक रूप भोरमदेव के नाम ऊपर रखे गे हे। ए मंदिर के आसपास के क्षेत्र म प्राचीन समय के अनेक ऐतिहासिक अऊ धार्मिक महत्व वाले अवशेष देखे बर मिलथे। भोरमदेव मंदिर के स्थापत्य कला बहुत आकर्षक हे। मंदिर के दीवार, स्तंभ अउ बाहरी हिस्सा म देवी-देवता, पशु-पक्षी, नर्तक-नर्तकी, संगीत कार अउ रोजमर्रा के जीवन के अलग-अलग दृश्य के सुंदर मूर्ति बनाय गे हे। ए मूर्ति मन न तत्कालीन समाज, जीवनशैली अउ कलाकार के मन के कल्पनाशीलता के झलक साफ दिखाई देथे। मंदिन के पत्थर म बारीकी ले करेगे नक्काशी ए बात ला बताथे कि प्राचीन छत्तीसगढ़ म कला अउ शिल्प के कतका विकास होय रिहिस।

भोरमदेव म धार्मिक भावना के संगे-संग लोक संस्कृति अउ कला के घलो अब्बड़ सुघ्घर मेल दिखथे। मंदिर के मूर्ति मन म नृत्य संगीत अउ धार्मिक परंपरा के चित्रण देखे बद मिलथे। एहि कारण ले भोरमदेव ल सिरिफ मंदिर नई बल्कि पत्थर म लिखे संस्कृति के इतिहास कहे जा सकथे। इहाँ के शिल्पकला छत्तीसगढ़ के कलाकार मन के प्रतिमा अउ मेहनत के सुघ्घर परिचय देथे। मंदिर के मूर्ति मन हमर पुरखा मन के कला बोध अउ जीवन के दृष्टि ला आज घलो जिन्दा रखे हे। भोरमदेव भगवान शिव के प्रमुख धार्मिक स्थल म ए ठन आय। सावन महिना, महाशिवरात्रि अउ दूसर धार्मिक अवसर म इहाँ श्रद्धालु मन के भीड़ लगथे। श्रद्धालु मन भगवान शिव के पूजा अर्चना करके अपना मनोकामना ला पूरा होय के कामना घलो करथे। भोरमदेव केवल एक मंदिर बस नो हय बल्कि ए ह छत्तीसगढ़ के कला अउ संस्कृति के जीवंत पहिचान आय।

बैगा जनजाति : संस्कृति एवं जीवन शैली प्रथाएं

होशियार सिंह
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

छत्तीसगढ के अनेक आदिवासी जनजातियों की भूमि यहां निवास करने प्रमुख जनजातियों में बैगा जनजाति का विशेष स्थान है। बैगा जनजाति मुख्य रूप से वन या पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करती है इनका जीवन प्राकृतिक जंगल और प्राकृतिक व्यवस्था से जुड़ा हुआ है। बैगा जाति के अपनी विशिष्ट सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराएँ है। इनके लोकगीत जैसे करमा, ददरिया, सुआ लोकनृत्य शैला नृत्य एक गांव से दूसरे गांव में विशेष त्यौहार में अपने लोकनृत्य को पारम्परिक रूप से प्रदर्शित करता है और धार्मिक मान्यताएं इनके जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है प्रकृति और स्थानीय देवी-देवताओं के प्रति इनके मन में विशेष श्रद्धा होती है इनके समाज में आपसी सहयोग और सामूहिकता की भावना दिखती है। बैगा जाति की परंपरागत आजीविका कृषि, पशुपालन तथा वन उपज पर आधारित है जंगल से प्राप्त होने वाली फल, कंद-मूल, जड़ी-बूटियां, और अन्य उपज इनके जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है इनके पास वनस्पतियों और प्राकृतिक संसाधनों से सबंध पारंपरिक ज्ञान भी पाया जाता है प्रथा विशेष काम, रीतिरिवाज सामाजिक व्यवस्था से है जो इतनी पुरानी हो जाती है कि लोग उसे बिना किसी कानून के अपने जीवन का हिस्सा बना लेते है। इसी प्रकार बैगा समाज में भी कई प्रकार के प्रथाएं होती है उनमें से एक लोकप्रिय प्रथा है जिसे गोदना प्रथा के नाम से जाना जाता है बैगा जनजाति में गोदना प्रथा केवल शरीर को सजाने का माध्यम नहीं बल्कि यह उनकी सांस्कृतिक पहचान धार्मिक आस्था और सामाजिक प्रतिष्ठा पहचान का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है बैगा समाज को दुनिया के सबसे अधिक गोदना प्रिय समाज में से माना जाता है बैगा समुदाय से जुड़े उन सभी महिलाओं का मानना है कि सोने-चांदी के गहने और दौलत तो मृत्यु के बाद इसी लोक में छुट जाते है लेकिन शरीर पर गुदा हुआ गोदना ही एकमात्र है जो मृत्यु के बाद भी आत्मा के साथ अगले जन्म तक जाती है। बैगा लड़कियों के जीवन में उम्र के अलग-अलग पड़ाव पर शरीर के अलग-अलग हिस्सों में गोदना गुदवाना अनिवार्य माना जाता है, जिसमें पहला चरण :-

- 8 से 10 वर्ष सबसे पहले लड़की के माथे पर तीन खड़ी लाईने या त्रिकोणीय आकृति बनाई जाती। इसे उनके समाज में प्रवेश का प्रतीक माना जाता है।
- दूसरा चरण किशोरी 12 से 15 वर्ष की उम्र में लड़कियों की पीठ पर विस्तृत और बड़े पारंपरिक डिजाइन गोदवाएं जाते हैं।
- तीसरा चरण विवाह से पहले या उसके माँ बनने के बाद महिलाओं के हाथों, पैरो, छाती और जांघो पर गोदना गोदाया जाता है और इसी प्रकार पूरी तरह गोदना गुदवाने के बाद ही एक बैगा महिला का श्रृंगार पूरा माना जाता है। बैगा समाज में गोदना गोदने का काम ओझा या देवार जनजाति की महिलाएं करती है जिन्हे गोदहारिन या बदनीन कहा जाता है और यह प्रक्रिया बेहद दर्दनाक होती है इसके लिए सुइयों और बबूल के कांटो का उपयोग

किया जाता है रंग बनाने के लिए काजल धुएँ की कालिख और तिल या अरंडी की तेल मिलाकर प्राकृतिक स्याही तैयार की जाती है दर्द और सूजन को कम करने के लिए घाव पर तेल और हल्दी का लेप लगाया जाता है और गोदना में मुख्य रूप से मोर, हिरण, हाथी, बिच्छू, मछली की रीढ़ जैसे जीव जन्तुओं की आकृतियाँ बनाई जाती है। इसके अलावा सूरज, चांद, तारे, सांकल, जंजीर और टोकरी के डिजाइनों का बहुत महत्व होता है। ये सभी चित्र प्रकृति के प्रति उनके सम्मान को दर्शाते है। पारंपरिक ज्ञान का सरंक्षण एवं इनकी भाषा, संस्कृति परंपराओं को प्रकाशित करना आवश्यक है। '' **बैगा जनजाति की परंपराएँ और संस्कृति ही हमारे समृद्ध आदिवासी विरासत को सुरक्षित रखने का मार्ग है।**''

छत्तीसगढ़ी भाषा अउ हमर पहचान

भूपेन्द्र कुमार बघेल
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

छत्तीसगढ भाषा हमर छत्तीसगढ़ के माटी, संस्कृति अउ परम्परा के पहचान आय। हमर छत्तीसगढ़ के गांव-गांव म छत्तीसगढ़ी बोली बोले जाथे। ये भाषा म अपनापन मिठास अउ सरलता के भाव बसे रहिथे।

छत्तीसगढ़ी भाषा सिरिफ बात करे के माध्यम नई आय बल्कि ये हमर संस्कृति के एक महत्वपूर्ण हिस्सा आय। हमर लोकगीत, लोककथा, कहिनी, सुवा गीत, ददरिया, अउ पंथी गीत मन म छत्तीसगढ़ी भाषा के सुंदर रूप देखे बर मिलथे। हमर तीज-तिहार अउ सामाजिक कार्यक्रम मन म घलो छत्तीसगढ़ी भाषा के विशेष महत्व हवय।

छत्तीसगढ़ी भाषा म हमर गांव के जीवन खेती किसानी प्रकृति अउ लोकपरंपरा के सुंदर चित्र देखे बर मिलथे। दाई-ददा, आजी-आजा अउ बड़े बुजुर्ग मन के बोली म छत्तीसगढ़ी के मिठास साफ झलकथे। ये भाषा पीढ़ी दर पीढ़ी हमर संस्कृति ला आगे बढ़ाय के काम करथे।

आज के समय म पढ़ाई, रोजगार अउ आधुनिक जीवन के कारण लोग अलग-अलग भाषा मन के उपयोग करत है। ए समय म हमर जिम्मेदारी आय कि हमन अपन छत्तीसगढ़ी भाषा ला भुलाय नहीं। घर, समाज अउ शिक्षा के क्षेत्र म छत्तीसगढ़ी भाषा के सम्मान अउ उपयोग बढ़ाना जरूरी आय।

हमन अपन भाषा ला सम्मान देबो, दूसर मन ला घलो छत्तीसगढ़ी भाषा सिखाय बर प्रेरित करबो अउ हमर लोक संस्कृति ला बचाय रखबो। काबर की भाषा बांचे रहिथे त संस्कृति घलो बांचे रहिथे। छत्तीसगढ़ी भाषा हमर बोली भर नई, हमर माटी, हमर संस्कृति अउ हमर पहचान आय। अपन भाषा के सम्मान करना हमर सबो झन के जिम्मेदारी आय ।

सुतियापाठ : प्रकृति की गोद में आस्था का दीप

सोनकली मरावी
एम.एस.सी. रसायन शास्त्र

यह एक ऐसा पर्यटन स्थल है जहां पर विशाल बांध तथा पहाड़ी पर माता हिंगलाज देवी मंदिर है जो रहस्यमयी तथा कई गुफाओं के कारण अत्यधिक प्रसिद्ध है। यह पर्यटन स्थल सहसपुर लोहारा से लगभग 45-50 किमी दूरी पर भैंसबोड़ नामक गांव के पास स्थित है। कबीरधाम की इस धरती पर प्रकृति ने अपनी सुंदरता को जिस सहजता से बिखेरा है तथा कई मनमोहक पर्यटन स्थल और आस्था का प्रतीक है जो मन को बरबस अपनी ओर खींच लेती है। कहीं पहाड़ों में शांत गंभीरता है, कहीं वनों की हरित चादर, तो कहीं जल की निर्मल छवि। यहीं पर सुतियापाठ बांध और हिंगलाज माता मंदिर ऐसे दो पड़ाव हैं, जहाँ प्रकृति और आस्था एक-दूसरे का हाथ थामे दिखाई देते हैं।

सुतियापाठ बांध को पहली दृष्टि में देखने पर ऐसा लगता है, जैसे पहाड़ों और हरियाली ने मिलकर जल का एक विशाल दर्पण अपने बीच सजा लिया हो। शांत जलराशि पर आकाश की नीलिमा उतरती है और बादल अपनी परछाइयाँ छोड़ जाते हैं। वर्षा ऋतु में तो यह दृश्य और भी मनोहारी हो उठता है- चारों ओर धुली हुई हरियाली, बादलों की आवाजाही और जल से भरा बांध, मानो धरती ने स्वयं उत्सव का परिधान धारण कर लिया हो। सुतियापाठ केवल सौंदर्य का स्थल नही है। इसके जल में अनेक कृषकों की उम्मीदें और किसानों की मेहनत भी प्रतिबिंबित होती है। किसान के लिए पानी जीवन का दूसरा नाम है। जब जल खेतों तक पहुँचता है, तो मिट्टी में केवल फसल ही नहीं उगता, बल्कि उसके साथ परिवारों की आशाएँ, सपने और आने वाले कल की संभावनाएँ भी अंकुरित होती हैं। इस अर्थ में सुतियापाठ बांध ग्रामीण जीवन के लिए केवल जलाशय नहीं, बल्कि जीवन और आजीविका का आधार है।

एक ओर बांध का जल धरती की प्यास बुझाता है, दूसरी ओर मंदिर की आस्था मन की प्यास। एक खेतों को हरियाली देता है, दूसरा जीवन को विश्वास। एक प्रकृति की शक्ति का प्रतीक है, दूसरा मनुष्य की श्रद्धा का। पहाड़, पेड़, मिट्टी, जल और मंदिर की घंटियाँ-सब मिलकर जैसे एक ऐसी कहानी कहते हैं, जिसमें मनुष्य स्वयं को प्रकृति से अलग नहीं, बल्कि उसका एक हिस्सा महसूस करता है। आज आवश्यकता है कि इस प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत को केवल देखने योग्य स्थान न माना जाए, बल्कि इसे आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखा जाए। जल की स्वच्छता, प्रकृति का संरक्षण, मंदिर की गरिमा और स्थानीय संस्कृति का सम्मान-इन सबके साथ ही इस क्षेत्र की वास्तविक सुंदरता बनी रह सकती है।

अंततः सुतियापाठ बांध और हिंगलाज माता मंदिर को देखकर यही अनुभूति होती है कि कबीरधाम में प्रकृति केवल दिखाई नहीं देती, वह महसूस होती है सुतियापाठ का जल जहाँ धरती की कहानी कहता है, वहीं हिंगलाज माता का मंदिर मनुष्य के विश्वास की। दोनों मिलकर उस आत्मा का परिचय देते हैं, जहाँ जल में जीवन है, जंगल में सौंदर्य है और आस्था में शक्ति।

मेरी दादी माँ मेरे जीवन की प्रेरणा

अंजली
बी.ए. तृतीय वर्ष

मेरी दादी मां मेरे जीवन की सबसे खुबसूरत कहानी है, वो सिर्फ मेरी दादी नहीं, बल्कि मेरे बचपन की पहली दोस्त, पहली टीचर, और मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा है। मेरी दादी मां हमारे घर की नीव है। मां, बच्चे को जन्म देती है, पर दादी मां उस बच्चे को संस्कार देती है।

मेरी दादी माँ का व्यक्तित्व

मेरी दादी मां की उम्र लगभग 65 वर्ष है, लेकिन उनकी फुर्ती और चेहरे की चमक आज भी वैसी ही है। सुबह 5.00 बजे उठना, स्नान करके पूजा पाठ करना। उनके सफेद बाल, माथे पर बिन्दी और हमेशा मुस्कुराता चेहरा उन्हें और भी पूजनीय बनाती है। वे पढ़ी लिखी नहीं है, लेकिन जीवन का ज्ञान उनमें कूट-कूट कर भरा है। वो कभी किसी पर गुस्सा नहीं करती। उनकी साड़ी की खुशबू उनके हाथ के बने अचार और लोरी में जो प्यार है, जो दुनिया में कही नही मिलती।

बचपन की यादें और उनकी ममता

जब मैं छोटी थी, तो हर रात दादी मुझे राजा रानी, परियों की कहानियों और रामायण, महाभारत, गीता, भागवत, जैसी कहानियाँ भी सुनाया करती थी। गर्मियों की छुट्टी में वो मुझे अपने हाथों से आम का पना बनाकर पिलाती थी। जब मैं बीमार होती थी, तो मां से ज्यादा दादी मां रात-रात भर जागकर मेरी सेवा करती थी। आज भी जब मैं कॉलेज से थककर आती हूं तो वे अपने हाथों से मेरे लिए रोटी बनाती है। उनके हाथ की दाल-रोटी में जो स्वाद है, वो दुनिया के किसी होटल में नहीं है। क्योंकि रोटी में सिर्फ घी नहीं दादी का प्यार भी लगा होता है।

'' मां डांटे तो दादी का आंचल सबसे बड़ा किला बन जाता है।''

उनसे मिली सीख -

दादी मां ने मुझे कभी बड़ी-बड़ी बाते नहीं सिखाई, उन्होनें सिर्फ यह सिखाया है-

(क) हमेशा सच बोलना

(ख) दूसरों की मदद करना चाहे वो छोटा हो या बड़ा

(ग) पैसों से ज्यादा रिश्तों को महत्व देना।

वो हमेशा कहती है- ''बेटा, इंसान बड़ा अपने कपड़ों से नहीं, अपने विचारों से बनता है।''

आधुनिकता और परंपरा का संगम -

वे पुराने विचारों की है, फिर भी उन्होंने कभी मेरी पढ़ाई या मेरे फैसलों में रोक-टोक नहीं की। वे कहती है, '' जमाने के साथ चलना सीखो, पर अपनी जड़े मत छोड़ो।''

आज मैं जो कुछ भी हूं, वो सिर्फ मेरी दादी मां के संस्कारों का नतीजा है। आज के इस आधुनिक युग में जहां सब मोबाइल में व्यस्त है, मेरी दादी आज भी हमें एक साथ बैठकर भोजन करना और एक-दूसरे का सम्मान करना सिखाती है।

मेरी प्यारी दादी मां तेरी गोद में सारा जहां है, तेरी हंसी में खुशबु है, तेरे हाथों में मां जैसा प्यार है, दादी मां के आंचल में सारे दुख खो जाते है। वो बस पास में बैठ जाये तो हम फिर से बच्चे बन जाते है।

पोती रोय तो दादी का कलेजा रोय, पोती हसे तो दादी की झुर्रीयों में भी रोशनी उतर आये।

मेरी शक्ति मेरी दादी मां है। भगवान से मेरी यही प्रार्थना है कि उनका साया हमेशा हमारे परिवार पर बना रहे।

झुर्रीयों में छुपा है ज्ञान सारा,
दादी मां से रोशन घर हमारा।

मेरा छात्र जीवन और भैसाओदार जलप्रपात

द्रोपती श्याम
बी.ए. पंचम सेमेस्टर

प्रकृति की गोद में बसा घोघरा गांव और महादेव की आस्था -

छ.ग. के कबीरधाम जिले के पंडरिया विकासखंड के अंतर्गत कुई-कुकदूर से लगभग 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित घोघरा, गांव, महीडबरा ग्राम पंचायत का एक छोटा सा गाँव है। शांत वातावरण हरियाली और पहाड़ी के बीच प्राकृतिक सुंदरता से घिरा यह क्षेत्र बरसात के दिनों में विशेष रूप से प्रकृति प्रेमियों और पर्यटकों के लिए एक मनमोहक स्थल के रूप में अपनी अलग पहचान बना रहे है।

बरसात का मौसम आते ही आसपास के पहाड़ों और जंगलों में हरियाली की चादर बिछ जाती है बारिश का पानी पहाड़ियों से होकर बहती हुआ लगभग 10 मीटर की ऊंचाई पानी की कल कल आवाज और चारों ओर फैली हरियाली यहाँ आने वाले लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है बारिश के दिनों में यहाँ का प्राकृतिक दृश्य अति सुंदर और मनमोहक हो जाता है, ऐसा लगता है मानो प्रकृति ने स्वयं अपने हाथो से सजाया हो।

भैंसाओदार जलप्रपात के आसपास का वातावरण शांत और प्राकृतिक है बरसात के समय यहाँ हजारों पर्यटक घूमने और प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेने पहुँचते है। स्थानीय लोगों के लिए भी यह स्थान आकर्षण और रोजगार का माध्यम बन सकता है। यदि यहाँ पर्यटन सुविधाओं का विकास किया जाए। यह क्षेत्र पंडरिया और कबीरधाम जिले के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों में अपनी पहचान बना सकती है।

प्राकृतिक सौंदर्य की अनमोल धरोहर -

इस प्राकृतिक स्थल की खासियत केवल जलप्रपात ही नहीं है, वहाँ भगवान महादेव को समर्पित एक मंदिर भी स्थित है। जलप्रपात और मंदिर का यह संगम इस स्थान को प्राकृतिक सुंदरता के साथ -साथ धार्मिक आस्था से भी

जोड़ता है श्रद्धालु यहाँ भगवान महादेव के दर्शन करने आते है और प्रकृति के शांत वातावरण में कुछ समय बिताते है। यहां मौसम भी अपना अलग रूप दिखाता है बरसात के दिनों से जलप्रपात पूरे वेग के साथ बहता है और मौसम बदलने के साथ जलप्रपात और आस-पास के प्राकृतिक दृश्य में भी बदलाव दिखाई देती है, यही बदलता हुआ प्राकृतिक स्वरूप इस स्थान को अलग पहचान देता है।

भैसाओदार केवल एक जलप्रपात नहीं बल्कि प्रकृति, पहाड़ पानी और आस्था का संगम है आवश्यकता है कि इस पवित्र क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता को सुरक्षित रखते हुए पर्यटन की बुनियादी सुविधाओं का विकास किया जाये। स्वच्छता, सुरक्षा रास्ते और पर्यटकों के लिए आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध होने पर यहाँ पर्यटन को बढ़ावा मिल सकता है।

भैसाओदार खुबसूरती हमें यह संदेश देती है कि हमारी असली संपत्ति हमारी प्रकृति है, इसे देखने के साथ-साथ इसकी रक्षा भी हमारी जिम्मेदारी है। घोघरा गांव का यह प्राकृतिक स्थल आने-वाले समय में स्थानीय लोगों और पर्यटकों दोनों के लिए एक महत्वपूर्ण पहचान बन सकता है।

भारतीय दर्शन में स्त्री : चिंतन और योगदान

लखन
बी.ए. पंचम सेमेस्टर

भारतीय दर्शन की परंपरा जितनी प्राचीन है, उतनी ही विविध और बहुआयामी भी है। सामान्यत: जब हम भारतीय दर्शन के इतिहास की चर्चा करते हैं, तो हमारे सामने प्रमुखत: पुरूष दार्शनिकों और आचार्यों के नाम आते हैं। किंतु भारतीय ज्ञान-परंपरा को यदि समग्र दृष्टि से देखा जाए, तो उसमें स्त्रियों की उपस्थिति भी अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली रही है।

गार्गी और मैत्रेयी के दार्शनिक प्रश्नों से लेकर मीराबाई की आध्यात्मिक चेतना और सावित्रीबाई फुले के सामाजिक संघर्ष तक, भारतीय स्त्री ने ज्ञान, दर्शन, अध्यात्म और समाज-सुधार के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है।

वैदिक काल: जब स्त्री ने पूछे ब्रह्म से प्रश्न -

इनमें गार्गी विदुषी का स्थान विशेष है। वृहदारण्यक उपनिषद में गार्गी और याज्ञवल्क्य का संवाद भारतीय दार्शनिक परंपरा का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। गार्गी ने ब्रह्मण्ड की मूल सत्ता और अस्तित्व के आधार से जुड़े प्रश्न उठाए। उनके प्रश्न केवल जिज्ञासा नहीं थे, बल्कि वे अस्तित्व और ब्रह्म के मूल स्वरूप को समझने का प्रयास था।

स्त्री और आत्मज्ञान -

उपनिषदों की दार्शनिक परंपरा में आत्मा और ब्रह्म की खोज प्रमुख विषय है। मैत्रेयी का चिंतन इस बात को सामने लाता है कि मनुष्य का अंतिम लक्ष्य केवल धन और सांसारिक सुख नहीं, बल्कि आत्मज्ञान है।

बौद्ध दर्शन और स्त्री की मुक्ति-

बौद्ध परंपरा ने भी स्त्रियों को आध्यात्मिक साधनों का महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किया। महाप्रजापति गौतमी के प्रयासों से भिक्षुणी संघ की स्थापना हुई और अनके महिलाओं ने बौद्ध साधना को अपनाया। थेरीगाथा में बौद्ध भिक्षुणियों की आध्यात्मिक अनुभूतियों और जीवन-संघर्षो का सुंदर चित्रण मिलता है। इस परंपरा का एक महत्वपूर्ण संदेश यह था कि मुक्ति की खोज केवल पुरूषों तक सीमित नहीं है। स्त्री भी आध्यात्मिक ज्ञान और निर्वाण की अधिकारी है।

मध्यकाल: भक्ति में स्त्री की आवाज-

मध्यकालीन भारतीय समाज में अनेक सामाजिक और धार्मिक रूढियाँ मौजूद थीं। ऐसे समय में भक्ति आंदोलन ने स्त्रियों को अपनी आध्यात्मिक अनुभूति व्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम दिया। मीराबाई इसका सबसे प्रसिद्ध उदाहरण है। उन्होने सामाजिक बंधनों और रूढ़ियों से ऊपर उठकर कृष्ण को अपना आराध्य माना। उनकी भक्ति में व्यक्तिगत, स्वंतत्रता, प्रेम और आध्यात्मिक समर्पण का अद्भुत मेल दिखाई देता है।

दक्षिण भारत की अंडाल तथा कर्नाटक की अक्का महादेवी ने भी अपने आध्यात्मिक चिंतन और काव्य के माध्यम से स्त्री की स्वतंत्र आध्यात्मिक पहचान को मजबूत किया।

इन संत महिलाओं की वाणी में एक संदेश स्पष्ट दिखाई देता है-ईश्वर की प्राप्ति के मार्ग पर जन्म, लिंग या सामाजिक स्थिति बाधा नहीं होनी चाहिए।

आधुनिक युग: शिक्षा और समानता का संघर्श -

आधुनिक भारत में स्त्री-चिंतन का स्वर आध्यात्मिक प्रश्नों के साथ-साथ शिक्षा, स्वंतत्रता और सामाजिक समानता से भी जुड़ गया। सावित्रीबाई फुले ने स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक कार्य किया। उन्होंने शिक्षा को महिलाओं की मुक्ति और सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण साधन माना। पंडित रमाबाई ने भी महिलाओं की शिक्षा, आत्मनिर्भरता और सामाजिक अधिकारों के लिए उल्लेखनीय कार्य किया। आधुनिक भारतीय स्त्री-चिंतन ने यह प्रश्न उठाया कि यदि ज्ञान सभी मनुष्यों का अधिकार है, तो स्त्रियों को शिक्षा और स्वतंत्र चिंतन से वंचित क्यों रखा जाए?

भारतीय दर्शन में स्त्री-चिंतन के प्रमुख आयाम-

भारतीय दार्शनिक परंपरा में स्त्रियों के योगदान को कुछ प्रमुख बिंदुओं में समझा जा सकता है-

ज्ञान का अधिकार -

गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों ने यह सिद्ध किया कि स्त्री भी गंभीर दार्शनिक प्रश्नों पर विचार कर सकती है।

आत्मज्ञान और मुक्ति-

स्त्री को भी आत्मज्ञान और मोक्ष की समान आध्यात्मिक क्षमता प्राप्त है।

आध्यात्मिक स्वतंत्रता-

मीराबाई और अक्का महादेवी ने व्यक्तिगत आस्था और आध्यात्मिक स्वतंत्रता को सामाजिक बंधनों से ऊपर रखा।

सामाजिक समानता-

आधुनिक महिला चिंतकों ने शिक्षा और समान अधिकारी को सामाजिक परिवर्तन का आधार बनाया।

रूढ़ियों का विरोध-

भारतीय स्त्री-चिंतन ने समय-समय पर उन सामाजिक व्यवस्थाओं को चुनौती दी, जो महिलाओं की स्वंतत्रता को सीमित करती थीं।

निष्कर्ष-

भारतीय दर्शन में स्त्री की यात्रा केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान के लिए भी प्रेरणा है। गार्गी के प्रश्न, मैत्रेयी की जिज्ञासा, बौद्ध भिक्षुणियों की साधना, मीराबाई की भक्ति, अक्का महादेवी की स्वंतत्र चेतना और सावित्रीबाई फुले का शिक्षा- संघर्ष -ये सभी भारतीय चिंतन की समृद्ध विरासत का हिस्सा हैं।

''जहाँ प्रश्न करने की स्वंतत्रता है, वहीं दर्शन जन्म लेता है, और भारतीय परंपरा में स्त्री ने सदियों से ये प्रश्न पूछे हैं।''

दुनिया का सबसे अनमोल उपहार : माता-पिता का प्यार

संजू कुमार मरावी
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

इस सृष्टि में यदि कोई ऐसी शक्ति है जो बिना किसी शर्त और स्वार्थ के काम करती है, तो वह है माता-पिता का प्यार है। एक बच्चे के जीवन में माता-पिता का स्थान भगवान से भी ऊपर माना गया है। वे न केवल हमें इस खूबसूरत दुनिया में लाते है, बल्कि अपने खून-पसीने से सींचकर हमें इस योग्य बनाते हैं कि हम समाज में सिर उठाकर जी सकें। उनका प्यार एक ऐसा सुरक्षा कवच है जो बच्चों को हर मुसीबत से बचाता है।

माँ का प्यार: ममता और त्याग की मूरत

मां का प्यार दुनिया का सबसे पहला और सबसे गहरा एहसास है। एक माँ बच्चे को जन्म देने से पहले ही, नौ महीने तक उसे अपने गर्भ में रखती है और असहनीय दर्द सहकर उसे इस दुनिया में लाती है। बच्चे के जन्म के बाद माँ की पूरी दुनिया उसी के इर्द-गिर्द घूमने लगती है। वह खुद भूखी सो सकती है लेकिन अपने बच्चे का पेट हमेशा भरती है। बच्चों की जरा सी बीमारी या तकलीफ माँ की रातों की नींद उड़ा देती है। माँ का प्यार निश्छल और कोमल होता है। वह बच्चे की हर गलती को माफ कर देती है और उसे सही राह दिखाती है। माँ की लोरी, उसकी थपकी और उसकी गोद में जो सुकून मिलता है, वह दुनिया के किसी ऐशो-आराम में नहीं मिल सकता। माँ बच्चे की प्रथम गुरू होती है, जो उसे बोलना, चलना और अच्छे संस्कार सिखाती है।

पिता का प्यार : सुरक्षा और अनुशासन का मजबूत स्तंभ

अक्सर लोग माँ की ममता की चर्चा तो बहुत करते है, लेकिन पिता के प्यार और उनके त्याग को बयाँ करना भूल जाते हैं। पिता का प्यार बाहर से कठोर लेकिन अंदर से नारियल की तरह नरम होता है। पिता परिवार की उस मजबूत नींव की तरह होते हैं, खुद धूप में तपकर अपने बच्चों को छांव देते हैं।

एक पिता दिन-रात कड़ी मेहनत करता है ताकि वह अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा, अच्छे कपड़े और एक सुरक्षित भविष्य दे सके। पिता अपनी इच्छाओं का गला घोंटकर बच्चों की हर छोटी-बड़ी जिद पूरी करते हैं। वे बच्चे के जीवन में अनुशासन, जिम्मेदारी और संघर्षों से लड़ने का होंसला भरते हैं। जब बच्चा गिरता है, तो पिता का हाथ ही उसे दोबारा खड़े होने का संबल देता है। पिता का प्यार व्यक्त करने का तरीका अलग हो सकता है लेकिन उनकी हर डांट के पीछे बच्चे का भला छिपा होता है।

माता-पिता के प्यार की सबसे बड़ी खासियत यह कि यह पूर्णत: नि:स्वार्थ होता है। दुनिया के हर रिश्ते में कहीं न कहीं कोई उम्मीद या स्वार्थ छिपा हो सकता है, लेकिन माता-पिता अपने बच्चों से बदले में कुछ नहीं चाहते। वे बस अपने बच्चों को खुश और कामयाब देखना चाहते हैं। बच्चा चाहे कितना भी बड़ा हो जाए, कितना भी अमीर या प्रसिद्ध हो जाए, माता-पिता के लिए हमेशा वही छोटा सा नादान बच्चा ही रहता है।

हमारा कर्तव्य

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में कई बार बच्चे अपने माता-पिता के योगदान को भूल जाते है। जब माता-पिता बूढ़े हो जाते हैं, तो उन्हें पैसे या सुख-सुविधाओं से ज्यादा बच्चों के समय और सम्मान की जरूरत होती है। हमारा यह परम कर्तव्य है कि हम उनके बुढ़ापे की लाठी बनें। हमें उनकी भावनाओं का सम्मान करना चाहिए, उनसे प्यार से बात करनी चाहिए और कभी भी उन्हें अकेलापन महसूस नहीं होने देना चाहिए।

संक्षेप में कहें तो माता-पिता का प्यार ईश्वर का साक्षात रूप है। उनके बिना हमारा अस्तित्व ही असंभव है। दुनिया की हर दौलत, हर खुशी माता -पिता के चरणों की धूल के बराबर है। हमें खुद को भाग्यशाली समझना चाहिए कि हमारे पास उनका साया है। उनका सम्मान करना और उन्हें खुशी देना ही हमारे जीवन का सबसे बड़ा धर्म होना चाहिए।

बैगा लोककला और संस्कृति के सशक्त संवाहक : धनीराम कड़मिया

गजानंद पंद्राम (गज्जू)

कबीरधाम जिले के अंतिम छोर पर स्थित कुई-कुकदुर से लगभग 5 किलोमीटर की दूरी पर ग्राम पंचायत दमगढ़ के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र अपनी प्राकृतिक सुंदरता, आदिवासी संस्कृति और लोक परंपराओं के लिए जाना जाता है। इसी क्षेत्र में रहने वाले धनीराम कड़मिया बैगा जनजाति की लोककला, लोकगीत और लोकनृत्य की समृद्ध परंपरा को आगे बढ़ाने वाले कलाकार एवं शिक्षक के रूप में अपनी अलग पहचान बना चुके हैं। सीमित संसाधनों और ग्रामीण परिवेश के बावजूद उन्होंने अपनी कला और संस्कृति को निरंतर जीवित रखने तथा नई पीढ़ी तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

बैगा जनजाति मध्य भारत की प्रमुख आदिवासी जनजातियों में से एक है। इस समुदाय का जीवन प्रकृति के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। इनके लोकगीत, लोकनृत्य, पारंपरिक वाद्ययंत्र, रीति-रिवाज और लोकज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी

आगे बढ़ते रहे हैं। आधुनिकता और बदलती जीवनशैली के कारण जब कई पारंपरिक लोककलाएँ धीरे-धीरे कम होती जा रही हैं, ऐसे समय में धनीराम कड़मिया जैसे कलाकार इन परंपराओं को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

लोकगीत और लोक नृत्य के क्षेत्र में योगदान

धनीराम कड़मिया का कला के प्रति लगाव केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है। उनके लिए लोकगीत और लोकनृत्य उनकी पहचान, संस्कृति और पूर्वजों की विरासत हैं। बैगा समाज के पारंपरिक गीतों और नृत्यों में प्रकृति खेती-किसानी, सामाजिक जीवन, उत्सव और सामुदायिक जीवन को झलक दिखाई देती है।

उन्होंने लोकगीत एवं लोकनृत्य के माध्यम से बैगा संस्कृति को समाज और विभिन्न मंचों तक पहुँचाने का प्रयास किया है। दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्र में रहकर अपनी कला को साधना और उसे बड़े मंच तक पहुँचाना आसान नहीं होता, लेकिन धनीराम कड़मिया ने निरंतर प्रयास करते हुए अपनी प्रतिभा को पहचान दिलाई।

उनकी कला में बैगा समाज की पारंपरिक संवेदना और सामुदायिक जीवन की झलक देखने को मिलती है। वे लोककलाओं को केवल प्रस्तुत करने का कार्य नहीं करते, बल्कि उनके सरंक्षण और संवर्धन के प्रति भी सजग हैं।

उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ युवा पुरस्कार से सम्मानित

धनीराम कड़मिया के कला क्षेत्र में योगदान को राष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान मिली। संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली द्वारा लोकगीत एवं नृत्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए उन्हें उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ युवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। एक दूरस्थ आदिवासी क्षेत्र से निकलकर राष्ट्रीय स्तर के प्रतिष्ठित सम्मान तक पहुँचना न केवल धनीराम कड़मिया की व्यक्तिगत उपलब्धि है, बल्कि यह पूरे बैगा समाज और कबीरधाम क्षेत्र के लिए गौरव की बात है।

यह सम्मान यह दर्शाता है कि देश के दूरस्थ ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में भी प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है। आवश्यकता केवल उन्हें उचित मंच और अवसर प्रदान करने की है।

नई दुनिया द्वारा ज्योतिर्मय सम्मान-

धनीराम कड़मिया को नई दुनिया द्वारा ज्योतिर्मय समाज से भी सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक योगदान की पहचान के रूप में महत्वपूर्ण है। लोक कलाकार समाज के इतिहास और संस्कृति को जीवित रखने का कार्य करते हैं। उनकी प्रस्तुतियों के माध्यम से आने वाली पीढ़ियाँ अपने पूर्वजों की परंपराओं, जीवनशैली और सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित होती हैं। धनीराम कड़मिया का कार्य इसी सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण है।

शिक्षक के रूप में योगदान-

धनीराम कड़मिया की पहचान केवल लोक कलाकार के रूप में ही नहीं, बल्कि शिक्षक के रूप में भी है। शिक्षा और संस्कृति दोनों का समाज निर्माण में महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षक के रूप में वे ज्ञान देने के साथ-साथ नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति एवं परंपराओं से जोड़ने का प्रयास करते हैं। उनके शिक्षकीय योगदान के लिए SBI Life Insurance द्वारा

शिक्षक सम्मान भी प्रदान किया गया। यह सम्मान उनके शिक्षकीय कार्य के प्रति संस्थाओं और समाज की सराहना को दर्शाता है। एक शिक्षक जब अपनी स्थानीय संस्कृति को शिक्षा और सामाजिक जीवन से जोड़ता है, तो उसका प्रभाव केवल कक्षा तक सीमित नहीं रहता। वह बच्चों में अपनी भाषा, संस्कृति, परंपरा और समाज के प्रति सम्मान की भावना विकसित करने में भी योगदान देता है।

बैगा लोकसाहित्य के संवाहक

धनीराम कड़मिया की कहानी केवल एक कलाकार की सफलता की कहानी नहीं है। यह कबीरधाम की धरती, बैगा संस्कृति और ग्रामीण प्रतिभा की कहानी भी है। उनके सम्मान और उपलब्धियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि हमारी लोकसंस्कृति में ऐसी अनेक अनमोल प्रतिभाएँ छिपी हुई हैं, जिन्हें पहचान और प्रोत्साहन की आवश्यकता है।

लोकगीत और लोकनृत्य किसी समाज की आत्मा होती हैं। इन्हें जीवित रखना केवल कलाकार का नहीं, बल्कि पूरे समाज का दायित्व है। धनीराम कड़मिया ने अपनी कला, शिक्षा और सामाजिक योगदान के माध्यम से इस जिम्मेदारी को निभाने का प्रयास किया है। कुई-कुकदुर और दमगढ़ क्षेत्र से निकलकर राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने वाले धनीराम कड़मिया आज बैगा समाज के युवाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं। उनके सम्मान केवल उनके व्यक्तिगत गौरव के प्रतीक नहीं, बल्कि बैगा लोकसंस्कृति और कबीरधाम जिले की सांस्कृतिक पहचान के सम्मान के रूप में भी देखे जा सकते हैं।

उनकी यात्रा हमें यह सिखाती है कि अपनी जड़ों से जुड़े रहकर भी बड़े मंच तक पहुँचा जा सकता है। अपनी संस्कृति पर गर्व करना, अपनी प्रतिभा को निखारना और उसे आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाना ही हमारी सच्ची सांस्कृतिक विरासत है।

जामुन एक औषधीय फल

जया वर्मा
बी.एस.सी. पंचम सेमेस्टर

JAMUN

Common Name - jamun, Botaical Name - Syzygium Camini, Family- Myrtacia

क्षेत्र - यह सदाबहार उष्ण कटिबंधीय वृक्ष है। अन्य नाम- जावा बेर, ब्लेकबेरी, जाम्बोलन भी कहते हैं।

(पत्ते)

1. **रोग -** ब्लड शुगर लेवल को तेजी से कम करता है।

   काम - जामुन के पत्तों में ऐसी एंटी हाइपरलाइसेमिक गुण पाये जाते है जो शरीर में इंसुलिन के स्तर को बढ़ाते हैं और ब्लड शुगर को तेजी से कम करते हैं।

उपयोग - जामुन के 4-5 ताजे और मुलायम पत्तों को अच्छी तरह से धोकर चबाये। आप चाहे तो इन पत्तों को पानी में उबालकर छानकर काढ़े की तरह सुबह खाली पेट पी सकते हैं।

2. **रोग-** दांतो को मजबूत बनाना।

   काम- पत्तों में पाये जाने वाले तत्व मसूड़ों और दांतो की जड़ों को कसते हैं।

   उपयोग- जामुन के पत्तों को छांव में सुखाकर पीस ले इस पाउडर (राख) में थोड़ा सा सेंधा नमक मिलाकर दांतो पर मंजन करने पर पायरिया दूर होती है और दांत चमकते हैं।

3. **रोग-** मधुमेह, ब्लड प्रेशर के लिए उपयुक्त है।

   काम- जामुन के बीज इन बीजों में इलाजिक एसिड नामक शक्तिशाली एंटी ऑक्सीडेंट होता है। यह ब्लड प्रेशर के उतार-चढ़ाओं को नियंत्रित रखता है और मधुमेह को भी नियंत्रित रखता है।

   उपयोग - बीज को सुखाकर पीसकर पाउडर बनाकर खाने पर मधुमेह व उक्त रक्तचाप को नियंत्रित रखता है। (छाल)

4. **रोग-** वजन घटाने में मददगार।

   काम- फाइबर से भरपुर होने के कारण इसका चूर्ण खाने से पेट लंबे समय तक भरा हुआ महसूस होता है और मेटाबॉलिज्म को तेज कर वजन कम करने में मदद करता है।

   उपयोग- जामुन के छाल को सुखाकर बारीक पीसकर चूर्ण खाने से वजन कम करने में मदद करता है।

5. **रोग-** दस्त, पेचिश, और मरोड़।

   काम- छाल में पाये जाने वाले कसैले गुण पेट की मरोड़ को शांत करते हैं और आतों के इंफेक्शन को खत्म करते हैं।

   उपयोग- 5 ग्राम जामुन की सूखी छाल को 2 कप पानी में तब तक उबालें जब तक पानी आधा न रह जाए, इस काढ़े को छानकर दिन में 2 बार पीने से खूनी दस्त (आंव) और पेचिश में तुरंत आराम मिलता है।

6. **रोग-** त्वचा रोग व रक्त शोधन

   काम- यह खून को साफ करने का काम करती है जिससे चेहरे पर होने वाले कील-मुंहासे और फोड़े-फुसियां अंदर से ठीक होती है।

   उपयोग- छाल का पेस्ट बनाकर त्वचा के प्रभावित हिस्से या सूजन वाली जगह पर लगाने से आराम मिलता है।

थोड़ा पढ़ना-ज्यादा सोचना, कम बोलना-ज्यादा सुनना बुद्धिमान् बनने के उपाय है ।

- महात्मा कबीर

प्रकृति और आस्था का सुंदर संगम : चरण तीर्थ

सरजू यदु
एम.एस.सी. रसायन शास्त्र चतुर्थ सेमेस्टर

भूमिका -

हमारे आस-पास कई ऐसे प्राकृतिक और धार्मिक स्थल है, जिनका अपना विशेष महत्व है। ऐसा ही एक प्रसिद्ध स्थान चरणतीर्थ है। यह घने जंगलों और पहाड़ियों के बीच में स्थित हैं। यहां कि प्राकृतिक सुंदरता और धार्मिक वातावरण लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

चरणतीर्थ की विशेशता -

चरणतीर्थ कबीरधाम जिला, बोडला ब्लाक, तरेगांव (जंगल) से लगभग 15 किलोमीटर की दूरी पर, देवगांव मध्यप्रदेश की सीमा जंगल क्षेत्र में स्थित है। यह मैकल पर्वत श्रृंखला के सुंदर जंगलों से घिरा हुआ है। यहाँ चारों ओर हरियाली, पहाड़ और शांत प्राकृतिक वातावरण देखने को मिलता है। चरणतीर्थ में प्रतिवर्ष 15 जनवरी को मकर संक्रांति के पावन पर्व पर मेला आयोजित होता है। चरणतीर्थ की सबसे प्रमुख विशेषता यहाँ स्थित प्राकृतिक गुफा है तो लगभग 6 फीट ऊंची है और वहाँ तक पहुँचने के लिए लगभग 355 सीढ़ियाँ हैं। स्थानीय धार्मिक मान्यता के अनुसार गुफा में एक चट्टान पर भगवान श्रीराम के चरण-चिन्ह हैं। इसी कारण इस स्थान को चरणतीर्थ कहा जाता है।

गुफा और जलकुंड -

चरणतीर्थ की गुफा के सामने एक कुंड स्थित है, जिसे नर्मदा कुंड कहा जाता है। गुफा से मिलने वाला जल मंडला की नर्मदा नदी से जुड़ा हुआ है। चरणतीर्थ से लगभग 2 किलोमीटर की दूरी पर कपिल धारा जलप्रपात स्थित है। यह स्थान और भी रहस्यमय एवं धार्मिक रूप से महत्पपूर्ण बनाती है।

धार्मिक महत्व -

चरणतीर्थ से भगवान श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण से जुड़ी कई स्थानीय मान्यताएँ हैं। गुफा के ऊपर स्थित एक स्थान को लक्ष्मण मंच कहा जाता है, जहाँ श्रीराम, माता सीता, लक्ष्मण और हनुमानजी की प्राचीन मूर्तियों का उल्लेख मिलता है।

प्राकृतिक सुंदरता -

चरणतीर्थ के चारों ओर घना जंगल और पहाड़ी क्षेत्र इसकी सुंदरता को बढ़ाते हैं। यहाँ का शांत वातावरण मन को बहुत अच्छा लगता है। जंगल, पहाड़ प्राकृतिक गुफा और जलकुंड मिलकर इस स्थान को विशेष बनाते हैं।

निष्कर्ष-

मेरे लिए चरणतीर्थ केवल एक धार्मिक स्थल नहीं बल्कि प्राकृतिक, आस्था और संस्कृति का सुंदर संगम है। तरेगांव (जंगल)से इसकी निकटता और आस-पास का प्राकृतिक वातावरण इसे और अधिक आकर्षक बनाता है।

Medicinal Value of Herbal Plants Found in Kabirdham District, Chhattisgarh

Dr.Akhilesh Chandra Verma
Professor - Chemistry

I. A FOREST THAT HEALS

Long before synthetic medicine, the forest was civilisation's first pharmacy — nowhere more alive than in Kabirdham, where the Maikal hills cradle sacred groves that the Gond, Baiga, and Halba have tended, generation upon generation, as living archives of healing knowledge [1]. India already holds nearly eight thousand documented medicinal species, rooted in the Charak and SushrutaSamhitas, and the WHO notes that plant remedies remain rural India's first recourse. Within Kabirdham's fifty-seven sacred groves, this quiet green inheritance endures, finding fresh corroboration in modern pharmacological science [1], [2].

II. THE STUDY AREA

Kabirdham, once known as Kawardha, spans about 4,447 sq. km within the Maikal range of the Satpura hills, bordered by Madhya Pradesh's Dindori and Balaghat districts [1], [2]. Its fifty-seven sacred groves, spread across roughly 185 acres, are forest islands where medicinal plant populations have persisted with comparatively little disturbance [1].

III. MEDICINALLY IMPORTANT PLANTS OF KABIRDHAM DISTRICT

Table I presents twenty medicinally important species of the district across sixteen plant families.

12	Botanical Name	Part Used	Uses	Significance
Giloy	*Tinosporacordifolia*	Stem	Fever, Diabetes, Arthritis	Classical Rasayana herb
Ashwagandha	*Withaniasomnifera*	Root	Anxiety, Fatigue	Rejuvenative tonic
Tulsi	*Ocimumtenuiflorum*	Leaves	Cold, Cough, Asthma	Respiratory formulations
Neem	*Azadirachtaindica*	Leaves, Bark	Skin disease, Wounds	Dermatological medicine
Amla	*Phyllanthusemblica*	Fruit	Digestive, Immunity	Chyawanprash, Triphala
Harra	*Terminalia chebula*	Fruit	Constipation	Triphala
Bahera	*Terminalia bellirica*	Fruit	Respiratory disorders	Triphala
Bael	*Aegle marmelos*	Fruit, Leaves	Diarrhoea, Dysentery	Digestive medicine
Arjuna	*Terminalia arjuna*	Bark	Heart disease, Hypertension	Cardiac formulations
Kalmegh	*Andrographispaniculata*	Whole plant	Liver disorders, Fever	Liver tonics
Shatavari	*Asparagus racemosus*	Root	Female reproductive health	Women's healthcare
BhuiAmla	*Phyllanthusniruri*	Whole plant	Jaundice, Kidney stones	Hepatic medicine
Gudmar	*Gymnemasylvestre*	Leaves	Diabetes mellitus	Antidiabetic formulations
Punarnava	*Boerhaviadiffusa*	Root	Kidney disorders, Oedema	Renal formulations
Safed Musli	*Chlorophytumborivilianum*	Root	General weakness	Nutraceuticals

12	Botanical Name	Part Used	Uses	Significance
Mahua	*Madhucalongifolia*	Flowers, Seeds	Weakness, Skin ailments	Tribal medicine
Tendu	*Diospyrosmelanoxylon*	Leaves, Fruits	Diarrhoea, Wound healing	Folk medicine
Bhringraj	*Ecliptaprostrata*	Whole plant	Liver disorders, Hair health	Hair oils, Liver tonics
Chironji	*Buchananialanzan*	Seeds	General debility	Nutraceutical
Bija	*Pterocarpus marsupium*	Heartwood	Diabetes, Inflammation	Ayurvedic antidiabetic drugs

Table I. Medicinally important plants of Kabirdham district.

Fig. 1. Photographic Depiction of Medicinally Important Plants of Kabirdham District



IV. PHARMACOGNOSTIC HIGHLIGHTS OF MAJOR SPECIES

Giloy&Kalmegh — Guardians of Fever

When fever grips a Kabirdham home, two forest allies answer the call. Giloy'sclerodanediterpenoids and magnoflorine awaken the body's own defences against dengue, diabetes, and arthritis [3]; Kalmegh's bitter andrographolide restores a tired liver and calms fever, earning its old title of febrifuge.

Ashwagandha&Shatavari — Roots of Resilience

Beneath the forest floor grow two roots Ayurveda has long trusted to steady the body through life's

harder seasons. Ashwagandha'swithanolides calm a racing stress axis, easing anxiety and fatigue [4]; Shatavari's steroidal saponins nurture and strengthen women through motherhood and beyond.

Tulsi&Neem — Everyday Healers of the Home

No Kabirdham courtyard is complete without Tulsi and Neem. Tulsi'seugenol-rich leaves soothe cough, cold, and asthma with quiet antimicrobial grace [5]; Neem'sazadirachtin and nimbin make it rural India's living pharmacy — a first response to wounds and skin disease.

Amla&Bael — Fruits of Forest Abundance

Two fruits hold together the district's oldest formulations. Amla, laden with vitamin C, gallic acid, and emblicanin, anchors Chyawanprash and Triphala while protecting digestion and immunity [6]; Bael'smarmelosin soothes dysentery, though its growing rarity in the wild is a quiet warning.

Arjuna & Gudmar — Keepers of Heart and Sugar

For two of the district's heaviest burdens — heart disease and diabetes — the forest offers its own answer. Arjuna'sarjunolic acid strengthens the heart muscle [7], while Gudmar, true to its Hindi name "sugar destroyer," slows glucose absorption and coaxes the pancreas back to life.

KEY FINDINGS AT A GLANCE

Sixteen plant families and twenty species make Kabirdham one of central India's richest tribal pharmacopoeias — with 200+ bioactive compounds from Giloy alone, fifty-seven sacred groves guarding roughly 185 acres of wild flora, and four species feeding directly into classical formulations such as Triphala and Chyawanprash.

The plants discussed above illustrate a close correspondence between long-standing tribal usage in Kabirdham and pharmacological properties confirmed through modern research — evidence enough to regard this ethnomedicinal knowledge as empirically tested practice, not folklore. Yet the same surveys that document this wealth also record its erosion: species such as Bael and Harra are thinning under unregulated harvest. Promoting herbal home gardens, cultivating high-demand species outside forest tracts, and protecting the fifty-seven sacred groves would relieve this pressure while preserving the tribal knowledge tied to them.

CONCLUSION

Kabirdham's forests stand as a living pharmacy — sixteen plant families whose traditional wisdom now finds firm corroboration in modern science. Protecting its sacred groves and cultivating its most-prized herbs will keep this green inheritance, and the knowledge that guards it, alive for generations to come.

भारतीय संस्कृति

चंद्रशेखर सिंह राजपूत
सहायक प्राध्यापक - हिन्दी

संस्कृता परिष्कृता परिशुद्धा व्याकरणसम्बन्धिदोषादिरहिता भाषा संस्कृतभाषेति निगद्यते।

सर्वविधदोषशून्यत्वादियं देवभाषा, गीर्वाणगी: इत्यादिभि: शब्दै: सम्बोध्यते। अतोऽन्या भाषा प्राकृत भाषा पदवीं प्राप्ता।

प्राचीन संस्कृत वाड्मयं अतीव महत्वशालि सम्पन्नतरं मनोहरं संस्कृति संवर्द्धकम् चास्ति। संस्कृतभाषायां अस्माकं सम्पूर्णं वैदिकं लौकिकं च वाड्मयं विहितं वर्तते। इयं संस्कृतभाषा महर्षिभि: अन्वाख्यातास्ति।

उक्तम् चापि -

'' **संस्कृतं नाम दैवीवागन्वाऽख्याता महर्षिभि:**''

भारतीय संस्कृति: सत्यवादितां प्रियवादितां च बहुलरूपेण प्रशंसति। संस्कृत साहित्ये मधुरसत्यवाण्या: अत्यधिकं अस्ति। विद्वद्भि: अनकेश: कथितम्-

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात्सत्यम्प्रियम।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष: धर्म: सनातन:।।

सत्य अहिंसा विश्वबन्धुत्वादीनि संस्कृति तत्वानि। सर्वप्रथमं वेदेभ्य: अन्येभ्य: च संस्कृत साहित्य ग्रन्थेभ्य: सन्ति। वेदेषु मनुष्याणां कर्तव्याकर्तव्यस्य सम्यकतया निर्धारणं वर्तते। वेदानां व्याख्यानभूता ब्राम्हणग्रन्था: सन्ति। तदन्तरम् आध्यात्मविषयप्रतिपादिका उपनिषद: सन्ति, याषां महिमा पाश्चात्यैरपि नि:संकोचं गीयते।

भारतीय संस्कृति संस्कृतभाषामेव वर्णितास्ति इति पूर्वमेव उक्तम्- या भारतीया संस्कृति: उत्तम संस्कारसम्पन्ना सदाचारपूता सा तु संस्कृते एव अस्ति। विश्वबन्धुत्वस्य भावनायां संस्कृत एवं उद्भावयति।

श्लोकोऽयं प्रसिद्धतम: -

अयं निज: परोवेति गणना च लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

सर्वभूत हितमयी भावना मानव संस्कृते एव निहितास्ति यथा-

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभाग्भवेत् ।।

आगर से सागर तक : जैव-विविधता, जीवन चक्र और ज्ञान चेतना का अनवरत प्रवाह

रामरती निषाद
सहायक प्राध्यापक - प्राणीशास्त्र

प्रस्तावना- प्रकृति का पारिस्थितिकी तंत्र और जीवन-दर्शन -

प्राणीशास्त्र(Zoology) का अध्ययन हमें सिखाता है कि प्रकृति में कोई भी जीवन एकाकी नहीं है, सब कुछ एक वृहद पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem)का हिस्सा है। जल केवल एक भौतिक यौगिक (H_2O) नहीं, बल्कि जीवन की उत्पति और विकास का मुख्य आधार है। कबीरधाम जिले के पंडरिया वनांचल की मैकल पर्वत श्रृंखलाओं से फूटने वाली 'आगर नदी' केवल एक जलधारा नहीं है, बल्कि हमारी समृद्ध जैव-विविधता और जीवन चक्र की संवाहक है।

पंडरिया की ऊँचाइयों से उद्मित होकर, ग्रामीण वनांचल को सिंचित करती हुई यह नही ग्राम परसियां के समीप मनियारी नदी में एकाकार होती है, और आगे शिवनाथ तथा महानदी के माध्यम से अनंत महासागर में विलीन हो जाती है। शासकीय नवीन महाविद्यालय कुई-कुकदुर की वार्षिक पत्रिका हेतु 'आगर से सागर तक ' का यह विचार प्राणिशास्त्र के दृष्टिकोण से जीवन के उद्विकास (Evolution), अनुकूलन (Adaptation) और अनंत ज्ञान-चेतना का एक अनुपम रूपक है।

परंपरा और आधुनिकता का संतुलन :

अपनी समृद्ध भारतीय ज्ञान परंपरा और स्थानीय जैव- प्रजातियों की समझ को बनाए रखते हुए, विद्यार्थी आधुनिक ई-संसाधनों (E-Resources) और डिजिटल तकनीकों में दक्षता हासिल कर रहे हैं।

परसियां का संगमः एकाकी अस्तित्व से बृहद् तंत्र में विलय-

ग्राम परसियां के समीप जब आगर नदी मनियारी में विलीन होती है, तो यह जलधारा का अंत नहीं, बल्कि उसकी पहचान का एक विशाल विस्तार है। प्राणिशास्त्रीय भाषा में कहें तो यह एक सूक्ष्म जीव का पूरे पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem) की मुख्यधारा से जुड़ने जैसा है।

यह संगम हमारे विद्यार्थियों को यह संदेश देता है कि कुई-कुकदुर के वनांचल से निकला उनका ज्ञान अब सीमित नहीं है। उच्च शिक्षा, शोध-दृष्टिकोण और नैतिक मूल्यों के बल पर वे अपने क्षेत्रीय आवरण को लांघकर राज्य और राष्ट्र की मुख्यधारा में अपनी विशिष्ट पहचान बना रहे हैं।

महासागर में समर्पणः अनन्त ज्ञान और जीवन की सार्थकता -

मनियारी से शिवनाथ और महानदी का संबल पाकर जब यह धारा सागर में मिलती है, तो वह अपनी संकीर्णता को त्यागकर स्वंय महासागर का रूप धारण कर लेती है। जीवन की उत्पत्ति भी इसी सागर से हुई थी और ज्ञान की परिणति भी इसी असीम सागर में होती है।

एक प्राध्यापक के रूप में मेरा ध्येय यही है कि इस महाविद्यालय से अर्जित वैज्ञानिक दृष्टिकोण, अनुशासन और मानवीय मूल्य हमारे विद्यार्थियों को उच्च अनुसंधानों, प्रशासनिक सेवाओं, शिक्षा और राष्ट्रीय-अंतराष्ट्रीय मंचों के 'ज्ञान-सागर' तक पहुँचाए।

उपसंहार -

'' जिस प्रकार जल की एक छोटी सी धारा निरंतर बहकर महासागर बन जाती है, उसी प्रकार निरंतर अध्ययन और संकल्प से वनांचल का हर विद्यार्थी ज्ञान का सागर बन सकता है।''

'आगर से सागर तक' की यह यात्रा केवल भूगोल या नदी का बहाव नहीं, बल्कि हमारे विद्यार्थियों की बौद्धिक, सांस्कृतिक और आत्मिक पदयात्रा है। शासकीय नवीन महाविद्यालय कुई-कुकदुर की यह पत्रिका हमारे विद्यार्थियों की इसी जीवंत ऊर्जा का का प्रतिबिंब है। आगर नदी की तरह हमारे विद्यार्थियों की ज्ञान-गंगा अविरल बहती रहे और वे सफलता के अंनत सागर को स्पर्श कर राष्ट्र-निर्माण में अपना सर्वोत्कृष्ट योगदान दें।

आगर से सागर तक : नदी, संस्कृति, समाज और सभ्यता की यात्रा

डॉ. रामभरोस साहू
अतिथि व्याख्याता - समाजशास्त्र

मानव सभ्यता के विकास का इतिहास जलस्त्रोतों के इतिहास से गहराई से जुड़ा है। प्राचीन काल से ही मनुष्य ने नदियों के किनारे अपनी बस्तियाँ, कृषि व व्यापार विकसित किया और सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं का निर्माण किया। नदी ने मनुष्य को केवल जल उपलब्ध नहीं कराया, बल्कि भोजन, उपजाऊ भूमि, परिवहन और आर्थिक गतिविधियों के लिए आधार भी प्रदान किया।

मानव सभ्यता के विकास का इतिहास जलस्त्रोंतों के इतिहास से गहराई से जुड़ा हुआ है। प्राचीन काल से ही मनुष्य ने नदियों के किनारे अपनी बस्तियाँ बसाई, कृषि प्रारंभ की, व्यापार विकसित किया और सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं का निर्माण।

नदी-घाटियां प्राकृतिक, पारिस्थितिक तथा सांस्कृतिक संसाधनों का भंडार होती हैं इस दृष्टि से नदी को समझना केवल भूगोल का विषय नहीं है: यह समाजशास्त्र, इतिहास, अर्थशास्त्र, पर्यावरण अध्ययन और संस्कृति अध्ययन से भी जुड़ा हुआ एक समग्र विषय है। नदी मानव जीवन की वह धुरी है, जिसके बिना सामाजिक विकास की कल्पना अधूरी है।

आगर से सागर तक - नदी की यात्रा

नदी का जन्म एक छोटी जलधारा के रूप में होता है। पहाड़ों, पठारों और वनों से निकलने वाली छोटी-छोटी धाराएँ एक-दूसरे से मिलकर नदी का निर्माण करती हैं। यही प्रक्रिया सामाजिक जीवन में भी दिखाई देती है- व्यक्ति

परिवार से जुड़ता है, परिवार समुदाय से और समुदाय व्यापक समाज का निर्माण करता है।

छत्तीसगढ़ की महानदी इस प्राकृतिक प्रक्रिया का उत्कृष्ट उदाहरण है। अध्ययन के अनुसार महानदी का उद्गम सिहावा पहाड़ी के निकट फर्सियाँ गांव से लगभग 6 किलोमीटर दूर माना जाता है। यह नदी 851 किलोमीटर की यात्रा करती हुई बंगाल की खाड़ी में मिलती है तथा छत्तीगसढ में लगभग 357 किलोमीटर प्रवाहित होती है इस प्रकार'' आगर से सागर तक'' केवल एक नदी की यात्रा नहीं, बल्कि स्थानीय से वैश्विक और छोटे से विराट बनने की यात्रा का प्रतीक है।

नदी का जन्म एक छोटी जलधारा के रूप में होता है। पहाड़ों, पठारों और वनों से निकलने वाली छोटी-छोटी धाराएँ, वर्षा जल, झरनों और भू-जल के रिसाव से बनती हैं। ये धाराएँ धीरे-धीरे एक-दूसरे से मिलकर एक संगठित प्रवाह का रूप लेती हैं, जिसे हम नदी कहते हैं। यह प्रक्रिया प्राकृतिक एकता और समन्वय का प्रतीक है।

नदी और कृषि अर्थव्यवस्था

छत्तीसगढ़ की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में जल और कृषि का सबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है। महानदी बेसिन में सिंचाई परियोजनाओं और जलाशयों ने कृषि उत्पादन की संभावनाओं को बढ़ाया है। उपलब्ध अध्ययन के अनुसार छत्तीसगढ़ में महानदी बेसिन के अंतर्गत अने सिंचाई परियोजनाएं है और इनका उद्देश्य कृषि योग्य भूमि को सिंचाई उपलब्ध कराना है। नदी केवल प्राकृतिक संसाधन ही नहीं बल्कि वह ग्रामीण अर्थव्यवस्था की आधारभूत संरचना का हिस्सा है। किसान की फसल, ग्रामीण रोजगार खाद्य सुरक्षा और स्थानीय बाजार सभी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जल की उपलब्धता से प्रभावित होते हैं। छत्तीसगढ़ की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में जल और कृषि का सबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, नदी आधारित कृषि ने पारंपरिक कृषि पद्धतियों को भी विकसित किया है, जिसमें मौसमी चक्र, फसल विविधता और जल प्रबंधन की स्थानीय तकनीकें शामिल हैं।

नदी और सभ्यता

नदी के किनारे केवल गांव ही नहीं बल्कि समय के साथ नगर, व्यापारिक केन्द्र, धार्मिक स्थल और राजनीतिक सत्ता के केन्द्र भी विकसित होते हैं। सिरपुर इसका उल्लेखनीय उदाहरण है। पुरातात्विक स्त्रोतों के अनुसार सिरपुर महानदी के दाहिने तट पर स्थित प्राचीन नगर था, जहाँ गुप्तकालीन और उत्तर गुप्तकालीन सभ्यता के महत्वपूर्ण प्रमाण मिलते हैं इस प्रकार नदी सभ्यता के विकास में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार की भूमिका निभाती है। वह मनुष्य को संसाधन देती है और मनुष्य उन संसाधनों के आधार पर सामाजिक संस्थाओं, धार्मिक संरचनाओं, कला, स्थापत्य और प्रशासनिक व्यवस्थाओं का निर्माण करता है।

नदी और जनजातीय जीवन

छत्तीसगढ़ का जनजातीय जीवन प्रकति के साथ गहरे सबंध पर आधारित रहा है। जंगल, पहाड़ भूमि और जलस्त्रोत उनके पारंपरिक जीवन और आजीविका के महत्वपूर्ण आधार हैं। स्थानीय समुदायों ने पीढ़ियों से जल, जंगल और भूमि से सबंधित पारंपरिक ज्ञान विकसित किया है।

इस संदर्भ में नदी सरंक्षण केवल जल बचाने का प्रश्न नहीं है। यह स्थानीय समुदायों की आजीविका, लोकज्ञान और सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखने का भी प्रश्न हैं। आधुनिक विकास की प्रक्रिया में इस पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक जल-प्रबंधन के साथ जोड़ना आवश्यक है। आधुनिक विकास की प्रक्रिया में इस पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक जल-प्रबंधन के साथ जोड़ना अत्यंत आवश्यक है।

विकास और नदी की बदलती भूमिका

आधुनिक काल में नदियों का उपयोग सिंचाई, पेयजल, जलविद्युत, उद्योग और नगरीय विकास के लिए तेजी से बढ़ा है। महानदी बेसिन में बाँध, जलाशय और सिंचाई परियोजनाएँ विकसित हुई हैं। उपलब्ध शोध महानदी बेसिन में जल उपयोग, भूमि उपयोग परिवर्तन, जैव-विविधता, प्रदूषण और मानव निर्मित सरंचनाओं के व्यापक प्रभावों को रेखांकित करता है। लेकिन यदि विकास नदी के प्राकृतिक प्रवाह और पारिस्थितिकी को नष्ट करता है तो उसका दीर्घकालीन प्रभाव समाज पर भी पड़ता है। नदी में प्रदूषण, रेत का अत्यधिक उत्खनन, तटों पर अतिक्रमण और जलग्रहण क्षेत्रों का क्षरण भविष्य के लिए गंभीर चुनौतियां हैं।

निष्कर्ष

''आगर से सागर तक '' वास्तव में प्रकृति, समाज, संस्कृति और सभ्यता की एक संयुक्त यात्रा है। नदी का उद्‌गम जितना छोटा होता है, उसका सामाजिक प्रभाव उतना ही व्यापक हो सकता है। रास्ता में मिलने वाली प्रत्येक धारा उसे समृद्ध करती है और अंतत: वह सागर का हिस्सा बन जाती है।

छत्तीसगढ़ी की महानदी इस यात्रा की सशक्त प्रतीक है। इसके तटों ने कृषि को आधार दिया, बस्तियों को जीवन दिया, संस्कृति को पहचान दी और ऐतिहासिक नगरों को विकसित होने का अवसर दिया। अत: नदी को केवल जल की धारा मानना उसके व्यापक सामाजिक अर्थ को सीमित करना होगा। '' आगर से सागर तक'' वास्तव में प्रकृति, समाज, संस्कृति और सभ्यता की एक संयुक्त और सतत यात्रा है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि विकास और नदी के बीच संघर्ष न हो, बल्कि सह-अस्तित्व स्थापित हो। नदी बचेगी तो खेत बचेंगे तो गांव बचेंगे, गांव बचेंगे तो संस्कृति बचेगी और संस्कृति बचेगी तो सभ्यता का प्रवाह निरंतर बना रहेगा। अर्थात्- '' नदी केवल बहता हुआ जल नहीं, बल्कि समय समाज और सभ्यता की बहती हुई स्मृति है।''

जीत लो हर लम्हा, बीत जाने से पहले,
लौट कर यादें आती हैं वक्त नहीं।

छत्तीसगढ़ जनजातीय संस्कृति एवं पर्यावरण संरक्षण : एक भौगोलिक परिप्रेक्ष्य

डॉ. कौसर नाजमी
अतिथि व्याख्याता - भूगोल

छत्तीसगढ़ राज्य भारत का एक ऐसा राज्य है, जो अपनी जैव-विविधताओं, जनजातीय संस्कृति परंपराएं एवं विशिष्ट भौगोलिक बनावट के लिए देश-विदेश में प्रसिद्ध है। इसका गठन 1 नवम्बर 2000 को मध्यप्रदेश से अलग होकर बना है। यह राज्य 17° 46' उत्तरी अक्षांश से 24° 5' उत्तरी अक्षांश और 80° 15' पूर्वी देशांतर से 84° 24' पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। जिसका क्षेत्रफल 1,35,192 वर्ग किमी. तथा 2011 की जनगणना के अनुसार 2.55 करोड़ जनसंख्या निवास करती है। राज्य के कुल क्षेत्रफल का लगभग 44 प्रतिशत हिस्सा वनों से आच्छादित है और यहां की आबादी का 30.60 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति तथा 12.82 प्रतिशत अनुसूचित जाति निवास करती है। छत्तीसगढ़ की जनजातीय संस्कृति (जैसे-गोंड़, बैगा, उरांव, कोरवा, मड़िया, मुरिया, हल्बा एवं कमार आदि प्रमुख है।)उनकी संस्कृति, पारंपरिक जीवन शैली एवं धार्मिक मान्यताएं सीमित नहीं है बल्कि यह सीधे तौर पर यहां की भौगोलिक परिस्थितियों तथा पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी हुई है।

छत्तीसगढ़ की जनजातियों का भौगोलिक स्थिति एवं बसाहट -

यहां की अधिकतर जनजातीय जनसंख्या मुख्यत: वनाच्छादित क्षेत्रों, पठारी क्षेत्रों, एवं पहाड़ी क्षेत्रों में केंद्रित है। यहां की प्रमुख जनजातियां जैसे- गोंड़, मुरिया, हल्बा, धुरवा तथा माडिया आदि प्रमुख जनजातियां बस्तर, सुकमा,बीजापुर, दंतेवाड़ा, नारायणपुर तथा कोड़ागांव में निवास करते है। वहीं उरांव, कोरवा, गोड़, पहाड़ी एवं पडो समुदाय के लोग सरगुजा, सूरजपुर, बलरामपुर, कोरिया और मनेन्द्रगढ़ क्षेत्रों में पाई जाती है तथा उरांव, विरहोर, पहाड़ी, कोरवा, गोड़ उत्तरी पूर्वी क्षेत्र जैसे-जशपुर, कोरबा के आस-पास की पहाड़ियों एवं घने वन क्षेत्रों में बसाहट है। मैदानी क्षेत्रों में जनजातीय जनसंख्या बहुत कम अर्थात् अपेक्षाकृत कम सघन पई जाती है। यहां की भौगोलिक परिस्थितियां, पहाड़ी,पठार एवं घने जंगल इन जनजातियों की रक्षा सदियों से करते आए हैं जिससे उनके मूल संस्कृति एवं परंपराएं वर्तमान समय में भी सुरक्षित है।

जनजातीय संस्कृति एवं पर्यावरण संरक्षण का भौगोलिक सबंध -

यहां की जनजातीय समुदाय प्रकृति को ही पूज्यनीय मानते है। उनके लिए प्राकृतिक वस्तु को संसाधन नहीं मानते बल्कि उनका पूरा जीवन आकाश, धरती, जल, नदियां एवं वनों की इर्द-गिर्द ही घूमता है इसलिए उनकी संस्कृति परंपराएं तथा सामाजिक व्यवस्था पर्यावरण संरक्षण की अनुरूप विकसित हुई हैं और उनकी आवास, भोजन, वस्त्र,कृषि, रोजगार और दैनिक जीवन स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है वे विभिन्न पौधों का उपयोग भोजन, औषधि, ईधन और घरेलू आवश्यकताओं के लिए करते हैं। इस प्रकार उनका पारंपरिक ज्ञान जैव विविधता के संरक्षण में योगदान देते हैं।

पर्यावरण संरक्षण में जनजातीय लोक संस्कृति एवं विश्वास-

जनजातीय समुदायों की धार्मिक मान्यताएं तथा लोक विश्वास प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की सबसे मजबूत स्तंभ है। जनजातियों के क्षेत्रों में वनों के एक हिस्से को ''देवगुड़ी/महामाया/माता की थान'' के रूप में संरक्षित किया जाता है। इन स्थानों पर पेड़ों को काटना बिल्कुल ही वर्जित होता है। इस कारण लोगों में धार्मिक भय और श्रद्धा के कारण सदियों से जैव-विविधता का संरक्षण होता आ रहा है। ये उन जीव और पेड़-पौधें का भी पूजा करते हैं तथा उसे नुकसान पहुंचाने से बचाते हैं जिससे परिस्थिति की संतुलन बना रहता है।

जनजातियों का वर्तमान चुनौतियां एवं संकट-

आधुनिक विकास, शहरीकरण, जलवायु परिवर्तन, खनन तथा औद्योगिकरण ने जनजातियों की संस्कृति तथा पर्यावरण संरक्षण पर लगातार दबाव बढ़ता ही जा रहा है। वनों के व्यावसायिक दोहन, खनिजों का उत्खनन एवं विकास की अनेक परियोजनाओं के कारण जनजातीय समुदायों की पारंपरिक जीवन शैली को प्रभावित किया है। वन अधिकार अधिनियम के क्रियान्वयन में भी संस्थागत चुनौतियां विद्यमान है।

निष्कर्ष-

छत्तीसगढ़ की भौगोलिक संरचना, घने वन क्षेत्र, पहाड़, पठार, नदियां विविध संस्कृतियों ने यहां की संस्कृति और पर्यावरण को आकार दिया है। जो जनजातीय संस्कृति एवं पर्यावरण का सबंध अन्योन्याश्रित है जिसमें एक के बिना दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती है। वर्तमान समय में जब पूरा विश्व '' सतत विकास (sustainable develoment) एवं जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं से जूझ रही है तब छत्तीसगढ़ की जनजातीय समुदाय के जीवन शैली हमें यह सिखाती है कि प्राकृतिक के साथ कैसे तालमेल बिठाकर जीवन यापन किया जाए। जिससे पर्यावरण का सरंक्षण हो सके। अत: पर्यावरण संरक्षण के लिए यह आवश्यक है कि जनजातीय अधिकारों का कड़ाई से पालन किया जाए तथा विकास की विभिन्न योजनाओं में उनके पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को भी शामिल किया जाए।

The Significance of Neem, Tulsi, Giloy and Ashwagandha in the Tradtional Knowledge of Chhattisgarh

Riya Thakur
Guest Lecturer - Dept. of Botany

ABSTRACT -

Chhattisgarh is well known for its rich biodiversity, forest wealth and traditional folk knowledge, For generations, the rural and tribal communities here have utilized various locally available plants in domestic and traditional healthcare practices. **Neem, Tulsi, Giloy and Ashwagandha** are among the prominent plants that hold special significance in Indian Ayurveda and traditional knowledge systems. The importance of these plants is not limited to their medicinal uses alone; they are deeply interconnected with our culture, nature and way of life.

KEY BOTANICAL INSIGHTS

Plant Name	Scientific Name	Key Traditional Uses & Cultural Significance
Neem	Azadirachta indica	Versatile evergreen tree used for hygiene, skin care and domestic applications. Twigs are traditionally used as natural toothfrushes (datum).
Tulsi	Ocimum tenuiflorum	Culturally sacred plant found in most households. Widely used in home remedies for common colds, coughs and seasonal isssues.
Giloy	Tinospora cordifolia	Known as Guduchi in Ayurveda; a climbing vine whose stem is valued for general wellness and maintaining body strength.
Ashwagandha	Withania somnifera	Renowned Ayurvedic herb whose root is used traditionally for bodily strength, vitality and overall health maintenance.

SIGNIFICANCE OF TRADITIONAL KNOWLEDGE IN CHHATTISGARH

The rural and tribal communities of Chhattisgarh share a deep-rooted relationship with nature and flora Based on generations of practical experience, local populations developed extensive knowledge regarding plant applications and passed it down through ora traditions. Neem, Tulsi, Giloy and Ashwagandha represent prime examples of this rich heritage.

However, modern lifestyles and growing pressure on natural resources are causing this traditional botanical knowledge to tradually diminish. Therefore, several key actions are necessary:

- **Conservation**: Protecting native medicinal plant species and their habitats.
- **Scientific Research**: Conducting empirical studies to validate traditional claims.
- **Documentation:** Recording local ethnobotanical knowledge before it is lost.
- **Safe Practice:** Ensuring medicinal plants are used based on accurate knowledge and expert guidance.

CONCLUSION

Neem, Tulsi, Giloy and Ashwagandha stand as vital pillars of Chhattisgarh's traditional botanical and folk knowledge heritage. They embody a centuries-old harmony between humanity and nature. Preserving and scientifically studying these plants will not only sageguard regional biodiversity but also ensure that this valuable heritage reaches future generations.

इतना खुश रहो कि दुनिया परेशान हो जाए
कि इसे किस बात की खुशी है।

Medical Traditions of Baiga Tribe

Harish Patre
Guest Lecturer - Zoology

1. Introduction

The Baiga tribe, primarily inhabiting in the dense forest landscapes of the Maikal Hills range in Chhattisgarh and neighboring regions, holds a unique position as one of India's Particularly Vulnerable Tribal Groups (PVTGs).Known historically as the "Guardians of the Forest," The Baiga lifestyle teflects a deep-rooted ecological harmony and intuitive understanding of natural ecosystems. Their traditional medicinal system, passed down orally through successive generations, represents an extraordinary repository of ethnobotanical science that bridges botany, zoology, ecology, and natural pharmacology.

" For the Baiga, the forest is not merely a natural resource, but a living ecosystem where every root, leaf, bark, and animal behavior holds profound therapeutic significance."

2. Indigenous Knowledge & The Role of the Gunia

In Baiga society, traditional healers known as Gunia or Baiga serve as the primary healthcare providers. Their method of plant identification does not rely on modern taxonomic keys, but on subtle sensory and ecological indicators, observing plant morphology, seasonal growth patterns, habitat preferences, and animal interactions with specific flora.

KEY PILLARS OF BAIGA ETHNOBOTANICAL PRACTICE

- **Sensory Taxonomy:** Classification of plants based on taste, aroma, texture, and ecological micro-habitats.
- **Selective Harvesting:** Customary guidelines that prevent harvesting during specific growth phases to ensure natural plant regeneration.
- **Synergistic Formulations:** Combining plant extracts with natural mineral resins and herbal catalysts for enhanced therapeutic efficacy.
- **Ecological Balance:** Strict avoidance of over- exploitation, preserving biodiversity for future generations.
-

3. Key Medicinal Flora & Ethnomedicinal Applications

The Maikal Hills offer a diverse sanctuary for valuable medicinal flora. Below is a structured summary of primary plant species utilized in traditional Baiga healthcare :

BOTANICAL/SCIENTIFIC NAME	LOCAL NAME	PLANT PART USED	ETHNOMEDICINAL APPLICATION
Tinospora cordifolia	Giloy/Gurach	Stem	Traditionally used for fever and general metabolic wellness
Andrographis paniculata	Kalmegh	Whole Plant	Traditionally used for digestive and liver-related ailments
Asparagus racemosus	Satavar	Tuberous Roots	Traditionally used as a general tonic and restorative herb
Gymnema sylvestre	Gudmar	Leaves	Traditionally associated with blood-glucose and metabolic support
Celastrus paniculatus	Malkangni	Seeds/Seed Oil	Traditionally used for neurological wellness, memory and joint discomfort
Terminalia arjuna	Arjun	Bark	Traditionally associated with cardiovascular wellness
Semecarpus anacardium	Bhelwa	Fruit/Nuts	Traditionally used for joint and skin- related ailments

4. Zoological & Ecological Interconnections

From a zoological perspective, the Baiga medicinal paradigm demonstrates an advanced understanding of **bioactive compounds derived from natural habitats.** The tribe utilizes plant latexes, essential oils, and alkaloids not only in traditional human healthcare but also in **ethnoveterinary practices** to protect livestock against local pathogens and seasonal diseases.

Furthermore, Customary practices that discourage over- harvesting contribute to the conservation of **wild plant populations and associated forest fauna.** This traditional ecological knowledge demonstrates the close relationship between human health, biodiversity and forest ecosystems.

5. Conservation Challenges & Modern Relevance

Despite its immense ecological and cultural value, Baiga ethno-medicinal knowledge faces several serious threats.

- **Deforestation and habitat degradation** are reducing access to traditional medicinal plants.
- **Climate variability** may affect the distribution, growth and regeneration of medicinal flora.
- **Commercial over-exploitation** of forest resources can threaten important plant species.
- **Lack of systematic documentation** creates a risk of traditional knowledge being lost.
- **Changing socioeconomic conditions** and declining transmission of oral knowledge among younger generations pose additional challenges.

Integrating indigenous knowledge with **modern biological research** and establishing sustainable **bio-prospecting and conservation frameworks** can help protect both forest biodiversity and traditional healthcare practices.

Systematic documentation scientific validation, community participation and protection

of traditional intellectual knowledge can ensure that the valuable medicinal heritage of the **Maikal Hills** remains protected for future generations. The Baiga Knowledges system therefore represents not merely a traditional healthcare practice, but a valuable example of the relationship between **human communities, biodiversity and ecological sustainability.**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा से आधुनिकता की ओर

गोविंद यादव
अतिथि व्याख्याता - राजनीति शास्त्र

प्रस्तावना-

शिक्षा किसी भी समाज के बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक विकास का प्रमुख आधार है। शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करने के लिए ज्ञान और कौशल प्रदान करना नहीं, बल्कि व्यक्ति में विवेक, तार्किकता, संवेदनशील, चरित्र और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना भी है। इसलिए शिक्षा-व्यवस्था तभी प्रभावी हो सकती है, जब वह आधुनिक आवश्यकताओं के साथ देश की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत का संतुलित समन्वय करे।

भारत की ज्ञान परंपरा अत्यंत प्राचीन और विविधतापूर्ण रही है। गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा दर्शन, व्याकरण, साहित्य, कला, कृषि, पर्यावरण, योग, राजनीति और अर्थशास्त्र जैसे अनेक क्षेत्रों में भारतीय चिंतन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय दृष्टि में ज्ञान को केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि जीवन, समाज और प्रकृति को समझने का माध्यम माना गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी व्यापक दृष्टिकोण को आधुनिक शिक्षा के साथ जोड़ने का प्रयास करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का व्यापक स्वरूप-

भारतीय ज्ञान परंपरा को केवल धार्मिक या आध्यात्मिक ज्ञान तक सीमित करना उचित नहीं है। पाणिनि की व्याकरण परंपरा, आर्यभट्ट और ब्रम्हगुप्त का गणित एवं खगोल विज्ञान, चरक और सुश्रुत की चिकित्सा परंपरा तथा कौटिल्य का राजनीतिक और आर्थिक चिंतन भारत की व्यापक बौद्धिक विरासत को दर्शाते हैं।

भारतीय परंपरा में ज्ञान को जीवन से जोड़ने पर विशेष बल दिया गया। योग में शरीर और मन के संतुलन पर विचार किया गया, जबकि आयुर्वेद में स्वास्थ्य को जीवन-शैली और संतुलन से जोड़कर देखा गया। इसी प्रकार भारतीय दार्शनिक परंपराओं में जीवन, नैतिकता, कर्तव्य और मानव अस्तित्व से जुड़े प्रश्नों पर गंभीर चिंतन हुआ।

भारतीय ज्ञान परंपरा की एक महत्वपूर्ण विशेषता प्रश्न, तर्क, संवाद और शास्त्रार्थ की परंपरा भी रही है। आधुनिक शिक्षा में जिस आलोचनात्मक चिंतन, तार्किक क्षमता और विश्लेषात्मक दृष्टि पर बल दिया जाता है, उसके साथ इस परंपरा का सार्थक संवाद स्थापित किया जा सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का भारतीय दृष्टिकोण-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला, बहुविषयक, विद्यार्थी-केंद्रित और कौशल-आधारित बनाने की दिशा प्रस्तुत करती है। इसका उद्देश्य शिक्षा को केवल परीक्षा और डिग्री तक सीमित न रखकर ज्ञान, कौशल, रचनात्मकता, मूल्यों और व्यक्तित्व विकास से जोड़ना है।

नीति में भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा को शिक्षा से जोड़ने पर विशेष ध्यान दिया गया है। भारतीय ज्ञान प्रणालियों को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर शामिल करने की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं। इसका महत्व इसलिए भी है कि भारतीय ज्ञान की अनेक धाराएँ आधुनिक शिक्षा की मुख्यधारा में पर्याप्त रूप में व्यवस्थित स्थान प्राप्त नहीं कर सकीं।

हालांकि भारतीय ज्ञान को पाठ्यक्रम में शामिल करने का अर्थ केवल प्राचीन उपलब्धियों को विद्यार्थियों से याद करवाना नहीं होना चाहिए। विद्यार्थियों को यह समझना आवश्यक है किसी ज्ञान का विकास किन परिस्थितियों में हुआ, उसका सामाजिक प्रभाव क्या था और वर्तमान समय में उसकी उपयोगिता किस प्रकार निर्धारित की जा सकती है। यही दृष्टिकोण भारतीय ज्ञान को जीवंत और प्रांसगिक बनाएगा।

भारतीय भाषाएँ और ज्ञान का लोकतंत्रीकरण -

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक स्मृति और ज्ञान को संरक्षित करने का महत्वपूर्ण साधन है। भारत में संस्कृत, पालि, प्राकृत, तमिल तथा अनेक भारतीय भाषाओं में महत्वपूर्ण ज्ञान-साहित्य उपलब्ध है। भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा विद्यार्थियों को ज्ञान से अधिक सहजता से जोड़ सकती है।

लेकिन भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने का अर्थ अंग्रेजी का विरोध करना नहीं है। वैश्विक युग में बहुभाषी क्षमता आवश्यक है। आवश्यकता ऐसी शिक्षा-व्यवस्था की है जिसमें विद्यार्थी अपनी मातृभाषा या भारतीय भाषा में मजबूत आधार विकसित करने के साथ अंग्रेजी और अन्य भाषाओं के माध्यम से वैश्विक ज्ञान तक भी पहुँच बना सके। इसके लिए भारतीय भाषाओं में गुणवत्ताओं उच्च शिक्षा सामग्री औ डिजिटल संसाधनों का विकास आवश्यक है।

भारतीय ज्ञान और आधुनिक विज्ञान -

भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा में शामिल करते समय वैज्ञानिक और आलोचनात्मक दृष्टिकोण आवश्यक है। भारतीय परंपरा के प्रत्येक विचार को बिना प्रमाण आधुनिक विज्ञान का हिस्सा मानना उचित नहीं है और न ही संपूर्ण भारतीय ज्ञान परंपरा को अप्रांसगिक समझना उचित होगा।

भारतीय ज्ञान का अध्ययन उसके ऐतिहासिक संदर्भ और उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर किया जाना चाहिए। आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त के योगदान को गणित एवं खगोल विज्ञान के इतिहास के संदर्भ में समझा जा सकता है। इसी प्रकार योग और आयुर्वेद की परंपराओं का अध्ययन आधुनिक शोध और स्वास्थ्य विज्ञान के साथ संवाद के माध्यम से किया जा सकता है।

अत: परंपरा और आधुनिक विज्ञान को विरोधी मानने के बजाय उनके बीच प्रमाण-आधारित संवाद स्थापित करना आवश्यक है। इससे विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और अपनी बौद्धिक विरासत के प्रति संतुलित समझ विकसित होगी।

स्थानीय और लोकज्ञान का महत्व -

भारतीय ज्ञान केवल प्राचीन ग्रंथों में सुरक्षित नहीं है। ग्रामीण, जनजातीय, और स्थानीय समुदायों में कृषि, जल-सरंक्षण, वनस्पति, औषधीय पौधों, मौसम और पर्यावरण से सबंधित पारंपरिक ज्ञान आज भी मौजूद है।

आधुनिक शिक्षा में स्थानीय ज्ञान को शामिल करने से विद्यार्थी अपने समाज और पर्यावरण से जुड़ सकते हैं। किसी क्षेत्र की पारंपरिक जल-सरंक्षण प्रणाली, कृषि पद्धति अथवा लोक-पर्यावरण ज्ञान का अध्ययन महत्वपूर्ण शोध विषय बन सकता है। इससे शिक्षा कक्षा और पाठ्यपुस्तक तक सीमित न रहकर स्थानीय जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से जुड़ सकेगी।

भारतीय ज्ञान और मूल्य - आधारित शिक्षा -

वर्तमान शिक्षा के सामने एक महत्वपूर्ण चुनौती विद्यार्थियों में ज्ञान और कौशल के साथ नैतिक एवं सामाजिक चेतना का विकास करना है। भारतीय चिंतन में सत्य, अहिंसा, करूणा, कर्तव्य, आत्मसंयम और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे मूल्यों को महत्व दिया गया है।

इन मूल्यों को धार्मिक आग्रह के बजाय सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के रूप में समझा जा सकता है। आधुनिक लोकतंत्र में समानता, स्वंतत्रता, न्याय और बंधुत्व जैसे संवैधानिक मूल्यों के साथ इनका संवाद जिम्मेदार नागरिकता की भावना को मजबूत कर सकता है।' वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना जलवायु परिवर्तन, महामारी और वैश्विक संकटों के दौर में मानव समाज की पारस्परिक निर्भरता को समझने में विशेष रूप से उपयोगी है।

इस अर्थ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का व्यापक संदेश ' भारतीय जड़ों से जुड़त हुए वैश्विक ज्ञान की ओर बढ़ना'' माना जा सकता है। परंपरा को आधुनिकता का विरोधी नहीं, बल्कि आधुनिक ज्ञान के साथ संवाद का आधार बनाना ही भारतीय ज्ञान को 21 वीं सदी में प्रासंगिक बनाने का प्रभावी मार्ग है। शिक्षा का अंतिम उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करने वाला व्यक्ति बनाना नहीं, बल्कि ऐसा नागरिक तैयार करना है जो ज्ञानवान, विवेकशील, वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला, संवेदनशील और समाज के प्रति उत्तरदायी हो। यदि भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश इसी दृष्टि से किया जाता है, तो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 केवल पाठ्यक्रम में परिवर्तन नहीं, बल्कि ज्ञान और शिक्षा की दृष्टि में व्यापक परिवर्तन का माध्यम बन सकती है।

ऊंची सोच है, तो भाषा भी ऊंची होनी चाहिए।

डिजिटल युग में वित्तीय धोखाधड़ी और साइबर सुरक्षा : चुनौतियां एवं समाधान

डॉ. धीरज कुमार शर्मा
अतिथि व्याख्याता - वाणिज्य

'' सतर्क रहें, सुरक्षित रहें और जिम्मेदारी के साथ डिजिटल तकनीक का उपयोग करें।''

आज का डिजिटल तकनीक का समय है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, UPI (Unified Payments Interface) मोबाइल बैंकिग और ऑनलाइन भुगतान ने हमारे जीवन को बहुत आसान बना दिया है। अब पैसे भेजने, बिल जमा करने, खरीदारी करने और बैंक से जुड़े कई काम घर बैठे कुछ ही मिनटों में कए जा सकते हैं। लेकिन डिजिटल सुविधाओं के बढ़ने के साथ ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी और साइबर अपराध का खतरा भी तेजी से बढ़ रहा है।

आज साइबर अपराधी लोगों को अलग-अलग तरीकों से धोखा देने का प्रयास करते हैं। इनमें फर्जी फोन कॉल OTP (One Time Password) के नाम पर धोखाधड़ी UPI Fraud, नकली Customer Care, फर्जी लिंक, SIM बदलकर धोखाधड़ी और बैंक अधिकारी बनकर जानकारी मांगना प्रमुख हैं। कई बार अपराधी लोगों को डराकर या लालच देकर उनसे बैंक खाते ATM (Automated Teller Machine), PIN (Personal Identification Number), OTP (One Time Password), और अन्य गोपनीय जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। एक छोटी-सी लापरवाही भी व्यक्ति को बड़ी आर्थिक हानि पहुँचा सकती है।

इसलिए आज साइबर सुरक्षा केवल बैंक या सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी भी है। डिजिटल बैंकिंग का उपयोग करते समय हमें सामान्य सावधानियों का पालन करना चाहिए। किसी भी व्यक्ति के साथ OTP (One Time Password) ATM (Automated Teller Machine), PIN (Personal Identification Number), CVV(Card Verification Value) Password या बैंक से जुड़ी गोपनीय जानकारी साझा नहीं करनी चाहिए। अनजान लिंक पर क्लिक करने, संदिग्ध मोबाइल ऐप डाउनलोड करने और अनजान व्यक्ति द्वारा बनाए गए निर्देशों का पालन करने से बचना चाहिए।

साइबर सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण सुझाव

1. OTP (One Time Password) ATM (Automated Teller Machine), PIN (Personal Identification Number), CVV(Card Verification Value) और Password कभी भी किसी के साथ साझा न करें।
2. अनजान लिंक पर क्लिक न करें और संदिग्ध वेबसाइट या ऐप पर बैंक सबंधी जानकारी न भरें।
3. UPI PIN केवल भुगतान करते समय ही डालें। पैसा प्राप्त करने के लिए UPI PIN डालने की आवश्यकता नहीं होती।
4. बैंक से सबंधित किसी भी समस्या के लिए केवल बैंक के आधिकारिक Customer Care नंबर का उपयोग करें।

5. मोबाइल और बैंकिग ऐप को समय-समय पर अपडेट करते रहें और मजबूत Password का उपयोग करें।
6. सार्वजनिक Wi-Fi का उपयोग करते समय Internet Banking या महत्वपूर्ण वित्तीय लेन-देन करने से बचें।
7. बैंक खाते में होने वाले लेन-देन के लिए SMS (Short Message Service) और E-mail Alert जरूर सक्रिय रखें, ताकि किसी अनधिकृत लेन-देन की तुरंत जानकारी मिल सके।
8. बुजुर्गो और ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को डिजिटल बैंकिग एवं साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक करना चाहिए।
9. किसी भी प्रकार की वित्तीय धोखाधड़ी होने पर तुरंत बैंक को सूचित करें और सबंधित साइबर अपराध शिकायत व्यवस्था में शिकायत दर्ज करें।
10. लालच और डर दोनों से सावधान रहें। '' इनाम मिला है'' KYC (Know your Customer) बंद हो जाएगा''या खाता बंद होने वाला है'' जैसे संदेशों पर बिना जांच के विश्वास न करें।
11. महाविद्यालयों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों में Cyber Security Awareness कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।
12. डिजिटल बैंकिग का उपयोग करते समय हमेशा याद रखें- '' सोचें, जाँचें और फिर क्लिक करें।''

बैंकों और वित्तीय संस्थानों की भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्हें अपने ग्राहकों की सुरक्षा के लिए मजबूत सुरक्षा व्यवस्था अपनानी चाहिए। संदिग्ध लेन-देन की तुरंत पहचान करने के लिए आधुनिक तकनीक का उपयोग किया जाना चाहिए। आज Artificial Intelligence(AI) और Machine Learnin. जैसी तकनीकों की सहायता से असामान्य लेन-देन को पहचानने और संभावित धोखाधड़ी को रोकने में मदद मिल रही है। इसमें बैंकिग व्यवस्था को अधिक सुरक्षित बनाया जा सकता है।

इसके साथ ही डिजिटल जागरूकता भी बहुत जरूरी है। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों, बुजुर्गो और पहली बार डिजिटल बैंकिंग का उपयोग करने वाले लोगों को साइबर सुरक्षा के सामान्य नियमों की जानकारी दी जानी चाहिए। विद्यालयों और महाविद्यालयों में भी विद्यार्थियों को डिजिटल सुरक्षा के प्रति जागरूक करना समय की आवश्यकता है।

डिजिटल बैंकिग ने आर्थिक जीवन को सरल और तेज बनाया है। लेकिन इसका पूरा लाभ तभी मिल सकता है, जब इसके साथ सुरक्षा और जागरूकता भी हो। सरकार, बैंक, शैक्षणिक संस्थान और आम नागरिक यदि मिलकर प्रयास करें, तो साइबर धोखाधड़ी को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

अंतत: कहा जा सकता है कि डिजिटल सुविधा के साथ डिजिटल सावधानी भी जरूरी है। हमें तकनीक का उपयोग करना है, लेकिन पूरी सतर्कता के साथ। एक जागरूक और सावधान नागरिक ही सुरक्षित डिजिटल अर्थव्यवस्था का आधार बन सकता है।

'' **डिजिटल तकनीक हमारी सुविधा है, लेकिन हमारी जागरूकता ही हमारी सबसे बड़ी सुरक्षा है।**''

भारत में जैविक खेती अनुसंधान : वर्तमान स्थिति और भविष्य की राह

डॉ. राजीव कुशवाहा
अतिथि व्याख्याता - वाणिज्य

'' जैविक कृषि वह कृषि प्रणाली है जो आगामी पीढ़ी के जीवन धारक पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिक परिसम्पत्तियों को क्षति पहुंचाये बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त खाद्य पदार्थ उत्पादित करती है।'' इसे टिकाऊ खेती, कार्बनिक खेती एवं प्राकृतिक खेती भी कहा जाता है। जैविक कृषि प्रणाली में कार्बनिक खादों का सघन प्रयोग होता हैं तथा भूमि की स्वाभाविक उर्वरता बनाये रखने के लिए उचित फसल चक्र का प्रयोग किया जाता है। जैविक कृषि प्रणाली में भूमि की न्यूनतम जुताई की जाती है। पारिस्थितिक संतुलन बना रहना, लागतों का कम प्रयोग और अधिक उत्पादन इसकी प्रमुख विशेषता है। फसल उत्पादन के साथ-साथ कृषि बागवानी पशुपालन और बहुस्तरीय कृषि इसके प्रमुख अंग है। जैविक शब्द का यहां निहितार्थ किसी प्रक्रिया के ऐसे गुण से है जो सदैव स्थिर रहे तथा प्राकृतिक संसाधनों एवं पर्यावरण का इस प्रकार दोहन किया जाए ताकि प्रकृति की पुर्नस्थापना तथा नवीनीकरण की स्वभाविक गतिविधि बाधित न हो।

जैविक कृषि पद्धति सतत् संपोषी विकास तथा पर्यावरण के अनुकूल रहा करती थी। पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा विश्व आयोग के ब्रुंटलैण्ड प्रतिवेदन में दी गयी स्थिर अथवा टिकाऊ अथवा धारणीय विकास की परिभाषा इस प्रकार है '' धारणीय अथवा टिकाऊ विकास वह है, जो भावी पीढ़ी की अपनी आवश्यकताओं को पूरी करने की क्षमता को क्षति पहुँचाए बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करें।''

हमारा देश एक कृषि प्रधान देश हैं। जिसमें 70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर जीवन-यापन करती है। उनके जीवन का मुख्य साधन कृषि है। हरितकांति आने से पहले देखा जाये तो जो कृषि पद्धति हमारे यहॉ अपनाई जाती थी। वह जैविक कृषि पर आधारित थी। लेकिन समय बदलता गया और जनसंख्या बढ़ती गई जिससे मनुष्य की आवश्यकता व जरूरतों को पूरा करने के लिए कृषि पद्धति में बदलाव हुआ। जिसे आवश्यकता आविष्कार की जननी कहा जाता है। जिसके कारण कृषि में रसायनों का आगमन हुआ। इस परिवर्तन के कारण पौधे के पोषक तत्वों में लगातार कमी आई व अनेक प्रकार की बीमारियों का जन्म होने लगा, पर्यावरण भी प्रदूषित होने लगा, मिट्टी की उर्वरक शक्ति कमजोर हो गयी, जिसके कारण किसानों ने फिर से जैविक खेती करने के लिए मजबूर हो गए। खेती की वह प्रणाली जिसमें रासायनिक खादों तथा कीटनाशक दवाइयों का प्रयोग नहीं हो बल्कि उसके स्थान पर जैविक खाद व कीटनाशक का प्रयोग हो तो इसे हम जैविक खेती कहते हैं। आदिकाल में किसानों द्वारा कूड़े-कचड़े के ढेर में फेंके गए अनावश्यक कार्बनिक पदार्थ जैसे- गोबर, घास,फल एवं सब्जियों के छिलके घरों की साफ-सफाई से निकले गए अन्य कचड़े को इकट्ठा करने के बाद वे खाद के रूप में उपयोग किया जाता था। उसे अब जैविक खाद कहते हैं।

सभी प्रकार के फल, सब्जियों एवं फलदार वृक्षों की वृद्धि एवं विकास तथा उत्पादन अधिक प्राप्त करने के लिए मृदा के स्वास्थ्य को ठीक रखना अति आवश्यक है, कि मृदा में उपलब्ध पोषक तत्वों का संतुलन बनाए रखा जाए। यदि हम अब तक कि खेती देखे तो पौधों को पोषक तत्व दिया जाता था, लेकिन अब आवश्यकता है की मिट्टी को

पोषक तत्व दिया जाये मिट्टी को एक जीवित माध्यम भी माना गया है। पेड़-पौधों की वृद्धि व विकास के लिए 18(अठारह) पोषक तत्वों की आवश्यकता होती हैं। पौधों को ऑक्सीजन, हाइड्रोजन, कार्बन वातावरण से प्राप्त होता है। ये तत्व पौधों को अपने आप ही मिलते हैं। नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम की आवश्यकता अधिक मात्रा में होती है। इसलिए इन तत्वों को प्राथमिक पोषक तत्व कहते हैं।

कैल्शियम, मैग्नीशियम, सल्फर की आवश्यकता प्राथमिक पोषक तत्वों की अपेक्षा कम होती है। इसलिए इन्हें द्वितीय पोषक तत्व कहते हैं। उपरोक्त पोषक तत्वों के अलावा आयरन, कापर, मैग्नीज, जस्ता, बोरान, मॉलिब्डेनम, क्लोरीन, सिलकन, सोडियम, कोबाल्ट, निकिल, आादि पोषक तत्वों की आवश्यकता सूक्ष्म मात्रा में होती है। इन्हें सूक्ष्म पोषक तत्व के नाम से जाना जाता है। मृदा में कार्बनिक पदार्थ की एक ऐसी चीज है, जो उसके अस्तित्व को बनाए रखती है। स्वस्थ मृदा में कार्बनिक पदार्थों की मात्रा 0.5 प्रतिशत से कम नही होना चाहिए कृषि में मिट्टी संरचना का परीक्षण क्षारीय 8.5-140 तक लवणीय 7.5-8.5 तक उदासीन 7.0 तक की आवश्यकता होती है। जिस प्रकार मनुष्य को जीवन जीने के लिए शरीर में रक्त का महत्व है, ठीक उसी तरह मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ का महत्व है। कार्बनिक पदार्थ के स्तर को बनाए रखने के लिए जैविक खाद व कीटनाशक एक सर्वोत्तम साधन है।

A Memorable visit to Govt. Naveen College Kui-Kukdur

Dr. Kalpana Paul
Principal
Madan Lal Sahu Govt. College, Armarikala, Durg

Far from the hustle and bustle, far from the madding crowed. The Agr river flows between kui and kukdur It originates near kukdur which ends as a small stream at mungeli. After watching several videos of Govt. college of Kui-kudur and the breathtaking natural beauty surrounding it. I Could no longer resist the desire to visit th is serene place.

Kukdur is about 170 km from Durg. I began my journey at 6.30 am reached kukdur around 10.30 am. When I reached the college, I was pleasantly surprised to discover that it functions in the renovated building of an old school. Instead of constructing a new structure, the existing structure has been thoughtfully transformed to meet the needs of modern education.

What impressed me most was the creativity behind the change. Spaces once used as toilets have been ingeniously converted into well-equipped laboratories and girls common room. An old, broken table has found a new life as garden chair, the shade of tall old trees and a small path has been transformed into Gyan Path and Mukt Aangan, a peaceful learning space where nature itself becomes a classroom.

The entire campus reflects the philosophy that education need not be confined within four walls. It is a beautiful harmony of sustainability, innovation and aesthetic, a perfect blend of Shantiniketan's open air learning spirit and the aspirations of modern education. Every corner of the campus tells a story of imagination and a deep respect for both nature and knowledge.

The credit for this remarkable transformation goes to the Principal, Dr G A Ghanshyam. His farsighted vision, innovative practice and creative ideas have shaped the college into a tuly inspiring place of learning. Guided by positive thinking, unwavering dedication and relentless to the fact that true leadership is not measured by size of the infrastructure but by the vision. Under his guidance the campus has become more than an educational institution, it is a living example of how commitment and love for learning can create something extraordinary.

After spending time at college we set out to explore the scenic beauty of kukdur. Our destination was Sejadih, a picturesque village about 20 km from kudur situated at an elevation of nearly 1200 fet. The travel itself was enchanting with winding roads and forests. At Sejadih, we visited a Govt primary school and spent time interacting with the children. During conversation I realized that the children already knew Dr Ghanshyam, he had visited the school earlier also fulfilling their small wishes and leaving behind warm memories.

What impressed me even more was his natural way of teaching, picking up a piece of chalk, he drew a simple picture on the blackboard and invited the children to identify it. He gently guided them towards cleanliness, good manners. Watching him interact with the children, I understood that a true teacher does more than impart knowledge, he inspires young minds, nurtures confidence and plants the seeds of good values in the most effortless and memorable way.

From Sejadih we went to Diwanpatpar about 10 km from kukdur. The place is known for its fascinating magnetic field, even when left in neutral gear vehicles moves uphill on its own. The drive to Diwanpatpr was as captivating as the destination itself. The road meandered through lush greenery with sparkling water bodies and gentle streams, the serenity of the forests, the melody of flowing water and the freshness of the mountain air created an unforgerrable experience. During our travel Sir shared and incident that revealed the essence of his character. One day, while traveling along a village road he noticed a man lying unconscious by the roadside after becoming heavily intoxicated. Instead of walking past, he stopped and took the man safely to his home.

Listening to this simple yet profound incident. I realized that compassion is not expressed through grand gestures but through quiet acts of humanity. IT reflected the kindness and empathy that define Dr G A Ghanshyam. For him every human being deserves dignity, care and a helping hand. Sometimes a person's true character is revealed not in what they say, but in what they do when no recognition is expected. This is how my visit to Kui-kudur ended as an unforgettable experience.

Promoting and Propagating the Production and Use of Millets for Healthy, Wealthy and Viksit Bharat@2047 in the light of NEP 2020

Prof. G.A. Ghanshyam
Principal
Govt. Naveen College, Kui-Kukdur

Bharat, the country known as India throughout the globe is the largest producer of millets in the world followed by Nigeria, China and other countries. The main crop of the traditional and indigenous natives of Bharat, millets have been used to a greater extent in the states like Karnataka, Rajasthan, Maharashtra and Tamil Nadu. The promotion and propagation millets in the era of Mcdonaldian food culture is the need of the hour to make the Gen Z and Gen Alpha learners healthy wealthy and fit to make Bharat the Viksit Bharat by 2047. In the highly changing and challenging society, it is mandatory for the HEIs to enable the students to identify opportunities, develop business ideas and potentially launch their own ventures. According to NEP 2020, entrepreneurship is a key focus area, aiming to cultivate an entrepreneurial mindset in students by integrating vocational education into the curriculum. The majorities of the students of Chhattisgarh, who are in the HEIs, hail from the rural and tribal areas and are aware of agriculture and its products. Promotion, propagation, production and use of millets must be made known to the younger generation to benefit the farming community and the economy of the country. Millets benefit the farmers by generating income, creating employment and opening up new markets which creates a greater impact on the rural economy.

Creating awareness about the benefits of millets, publishing patents on the products made by millet, changing the mindset of the students of the HEIs from job seekers to job providers by the farming and distribution of millets shall bring a sea change in the society. The HEIs must establish incubation centres and startups to create awareness among the students about millets, products made by millets and engage them in earn while learn programme. This very change will make the country health, wealthy and lead it towards Viksit Bharat by 2047. Millets are small grains with a big promise for a healthier future. Eat local, eat healthy, eat millets. Choose millets today, nourish generations tomorrow. Millets are not just food; they are a tradition, a livelihood, and a sustainable future. From our fields to our plates, millets connect health with heritage. Millets nourish the body while nurturing the earth. The promotion of millets among the Yuva Bharat shall play a key role to materialize the dream to see Bharat as Viksit Bharat@2047.

THE VISIT TO GOVT. NAVEEN COLLEGE, KUI KUKDUR

Prof. Pragya Kulkarni,
Govt. VYT Autonomous Science PG College, Durg

Date of Visit: 22 September 2026
Occasion: Inauguration of Botany, Chemistry and Zoology Societies
Venue: Govt. Naveen College, Kui Kukdur, Dist. Pandariya, Chhattisgarh

A visit to Govt. Naveen College, Kui Kukdur was undertaken on 22 September 2026 on the occasion of the inauguration of the Botany, Chemistry and Zoology Societies of the college. Situated amidst the natural surroundings of Vananchal (forest region), the college presents a unique academic environment where education is closely connected with nature, local knowledge and available resources.

The visit provided an enriching opportunity for academic interaction, sharing of subject knowledge, and appreciation of the innovative initiatives undertaken by the college for the holistic development of undergraduate students.

The visiting team was warmly welcomed by the Principal, Prof. G. A. Ghanshyam, faculty members and students of the college. The programme commenced with the worship of Goddess Saraswati, seeking blessings for knowledge and learning. As part of the programme, several posters based on the Indian Knowledge System (IKS) were displayed on the walls of the college. The posters were explained by the students themselves.

The explanations provided by the students were thorough, informative and useful, reflecting their active involvement in the learning process. The initiative also demonstrated the commitment and efforts of the Principal and faculty members towards creating awareness and promoting an understanding of the Indian Knowledge System among students.

The program initiated by a formal welcome and introduction of the programme. The newly appointed office bearers of the Botany, Chemistry and Zoology Societies were introduced, followed by the administration of the formal oath to the office bearers. The ceremony provided an opportunity to motivate students to actively participate in academic, co-curricular and scientific activities throughout the session.

The programme was enriched by lectures delivered by subject experts:

1. Dr. Pragya Kulkarni, Prof. Govt. V.Y.T. PG Autonomous College, Durg – Botany

Dr. Pragya Kulkarni delivered a lecture on "Identification of Plants: From Habit and Habitat to Molecular Characterization." She explained the progressive approaches used in plant identification, beginning with:

Habit and habitat of plants
Morphological characteristics
Physiological characteristics
Biochemical analysis for determining the presence or absence of phytochemicals
Advanced molecular characterization techniques

The lecture highlighted how plant identification has evolved from traditional morphological approaches to modern molecular techniques.She also discussed the significance of the Panch Mahabhuta concept in the Indian Knowledge System and explained its relevance in understanding human nature and behavioural characteristics in

relation to the predominance of any one in the human body.

2. Dr. Sunitha B. Mathew, Prof. Govt. V.Y.T. PG Autonomous College, Durg – Chemistry

Dr. Sunitha B. Mathew interacted with the students regarding the role and responsibilities of the office bearers of the Chemistry Society during the academic session. She emphasized the importance of active participation, teamwork and responsibility in making the society meaningful and productive.

She also highlighted the significance of Rasayan (Chemistry) in human life and its relevance in understanding various aspects of the material world and everyday life.

3. Dr. Alka Mishra, Assist. Prof. Govt. V.Y.T. PG Autonomous College, Durg – Zoology

Dr. Alka Mishra delivered an insightful lecture on "Balance of Ecosystem and the Role of Animals in the Environment and Surroundings." She explained the importance of animals in maintaining ecological balance and emphasized the interdependence of organisms within an ecosystem. The lecture helped students appreciate the significance of biodiversity and responsible interaction with the natural environment.

The visiting team also had the opportunity to explore the entire college campus. The visit was particularly inspiring because of the innovative ideas adopted by the college despite the availability of limited resources.

The efforts of the Principal and faculty members towards the overall personality development of students during their undergraduate studies were clearly visible. Various initiatives reflected an emphasis not only on classroom education but also on creativity, communication skills, leadership, knowledge of Indian traditions, scientific temperament and active participation.

The manner in which available resources were utilized creatively demonstrated the commitment of the institution towards providing meaningful educational experiences to its students.

The visit was further enriched by the warm hospitality extended by the Principal, faculty members and students. The visiting team also had the opportunity to enjoy delicious local cuisine, which added a memorable cultural dimension to the academic visit.

The visit was accompanied by:

Dr. A. C. Verma, Professor of Chemistry
Ms. Riya Thakur, Guest Faculty, Botany
Shri Ramrati Nishad, Assistant Professor, Zoology
Shri Harish Patre, Guest Faculty, Zoology

The visit to Govt. Naveen College, Kui Kukdur was an enriching and memorable academic experience. The inauguration of the Botany, Chemistry and Zoology Societies provided a meaningful platform for interaction between faculty members and students and encouraged students to take greater responsibility for their academic and co-curricular development.The innovative use of limited resources, integration of the Indian Knowledge System, emphasis on scientific learning, and efforts towards holistic personality development of students were particularly appreciable. The visit also provided an opportunity to appreciate the dedication of the Principal and faculty members in creating a vibrant learning environment in the forest region.

Overall, the visit was academically enriching, culturally meaningful and highly inspiring, and it reflected the importance of collaborative academic interaction and sharing of knowledge for strengthening higher education at the undergraduate level.

शासकीय नवीन महाविद्यालय, कुई-कुकदुर

जिला - कबीरधाम (छ.ग.) 491559

Website : www.gnckuikukdur.org
Email : kuikukdurcollege@gmail.com

भुईंया : आगर से सागर तक

(महाविद्यालयीन पत्रिका : अंक -1)





महाविद्यालयीन गतिविधियाँ















महाविद्यालयीन गतिविधियाँ





















दैनिक भास्कर कवर्धा-बेमेतरा भास्कर 02-10-2026

आयकर रिटर्न फाइलिंग जैसी सेवा से स्वरोजगार कर सकते हैं

कुई-कुकदूर कॉलेज में वाणिज्य परिषद का गठन

कुकदूर| शासकीय नवीन कॉलेज कुई-कुकदूर में वाणिज्य विभाग की ओर से वाणिज्य परिषद के उद्घाटन समारोह हुआ।
मुख्य वक्ता मुंगेली के शासकीय एसएनजी कॉलेज के सहायक प्राध्यापक डॉ. सजल कुमार त्रिपाठी ने विद्यार्थियों को वाणिज्य विषय के सैद्धांतिक ज्ञान के साथ उसके व्यावहारिक उपयोग और रोजगार की संभावनाओं की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वाणिज्य के विद्यार्थियों को केवल नौकरी तलाशने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि रोजगार देने की दिशा में भी आगे बढ़ना चाहिए। डॉ. राजीव कुशवाहा, प्राणीशास्त्र विभाग के सहायक प्राध्यापक रामरती निषाद ने भी विचार व्यक्त किए। डॉ. त्रिपाठी ने आयकर का उदाहरण देते हुए बताया कि विषय का व्यावहारिक ज्ञान लेकर विद्यार्थी आयकर रिटर्न फाइलिंग जैसी सेवाओं के माध्यम से स्वरोजगार शुरू कर सकते हैं। बीकॉम विद्यार्थियों ने वाणिज्य परिषद के दायित्वों के निर्वहन और गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी की शपथ ली। परिषद की कार्यकारिणी में डोमन पटेल को अध्यक्ष, लाकेश को उपाध्यक्ष, मंदाकिनी को सचिव, रामेश्वरी को सह-सचिव और युवराज को कोषाध्यक्ष बनाया गया। संचालन परिषद अध्यक्ष डोमन पटेल ने किया।


इस कार्यक्रम में कॉलेज के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

दैनिक भास्कर कवर्धा-बेमेतरा 20-04-2026

छात्र विकास: व्यक्तित्व निखार के दिए टिप्स



कुकदूर| कुई-कुकदूर स्थित शासकीय नवीन महाविद्यालय में छात्रों के सर्वांगीण विकास को लेकर छात्र विकास कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम प्राचार्य प्रो. जीए घनश्याम के निर्देशन और आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (आईक्यूएसी) के तत्वावधान में हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्राचार्य प्रो. घनश्याम ने व्यक्तित्व विकास विषय पर व्याख्यान देते हुए कहा कि आज के प्रतिस्पर्धी दौर में केवल किताबी ज्ञान पर्याप्त नहीं है। छात्रों के सर्वांगीण विकास, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच ही उन्हें आगे बढ़ाती है। उन्होंने विद्यार्थियों को बेहतर भविष्य के लिए संवाद कौशल विकसित करने, आत्मविश्वास बढ़ाने और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के टिप्स दिए। कार्यक्रम के अंत में छात्रों ने अपने सवाल रखे, जिनका प्राचार्य ने विस्तार से समाधान किया। इससे विद्यार्थियों को अपने करियर और व्यक्तित्व विकास को लेकर दिशा मिली।

दैनिक भास्कर कवर्धा-बेमेतरा भास्कर 12-09-2026

पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने बनी भूगोल परिषद



कुकदूर| शासकीय नवीन महाविद्यालय कुई-कुकदूर में विद्यार्थियों में भूगोल विषय के प्रति रुचि बढ़ाने, वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने और पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से भूगोल परिषद का गठन किया गया। प्राचार्य प्रो. जी.ए. घनश्याम के मार्गदर्शन में भूगोल विभाग ने परिषद का गठन किया। परिषद के माध्यम से विद्यार्थियों को भूगोल से जुड़ी शैक्षणिक, व्यावहारिक, रचनात्मक और सहशैक्षणिक गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता का अवसर मिलेगा। साथ ही स्थानीय भौगोलिक समस्याओं को समझने और उनके समाधान के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक किया जाएगा। भूगोल विभाग की अतिथि व्याख्याता डॉ. कौसर नाजमी ने कहा कि परिषद विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों की जानकारी से आगे बढ़कर प्रायोगिक और अनुभवात्मक सीखने का अवसर देगी। इससे विषय की समझ के साथ रोजगार के विभिन्न अवसरों की जानकारी भी मिलेगी। परिषद के गठन में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

दैनिक भास्कर कवर्धा-बेमेतरा भास्कर 04-10-2026

कुई-कुकदूर कॉलेज में छात्रों ने किया श्रमदान



कुकदूर| शासकीय नवीन कॉलेज कुई-कुकदूर में महात्मा गांधी जयंती पर स्वच्छता अभियान चलाया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना, स्काउट्स एवं गाइड्स (रोवर-रेंजर यूनिट) और रेडक्रॉस सोसायटी के संयुक्त तत्वावधान में सुबह 9 बजे से कॉलेज परिसर में छात्र-छात्राओं और स्वयंसेवकों ने श्रमदान किया। इस दौरान परिसर के विभिन्न हिस्सों की साफ-सफाई कर स्वच्छता का संदेश दिया गया। वक्ताओं ने कहा कि स्वच्छता किसी एक दिन तक सीमित गतिविधि नहीं, बल्कि दैनिक जीवन की आदत होनी चाहिए। कार्यक्रम में एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी रामरती निषाद, रोवर-रेंजर प्रभारी रिया ठाकुर, डॉ. रामभरोस साहू, रेडक्रॉस सोसायटी के वालंटियर्स सहित कॉलेज के विद्यार्थी और

दैनिक भास्कर कवर्धा-बेमेतरा भास्कर 21-09-2026

परिक्षण • कुई-कुकदूर कॉलेज में पर्सनालिटी डेवलपमेंट व बॉडी लैंग्वेज कार्यशाला हुई

स्टूडेंट्स सीख रहे इंटरव्यू में कैसे बैठना बोलना और सामने वाले से नजर मिलाना



कुकदूर| पार्सनैलिटी डेवलपमेंट की लेक्चर क्लासेस हुआ।

इंटरव्यू में जज्बा ही नहीं, उसे देने का तरीका भी मायने रखता है

इसलिए जरूरी है कि ट्रेनिंग

बिनेट मिशन से लेकर संविधान र्माण तक का सफर समझाया

सत्ता हस्तांतरण जैसे विषयों पर भी चर्चा

खेल प्रतियोगिता में जीत से ज्यादा हार से मिलती है सीख: वाजपेयी



कुकदूर| खेल दिवस पर समारोह में मौजूद अतिथि व विद्यार्थी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति ज्ञान, चरित्र और कौशल पर आधारित : डॉ. घनश्याम



■ फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में भारतीय ज्ञान परंपरा, पाठ्यचर्या निर्माण और उच्च शिक्षा की गुणवत्ता पर हुआ मंथन

भिलाई/नवप्रदेश। श्री शंकराचार्य प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी में आयोजित फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम के तहत 'भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति' विषय पर उच्च शिक्षा के प्राचार्य डॉ. जी.ए. घनश्याम का व्याख्यान हुआ। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, उच्च शिक्षा की बदलती आवश्यकताओं और पाठ्यचर्या निर्माण के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी दी। डॉ. घनश्याम ने कहा कि उच्च शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को ज्ञान, कौशल, रचनात्मकता, नवाचार, नैतिक मूल्यों और रोजगारपरक दक्षताओं से संपन्न करना है। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा को केंद्र में रखकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति की संरचना की गई है, जिसमें ज्ञान, चरित्र और कौशल पर विशेष जोर दिया गया है। बहुविषयक शिक्षा, लचीली पाठ्यचर्या, कौशल विकास, शोध एवं नवाचार और रोजगारपरक शिक्षा को उन्होंने उच्च शिक्षा के महत्वपूर्ण आधार बताया। उन्होंने कहा कि प्रभावी पाठ्यचर्या में अध्ययन-अध्यापन, मूल्यांकन और विद्यार्थियों के समग्र विकास के बीच बेहतर समन्वय जरूरी है। साथ ही समय-समय पर पाठ्यक्रम की समीक्षा, शोध संस्कृति, नवाचार और अकादमिक गुणवत्ता को बढ़ावा देना आवश्यक है। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. सोनू अग्रवाल ने कहा कि बदलते शैक्षणिक परिवेश में शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारतीय ज्ञान परंपरा की समझ जरूरी है।

दैनिक भास्कर कवर्धा-बेमेतरा भास्कर 09-2026

कौशल विकास पर जोर • बैठक में विद्यार्थियों ने नियमित क्लास और संगीत शिक्षा का रखा प्रस्ताव

कुई-कुकदूर कॉलेज में अब संगीत की कक्षा शुरू करने की तैयारी



फेयरटे के अतिरिक्त बनाई गुणवत्ता सुधार की योजना

दैनिक भास्कर कवर्धा-बेमेतरा 04-09-2026

दीक्षारंभ में मिला लक्ष्य व अनुशासन का मंत्र



कुकदूर। कार्यक्रम में कॉलेज के विद्यार्थी मौजूद थे।

दैनिक भास्कर कवर्धा-बेमेतरा भास्कर 23-09-2026

पहल • विश्व ओजोन दिवस पर विशेषज्ञ ने बताया- ओजोन परत पृथ्वी को हानिकारक किरणों से बचाती है

कुई-कुकदूर कॉलेज में भूगोल परिषद की नई टीम गठित



दैनिक भास्कर कवर्धा-बेमेतरा 03-09-2026

प्राचार्य ने कमराखोल प्राइमरी स्कूल में विद्यार्थियों से की चर्चा



कुकदूर। कॉलेज प्राचार्य ने किया स्कूल का निरीक्षण।

लगाए पौधे, पर्यावरण बचाने का लिया संकल्प



कुकदूर| विश्व पर्यावरण दिवस पर शासकीय नवीन महाविद्यालय कुई-कुकदूर में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के स्वयंसेवकों ने पौधारोपण प्राचार्य प्रो. जीए घनश्याम के निर्देशन में किया गया। एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधे लगाए गए। कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना और लोगों को अधिक से अधिक पेड़ लगाने के लिए प्रेरित करना था। एनएसएस के कार्यक्रम अधिकारी रामरती निषाद ने कहा कि बढ़ते प्रदूषण और पर्यावरणीय चुनौतियों को देखते हुए प्रत्येक व्यक्ति को पेड़ लगाने और उनकी देखभाल करने की जिम्मेदारी निभानी चाहिए। उन्होंने कहा कि वृक्ष मानव जीवन के लिए बेहद जरूरी हैं और पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वरिष्ठ अध्यापक डॉ. चंद्रशेखर राजपूत ने कहा कि मां और प्रकृति दोनों ही जीवनदायिनी हैं। कार्यक्रम में जलेश कुमार धुर्वे, शिवचरण श्याम और लक्ष्मण सिंह धुर्वे सहित अन्य शिक्षकों ने भी भाग लिया।

दैनिक भास्कर कवर्धा-बेमेतरा 04-08-2026

कॉलेज में 'कल, आज और कल' पर हुई परिचर्चा



छात्र-छात्राएं हुए शामिल शैक्षणिक भ्रमण किया गया

कुकदूर| शासकीय नवीन महाविद्यालय कुई-कुकदूर के प्राचार्य ासकीय प्राथमिक स्कूल कमराखोल हुंचे। उन्होंने स्कूल की शैक्षणिक तिविधियों, व्यवस्थाओं की ानकारी ली। बच्चों, शिक्षकों से ुलकात की। शिक्षा व्यवस्था पर र्चा की। शासकीय प्राथमिक स्कूल धुर्वे ने बताया कि प्राचार्य ने बच्चों को नियमित पढ़ाई के लिए प्रेरित किया। शिक्षा के साथ अनुशासन, संस्कार अपनाने की बात कही। शिक्षकों ने स्कूल की गतिविधियों, जरूरतों की जानकारी दी। इस मौके पर विद्यालय परिवार ने प्राचार्य का स्वागत किया। भेंट के बाद

दैनिक भास्कर कवर्धा-बेमेतरा भास्कर 20-09-2026

संभाली कमान • कुई-कुकदूर कॉलेज में राजनीतिशास्त्र परिषद का गठन किया गया

छात्रों ने ली शपथ, कहा- जिम्मेदारी से काम करेंगे

शाला में डिजिटल शिक्षा प्रणाली लाइब्रेरी, ई-बुक्स की दी जानकार

कुकदूर। ई- संसाधनों की जानकारी विषय पर चर्चा।

कुई-कुकदूर कॉलेज में पूर्व छात्र देंगे करियर गाइडेंस



ज्ञान का मथन, वाणिज्य क मूल सिद्धांता स रूबरू हुए छात्र